

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180462

UNIVERSAL
LIBRARY

अवतार

(अद्भुत रस का एक अपूर्व उपन्यास)

अनुवादक

श्रीबजरंगबली गुप्त 'विशारद'

सम्पादक

श्रीप्रेमचन्द



प्रकाशक

सरस्वती प्रेस, मध्यमेश्वर, काशी ।

प्रकाशक
सरस्वती प्रेस, मध्यमेश्वर,
बनारस सिटी

सुद्रक
श्रीगुरुराम विश्वकर्मा,
सरस्वती प्रेस,
काशी

वक्तव्य

हम बड़े हर्ष से फ्रांस-निवासी थियोफ़ाइल गाटियर (Theophile Gautier 1811-72) का यह उपन्यास अपने पाठकों की भेंट करते हैं। इस पुस्तक का अनुवाद पहले श्रीज्योतीन्द्रनाथ ठाकुर ने बंगला-भाषा में किया था। यह उसी अनुवाद का अविकल्पा रूपान्तर है। इस पुस्तक में पाठकों को आत्मा-परिवर्तन के अद्भुत दृश्य दिखाई देंगे। डाक्टर बाल्थाजार शेरवोनो का भारतवर्ष में बहुत दिन रहकर सम्मोहन विद्या सीखना और उसका एक प्रेमी पर प्रयाग करके उसकी आत्मा को दूसरी शरीर में डाल देना ऐसी नवीन कल्पना है जैसी किसी पुस्तक में देखने में नहीं आई। इस कथा की नायिका कौण्टेस प्रास्कोभि पातिव्रत का एक अलौकिक आदर्श है जो अपने निज पति की देह में अन्य पुरुष की आत्मा का स्वरूप देखकर सशंक हो जाती है। यद्यपि वह यह कह नहीं सकती कि यह उसका पुरुष नहीं है, पर आवरण वहीं होने पर भी न जाने किस गुप्त शक्ति द्वारा उसे यथार्थ विषय का आन्तरिक ज्ञान हो जाता है। यह पातिव्रत का बहुत ही सुन्दर और पवित्र चित्र है। हम अनुवादों के पक्षपाती नहीं हैं, पर यह रचना इतनी चित्ताकर्षक और भावपूर्ण है, और इसकी भाषा इतनी सरस है कि हमें इसके प्रकाशित करने का लेश-मात्र भी खेद नहीं है। हमें आशा है, पाठक इससे सहमत होंगे और पुस्तक को अपनावेंगे।

प्रेमचन्द

वक्तव्य

हम बड़े हर्ष से फ्रांस-निवासी थियोफ़ाइल गाटियर (Theophile Gautier 1811-72) का यह उपन्यास अपने पाठकों की भेंट करते हैं। इस पुस्तक का अनुवाद पहले श्रीज्योतीन्द्रनाथ ठाकुर ने बंगला-भाषा में किया था। यह उसी अनुवाद का अविकल रूपान्तर है। इस पुस्तक में पाठकों को आत्मा-परिवर्तन के अद्भुत दृश्य दिखाई देंगे। डाक्टर बालथाजार शेरवोनो का भारतवर्ष में बहुत दिन रहकर सम्मोहन विद्या सीखना और उसका एक प्रेमी पर प्रयोग करके उसकी आत्मा को दूसरी शरीर में डाल देना ऐसी नवीन कल्पना है जैसी किसी पुस्तक में देखने में नहीं आई। इस कथा की नायिका कौण्टेस प्रास्कोभि पातिव्रत का एक अलौकिक आदर्श है जो अपने निज पति की देह में अन्य पुरुष की आत्मा का स्वरूप देखकर सशंक हो जाती है। यद्यपि वह यह कह नहीं सकती कि यह उसका पुरुष नहीं है, पर आवरण वही होने पर भी न जाने किस गुप्त शक्ति द्वारा उसे यथार्थ विषय का आन्तरिक ज्ञान हो जाता है। यह पातिव्रत का बहुत ही सुन्दर और पवित्र चित्र है। हम अनुवादों के पक्षपाती नहीं हैं, पर यह रचना इतनी चित्ताकर्षक और भावपूर्ण है, और इसकी भाषा इतनी सरस है कि हमें इसके प्रकाशित करने का लेश-मात्र भी खेद नहीं है। हमें आशा है, पाठक इससे सहमत होंगे और पुस्तक को अपनावेंगे।

प्रेमचन्द

अवतार

(१)

अस्टैम का शरीर किं व रोग के कारण भीतर ही भीतर दुबला होता जाता था, यह किसी को भी मालूम नहीं होता था । यद्यपि अस्टैम ने खाट नहीं पकड़ी थी, वह अरना नित्य का कार्य पहिले ही की तरह करता जाता था, उसके मुख से कभी दुख की एक आह भी नहीं निकलती थी; परन्तु उसको देखने से स्पष्ट मालूम होता था, कि उसका शरीर धीरे धीरे क्षीण हो रहा है । उसके बान्धवों ने विन्तित होकर डाक्टर बुझवाया ; डाक्टर ने कहा कोई विशेष रोग या भयभीत करनेवाले किसी विशेष रोग का लक्षण इसके शरीर से नहीं प्रगट होता । उन्होंने छाती की परीक्षा कर के देखी, अच्छी आवाज़ हो रही है ; हृदय पर कान लगाकर सुना, हृदय की धड़कन न तो बहुत धीमी है न तेज । न खाँसी है, न उवर, किन्तु तो भी उसकी जीवन-शक्ति न मालूम किस अदृश्य छिद्र द्वारा बाहर निकली जा रही है । धन्वन्तरि का कथन है—मनुष्य का जीवन इसी प्रकार के गुप्त छिद्रों से भरा है ।

कभी कभी उसे मूच्छा आ जाती थी, इससे उसका मुख पीला पड़ जाता था और उसका शरीर पत्थर की भाँति निर्जीव सा हो जाता था । दो एक मिनट तक ऐसा मालूम होता था, मानो उसके प्राण-पत्थर उड़ गये; परन्तु थोड़ी देर बाद ही हृदय की बन्द हुई धड़कन फिर किसी रहस्यमय अज्ञात शक्ति द्वारा परिचालित हो जाती । अस्टैम को जान पड़ता मानो वह कोई स्वप्न देखते देखते जाग गया है ।

रोगनाशक भरने के जल में स्नान करने के लिए उसे भरने के प्रदेश में भेजा गया। किन्तु इससे भी कोई उपकार न हुआ। समुद्र-मार्ग से नेपल्स नगर में स्वास्थ्य सुधारने के लिए भेजा गया, इसका भी कोई परिणाम नहीं हुआ। जिस स्थान पर कुष्ठरोग-ग्रस्त रोगी नंगे शरीर से सूर्य की किरणों का सेवन कर के ताम्रवर्ण हो जाते हैं उसी मेर्गेलिन बन्दरगाह पर पहुँचकर उसका खून जम सा गया।

इसीलिये अक्टैभ फिर अपने स्थान पर लौट गया; और पहिले की तरह अपनी जीवन-यात्रा तय करने लगा। शौकीन नवयुवकों का घर जितना सुसज्जित रह सकता है उसके अनुसार उसके घर की सजावट में कम चीज़ें नहीं हैं। परन्तु घर में रहनेवाले को आकृति और चिन्ता-प्रवाह का प्रभाव घर पर अवश्य ही पड़ता है। अक्टैभ का घर भी उसी की भाँति कुछ उदासीन सा हो गया है, बूटीदार गुलाबी रंग के परदे का रंग अच्छी तरह न रखे जाने के कारण नष्ट होकर फीका पड़ गया है, अब उसमें से केवल सफेद रंग की ही चमक आती है। बड़े बड़े फूलों के गुच्छे सूख गए हैं, अच्छे अच्छे चित्रों के फ्रेमों का सुनहला रंग भी धूल के कारण लाल हो गया है। अँगीठी की आग असावधानी के कारण बुझ गयी है। राख की ढेर से अब धुआँ उठा करता है। सीप से जड़ी हुई और ताँबे से मदी हुई दीवाल-घड़ी की शोभा एकदम नष्ट हो गई है; केवल घड़ी का टिक टिक शब्द-मात्र ही रह गया है, जो रोगी के दुःखमय दिन को अपनी दर्दभरी आवाज़ में प्रगट कर देता है। दरवाजे के किवाड़ बन्द करते समय जरा भी शब्द नहीं करते; यदि कभी कोई आगन्तुक प्रवेश करता है तो वह धीरे से दरवाजे के पायंदाज पर पैर रखता है। इस ठंडे और अंधकारमय घरमें प्रवेश करने मात्र से ही आनन्द की हँसी न मासूम कहाँ उड़ जाती है; अक्टैभ का नौकर परों

की बनी हुई एक भाड़ू और तश्तरी लेकर घर में छाया की तरह घूम आता है, मानों स्थान की स्वाभाविक उदासीनता के कारण उसने भी अपनी चंचलता को स्वाभाविक रूप से खो दिया है। दीवाल पर मुष्टि-युद्ध (Boxing) का सब सामान टँगा हुआ है, परन्तु देखने से ही मालूम होता है कि बहुत दिन से उसे किसी ने छुआ तक नहीं है। किताबें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं, जिनको देखने से जान पड़ता है कि उनको किसी ने पढ़ने के लिए निकालकर मन न लगाने के कारण फेंक दिया है। एक पत्र का लिखना आरम्भ किया गया है; परन्तु कितने दिन में समाप्त होगा यह नहीं कहा जा सकता; पत्र लिखने के कागज़ पीले पड़ गए हैं और डेक्स के ऊपर अस्तव्यस्त पड़े हैं। घर में आदमी होने पर भी वह मरुभूमि सा मालूम होता है, उसमें मानों जीवन ही नहीं है। कब्र का मुख खोल देने की भाँति, किसी के घर में प्रवेश करते ही मानों उसके मुख पर ठंडी हवा का एक झोंका आकर लग जाता है।

इस विषादमय घर में अभी तक किसी रमणी का प्रवेश नहीं हुआ है। अक्टूँभ इसी स्थान पर अच्छी तरह आराम से रहता है। ऐसा आराम वह और कहीं भी नहीं पाता, ऐसी निस्तब्धता, ऐसी उदासीनता, ऐसी शिथिलता ही उसको अच्छी लगती है। जीवन के आमोद प्रमोदप्रद व्यसनों में योग देने से अक्टूँभ डरता है यद्यपि उसने कभी कभी इस प्रकार की मजलिसा में सम्मिलित होने की चेष्टा की है। उसके बन्धुगण कभी कभी उसको निमंत्रण-सभा या राग-रंग की मजलिस में ज़बरदस्ती लिवा जाते थे, परन्तु वह उन स्थानों से और भी उदासीन होकर लौट आता था। इसीलिये वह इस समय इस रहस्यमय विषाद से लड़ने की कोशिश नहीं करता। कल क्या होगा

इसका ज़रा भी ख्याल न कर के वह अपने दिन उदासीनता के साथ बिता देता है। वह कभी कोई कार्य करने को नहीं ठानता क्योंकि भविष्य पर उसका तनिक भी विश्वास नहीं है। उसने मनही मन चुपचाप भगवान के पास अपने जीवन का इस्तीफा भेज दिया है, और आशा की है कि यह इस्तीफा अवश्य स्वीकृत होगा। इन बातों से यदि आप समझें कि उसका शरीर दुबला हो गया है, आँखें कोयों में घुस गई हैं, रंग पीला पड़ गया है, हाथ-पैर सूख गए हैं; तो यह बड़ी भारी भूल होगी। ध्यान-पूर्वक देखने से आप केवल इतना ही पावेंगे कि उसकी आँखों के नीचे की पलकों में ज़रा सी सिकुड़न पड़ गई है, उसके चारों ओर ज़रा सा पीलापन आ गया है; और सिर के ऊपरी भाग में एक नीली नख दिखलाई देने लगी है। आँखों की केवल स्वाभाविक ज्योति ही नहीं, इच्छा, आशा, वासना सब की सब लुप्त हो गई हैं। इस प्रकार के तरुण पुरुष के मुखमण्डल में मृतवत आँखों का होना सचमुच बड़ा विपरीत और आश्चर्यजनक है। उवरादि साधारण रोगों का लक्षण देखने से जितना कष्ट नहीं होता उससे अधिक कष्ट उसका उदास मुख देखने से होता है।

इस प्रकार दुखी और चिन्ताग्रस्त होने के पहले अर्द्धैक एक दृष्ट-पुष्ट सुन्दर नवयुवक ही नहीं, वरन् इससे भी कुछ अधिक था। उसके घुँघराले, काले, घने, रेशम की तरह मुलायम और चमकदार बाल सिर पर दो पार्श्वों में शोभायमान हो रहे थे। उसके बड़े बड़े नेत्र, मखमल के समान मुलायम पलकों और नीली टेढ़ी बरौनियाँ थीं। उसकी दोनों आँखें कभी कभी आर्द्र ज्योति से उद्दीप्त हो उठती थीं। विश्रामकाल में या किसी आवेग के समय उत्तेजित न होने से यही मालूम होता था मानों ये किसी पूर्वदेशीय मनुष्य की आँखें हैं। उसके हाथ बहुत ही सुकु-

भार और पैर के तलुए पतले और धनुष की भाँति टेढ़े थे। वह अच्छा डाक्टर भी रखता था। स्वाभाविक लाक्षण में जिस प्रकार वृद्धि हो वह वैसी ही पोशाक पहिनता था, किन्तु छैला बनने की ओर उसका झुकाव कभी न था।

इस प्रकार की युवावस्था, ऐसी सुन्दरता, ऐसी सम्पत्ति—उसके सुखी होने के सभी उपाय हैं—परन्तु तौ भी वह क्यों इस प्रकार अपने को जला रहा है। शायद आप यह सोच कि आमोद-प्रमोद की अधिकता के कारण उसे आमोद-प्रमोद से अरुचि हो गयी है, या अस्वाभाविक उपन्यासों को पढ़ते पढ़ते उसका दिमाग खराब हो गया है, वह जरा भी विश्वास नहीं करता, अथवा अनेक प्रकार के बुरे विचारों में उसने अपनी सारी सम्पत्ति उड़ा दी है—किन्तु इसमें से एक बात भी ठीक नहीं है। आमोद-प्रमोद के कार्यों में वह अधिक सम्मिलित नहीं होता था, इसलिये उससे अरुचि उत्पन्न होने की कोई सम्भावना नहीं। वह न तो नीरस प्रकृतिवाला था, न मनसूत्रे बाँधने में चतुर, न नास्तिक, न लम्पट, न सम्पत्ति फूँकनेवाला ही। इतने दिन तक वह अन्य युवकों की ही तरह पढ़ने लिखने और आमोद-प्रमोद में दिन व्यतीत करता था। इस पर भी उसकी ऐसी शोचनीय अवस्था क्यों हुई, यह कोई नहीं कह सकता—इस विषय में और की कौन कहे बड़े बड़े चतुर चिकित्सक भी हार मान गए थे। इसका कारण क्या है यह हमारा नायक ही कह सकता है।

साधारण डाक्टरों ने तो इस प्रकार के रोग का नाम कभी सुना ही नहीं क्योंकि वर्तमानकालीन समय तक चिकित्सा के कालेजों में आत्मा का विश्लेषण कोई करता ही नहीं, अतएव और कोई उपाय न देखकर एक ऐसे डाक्टर की शरण में जाना पड़ा जो बहुत दिन तक भारत में रह चुके थे और अनेक कठिन रोगों को आश्चर्यजनक रीति से अच्छा करते थे।

अक्टैभ ने सोचा शायद ये डाक्टर महाशय, अपनी असाधारण सूक्ष्म बुद्धि के प्रभाव से उसके मन की गुप्त बात ताड़ जाँय। इसीलिये वह इनको बुलाने में डरता था, परन्तु अन्त में वह अपनी स्नेहशीला माता के कातर विनय और अनुरोध से डाक्टर बालथाजार शेरवोनो को बुलाने में सहमत हुआ।

जिस समय डाक्टर महाशय ने घरमें प्रवेश किया उस समय अक्टैभ एक पलंग पर अर्द्ध-शायित अवस्था में था। एक तकिया उसके माथे के नीचे था, दूसरा हाथ के घुटनों के नीचे; और एक छोटे तोपक से उसका पैर ढका हुआ था। वह एक पुस्तक पढ़ रहा था, अथवा उसके हाथ में पुस्तक खुली मात्र ही थी क्योंकि उसकी दृष्टि पुस्तक के एक पेज पर लगी होने पर भी वह उसे नहीं देख रहा था। उसका मुख फीका होने पर भी देखने से किसी विशेष रोग का लक्षण नहीं पाया जाता, केवल ऊपरी दृष्टि से यह नहीं जान पड़ता कि इस युवक को किसी बड़े रोग ने घेर लिया है, क्योंकि गोल मेज के ऊपर दवा की शीशी, गोली, अर्क, औषधि नापने का गिलास आदि वस्तुओं के बदले केवल एक बाक्स सिगरेट रक्खा है। मुख पर कुछ उदासीनता का भाव होते हुए भी उसकी शोभा पहिले ही की तरह है—केवल दुर्बलता की अधिकता और आँखों के हताश भाव को छोड़कर स्वाभाविक स्वास्थ्य के सभी लक्षण अक्टैभ में हैं।

अक्टैभ और सब विषयों से बाहे जितना उदासीन क्यों हो, डाक्टर महाशय के अद्भुत चेहरे ने उसकी दृष्टि को आकर्षित कर लिया। डाक्टर का रंग बहुत दिन गर्म देश में रहने से पीला हो गया है। उनके सिर की बड़ी खोपड़ी मानों उनके मुख को ढके ले रही है। सिर पर बाल न होने से वह और भी बड़ा मालूम होता है। उनका गंजा सिर हाथी दाँत के समान चिकना है, उसका सफेद रङ्ग तो पहिले ही की तरह

ह परन्तु ऊपर का चमड़ा सूर्य की किरणों के स्पर्श से कुछ काला हो गया है। खोपड़ी के ऊँचे नीचे भाग खूब स्पष्ट और साफ हैं। विरल केश युक्त सिर के पिछले हिस्से में इस समय भी बाल के दो तीन गुच्छे विद्यमान हैं। दो गुच्छे कान पर और एक गर्दन पर है। किन्तु इन सबों से बढ़कर डाक्टर की दोनों आँखें विशेषकर दृष्टि को खींचने वाली हैं।

अवस्था के प्रभाव से उनका मुखमण्डल कुछ ताँवे के रङ्ग का सा है, जो कि सूर्य की किरणों के स्पर्श से कुछ साँवला हो गया है। विज्ञान-का अध्ययन करने से उस पर गम्भीरता आ गयी है, और बुढ़ापे के कारण पुस्तक के पृष्ठों की तरह उस पर कुछ सिकुड़न पड़ गयी है। इस मुख के बीच में दोनों नीली आँखों की पुतलियाँ चमचमा रही हैं, उनमें एक प्रकार की विचित्र उग्रोति और तारुण्य झलक रही है। ऐसा जान पड़ता है मानों किसी वशीकरण मंत्र द्वारा मुर्दे के मुख पर प्रफुल्ल बदन बालक की आँखें बैठा दी गयी हैं।

डाक्टर महाशय की पोशाक उस समय के डाक्टरों की पोशाक की तरह ही है। वे काले कपड़े का कुर्ता, पायजामा और वास्केट पहिने हैं। कमोज के ऊपर एक बड़ा हीरा लगा है, जिसे देखने से जान पड़ता है कि उसे उन्होंने किसी राजा या नवाब से पाया होगा। पर यह पोशाक उनके शरीर पर फिट (fit) नहीं है, मानो खूँटी पर झूल रही हो। इस अवाधारण शीर्णता का कारण भारतवर्ष के प्रखर सूर्य की धूप में रहना नहीं है बल्कि वे गुप्त विद्या में दाक्षित होने के उद्देश्य से संन्यासियों की तरह जो उपवास करते थे, तथा योगियों के पास पंचाग्नि में मृगजम पर बैठकर जो तपस्या करते थे उसी के कारण शीर्ण हो गये हैं।

परन्तु हम प्रकार माँस-चर्बी के क्षय होने से उनका शरीर दुर्बल नहीं हुआ है। उनके हाथ की पेशियाँ खूब गठी और मजबूत हैं। अक्टैभ के

इशारे से डाक्टर पलंग के एक तरफ निर्दिष्ट कुर्सी पर घुटना टेककर बैठ गये—जान पड़ता है कि इसी प्रकार चटाई पर बैठने का उनका पुराना अभ्यास है। डाक्टर शेरवोनो ने इस प्रकार बैठकर प्रकाश की ओर पीठ घुमा ली, यह प्रकाश पूर्ण रूप से रोगी के मुख पर पड़ रहा था। यह स्थान ही परीक्षा के अनुकूल है, विशेषकर उस मनुष्य को जो दूसरे को देखने की इच्छा रखता है और अपने को नहीं दिखाना चाहता। उसके लिए इसी आसन से बैठने में सुविधा है। यद्यपि डाक्टर का मुख साये में था और सामरोख पक्षीॐ के अंडे के समान गोलाकार उनके चिकने माथे की खोपड़ी पर केवल सूर्य की किरण पड़ रही थी, परन्तु अक्टैभ ने देखा, कि उनकी आँखों की दोनों पुतलियों से फासफोरस की तरह चिनगारी निकल रही है।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद डाक्टर ने फिर रोगी को अच्छी तरह देखा और कहा—देखिए, महाशय, मैं देखता हूँ कि आपका यह रोग हम लोगों के चलित निदान-शास्त्र का रोग नहीं है। जिन रोगों का स्पष्ट और निर्दिष्ट लक्षण है, जिसे देखकर चिकित्सकगण रोग अच्छा करते हैं, या और भी खराब कर देते हैं उन रोगों की तालिका में इसका नाम नहीं है। मैं एक कागज पर सांकेतिक गिच-पिच अक्षर लिखकर दूँ और आप का नौकर भट से पास के दवाखाने से कई मार्क की शीशियाँ ले आवे, इस स्थान पर यह सब न चलेगा। अनावश्यक दवा और नुस्खे से रिहाई पाने की कृतज्ञता प्रगट करने के बहाने अक्टैभ धीरे से मुस्कुराया।

डाक्टर ने फिर बोलना आरम्भ किया—आप इतनी जल्दी न प्रसन्न

हो, क्योंकि आपका रोग न हृत्पिंड की अतिवृद्धि है, न फेफड़े का खराब फोड़ा, न पीठ की रीढ़ की मज्जा की कोमलता ! हाथ देखूँ ? अक्टैभ ने यह सोचकर कि डाक्टर महाशय घड़ी रखकर नाड़ी देखेंगे अपने ढीले कुर्ते की आस्तीन खसका कर हाथ आगे बढ़ा दिया । उसकी नाड़ी में कैसी धड़कन हो रही है इसे न देखकर डाक्टर, केरुड़े की तरह हड्डीवाली अपनी हथेली के बीच में अक्टैभ के नीली नाड़ीवाले पतले हाथ को पकड़कर दबाने लगे । परीक्षा-पात्र के साथ चुम्बक-आकर्षण का योग स्थापित करने के लिए मानों क्रियार्थे करने लगे ।

दवा-दारू में विश्वास न करते हुए भी इन सब क्रियाओं से अक्टैभ को एक प्रकार की विचित्र अनुभूति होने लगी । यह अनुभव करके कि मानों डाक्टर महाशय इस प्रकार उसके आत्मा को निचोड़कर बाहर निकाल रहे हैं उसका मुख पीला पड़ गया ।

युवक के हाथ को छोड़कर डाक्टर ने कहा,—वास्तव में आप की अवस्था जितनी गुरुतर है आप उसका उतना ख्याल नहीं करते । विज्ञान, कम से कम इस समय का प्रचलित चिकित्सा-शास्त्र, इसका प्रतिकार नहीं कर सकता । आपके अब जीवन की इच्छा नहीं है । अदृश्य रूप से आप की जीवन शक्ति आपके शरीर से निकली जा रही है । यह न तो आपका शोकोन्माद है, न निउमोनिया, न आत्महत्या की आसक्ति । ऐसा रोग बहुत कम लोगों को होता है और बड़ा ही कौतूहल-जनक है । यदि मैं इसका प्रतिकार न करूँ तो आप अनजान में ही मर जायेंगे । बाहर या भीतर किसी प्रकार के विकार का लक्षण न प्रगट होगा । मुझको बुलाने का यही ठीक समय है । क्योंकि इस समय आपकी आत्मा आपके शरीर में एक सूत्र के सहारे अटकी है, हम इस समय इस सूत्र में एक मजबूत गाँठ बाँध देंगे । यह कह कर डाक्टर आनन्द से अपने हाथों को

मलते हुए धीरे धीरे मुस्कुराने लगे। इस प्रकार की चेष्टा से उनके मुख पर बहुत सी सिकुड़नें पड़ गयीं।

अस्टैभ ने कहा—डाक्टर महाशय, मैं नहीं जानता कि आप मुझे अच्छा कर सकेंगे या नहीं। अच्छा होने की मेरी इच्छा भी नहीं है, परन्तु यह बात मैं स्वीकार करता हूँ कि आप एक ही बार में रहस्य को ठीक ठीक समझ गये हैं। मेरा शरीर मानों चलनी हो गया है, जिस प्रकार चलनी के छेद से जल गिर जाता है, उसी प्रकार मेरा अपनत्व मेरे शरीर से निकला जा रहा है। मैं मानों एक असीम विराट रूप में मिलता जा रहा हूँ। किस रसातल के गर्भ में डूबा जा रहा हूँ, यह नहीं समझ सकता। मैं चुपचाप दैनिक जीवन के सभी काम जिन्हें कर सकता हूँ, करता जाता हूँ। जिससे पोछे मेरे माता-पिता के मन में कष्ट न हो। परन्तु यह जीवन तो मानों मुझसे दूर चला गया है। किसी समय ऐसा जान पड़ता है मानो मैं मनुष्य लोक से निर्वासित हो गया हूँ। मैं पहिले की तरह सर्वत्र आया जाया करता हूँ। जिस मन के आवेग से मैं पहिले जाया आया करता था वही मंत्रवत् आवेग इस समय भी होता है। किन्तु जो कुछ क्यों न करूँ मैं स्वयं अपने किसी कार्य में मानो योग नहीं देता। मैं समयानुसार खाने बैठता हूँ, लोग मुझे देखकर सोचते होंगे कि सब लोगों की तरह मैं भी खाया पिया करता हूँ। किन्तु मुझको कितना ही स्वादिष्ट खाना क्यों न दिया जाय, उसमें मेरी एक दम रुचि नहीं होती। सूर्य का प्रकाश मुझे चंद्रमा के प्रकाश के समान फीका जान पड़ता है और बत्ती के प्रकाश की शिखा मुझे काली दिखाई देती है। ग्रीष्म ऋतु के खूब गर्म दिनों में मुझे ठंडक लगती है। कभी कभी मेरे भीतर मानों एक निस्तब्धता आ जाती है, ऐसा जान पड़ता है, मानो हृदय की धड़कन रुक गयी है और मानो किसी अज्ञात कारण से मेरे

शरीर के भीतरी यंत्र रुक गये हैं। इस अवस्था और मृत्यु के बीच में कोई विशेष भेद मुझे नहीं जान पड़ता—यदि कोई विशेष भेद है तो शायद मृत लोग ही उसे कह सकें।

डाक्टर ने फिर कहना आरम्भ किया—आपका यह रोग एक दम मानसिक है जो कि प्रायः देखा जाता है। चिन्ता एक ऐसी शक्ति है जो कि पिकरिक एसिड की बोतल से निकली हुई चिनगारी की तरह हत्या करनेवाली है। हाँ चिन्ता से उत्पन्न हुई इतनी विज्ञान के प्रयोग के विश्लेषण द्वारा नहीं रोकी जा सकती। मुझसे कहिए, मैं देखूँ तो सही आपका पित्ताशय किस दुःख-शेल से बिद्ध हुआ है? किस गुप्त उच्चा-भिलाषा की चोटी से आपका यह गहिरा पतन हुआ है? किस निराशा के कड़वे तिनकों का आप हमेशा पागुर किया करते हैं? क्या आप प्रभुत्व की प्यास से कष्ट पा रहे हैं? मनुष्य की सामर्थ्य से जो बाहर है, ऐसा कोई संकल्प क्या आपने अपनी इच्छा से त्याग दिया है? परंतु आपके त्याग की अवस्था तो अब भी नहीं आई है। तो क्या किसी रमणी ने आपको ठगा है?

अकटैभ ने कहा—नहीं डाक्टर साहब यह सौभाग्य भी मुझे नहीं मिला।

डाक्टर साहब ने कहा—चाहे जो कुछ कहो किंतु आपकी इन ज्योतिरहित आँखों में, आपके निरुत्साहित शरीर की गति में, आपके गले की धीमी आवाज़ में—शेक्सपियर के एक नाटक का नाम इस प्रकार साफ साफ पढ़ सा रहा हूँ मानो यह नाम मोरक्को के चमड़े से बंधे हुए नाट्य-ग्रंथ के पृष्ठ पर स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। नाटक का नाम क्या है? शेक्सपियर का कौनसा नाटक मेरे ध्यान में है, क्या यह आप जानते हैं? इस बार इच्छा न होने पर भी अकटैभ का कौतूहल जागृत हो उठा।

डाक्टर ने फिर कहा—इस नाटक का नाम है “Love’s Labours Lost” इस अंग्रेजी नाम का उन्होंने ऐसा विशुद्ध उच्चारण किया जिससे जान पड़ा कि वे बहुत दिनों तक अंग्रेजों के अधीन भारत में रह चुके हैं।

अक्टैम ने कहा—मैं समझता हूँ उसका अर्थ है, “निराश प्रेम का कष्ट !”

डाक्टर—ठीक यही अर्थ है।

अक्टैम ने और कुछ जवाब नहीं दिया। उसका मस्तक लाल हो गया, मुख के स्वाभाविक भाव की रक्षा करने की चेष्टा से वह अपने ढीले कुरते के बाँधने की लम्बी रस्सी पकड़ कर खेलवाड़ के बहाने खींचने लगा। डाक्टर महाशय, आसन बाँध, हाथ पर पैर रख कर पूर्व देशीय रीति के अनुसार बैठे थे। उनकी नीली आँखों की दृष्टि अक्टैम की आँखों पर पड़ी। इसके बाद वे मधुर दृष्टि से देखते हुए उससे प्रश्न करने लगे।—अक्टैम, आओ इस वार अपने मन के द्वार को मेरे लिये खोल दो—मैं तुम्हारा डाक्टर हूँ और तुम मेरी चिकित्सा के अधीन हो; और जिस प्रकार कोई प्राणी कैथोलिक पादरी से अपने अच्छे बुरे कर्मों को साफ़ साफ़ कहता है सब बातें मुझसे खोल कर कहो। कुछ भी छिपाना मत। परन्तु तुमको मेरे सामने घुटना टेक कर न बैठना होगा।

अक्टैम—उससे क्या लाभ ? मान लिया आप मेरी अवस्था को ठीक ठीक समझ गये हैं किन्तु अपने कष्ट की सब बातें खोल कर कहने से तो मुझे कुछ सान्त्वना न होगी, मुझे जो कष्ट है, वह अकथनीय है—कोई भी मानव शक्ति—यहाँ तक कि आप भी—उसका प्रतिकार न कर सकेंगे।”

कुछ देर बाद गुप्त बातें सुननी होंगी यह सोच कर डाक्टर महाशय अपने आमन पर और भी दृढ़ होकर बैठ गये और उत्तर में इतना ही कहा, “सम्भव है।”

अक्टैम ने फिर कहना आरम्भ किया—मैं नहीं चाहता कि आप

मुझे एक दम लड़का और हठी समझें, मेरे चुर रहने पर आपको यह कहने का मौका मिलेगा, कि सब बातें खोल कर कहने में मैं उसे बचा सकता था, मैं यह मौका आपको नहीं देना चाहता। आपका विश्वास है कि आप मुझे अच्छा कर सकेंगे। अच्छा, तो मैं अपनी आत्म कहानी कहता हूँ, सुनिए। आपने जब असल बात का ठीक अनुमान कर लिया है तब मैं छोटी छोटी बातों को लेकर आपके साथ झगड़ा न करूँगा। मेरे इस विवरण में आप किसी अद्भुत कार्य या रोमान्टिक कल्पना (Romantic असम्भव, काव्यनिक) आशा न कीजिएगा। मेरे जीवन की घटना खूब सीधी सादी, साधारण और ज्यादातर घटित होने वाली है। परन्तु कवि हेनरी के एक गान में है कि—

“जिसके सामने जो घटना होती है वह नित्य नहीं होती, और उसी के आघात से उसका हृदय, तन और मन चूर हो जाता है।”

असल बात यह है कि जिस मनुष्य ने गर्वों और सुन्दर कल्पनाओं में इतने दिन व्यतीत किये हैं उससे गँवारों की सी एक कहानी कहाने में मुझे लज्जा मालूम होती है।

डाक्टर ने हँसते हँसते कहा—ओ ! जो बहुत साधारण है वही तो मेरे लिये असाधारण है।

“डाक्टर साहब, मैं सचमुच प्रेम के कष्ट में ही मरा जा रहा हूँ। मैं १८४—साल में ग्रीष्म ऋतु के अन्त में फ्लरेन्स नगर में आया। मेरे पास कुछ समय, कुछ धन और कुछ प्रशंसापत्र थे। मैं उस समय आमोद-प्रमोद में प्रसन्न रहने वाला एक नवयुवक था, आमोद-प्रमोद के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता था। मैंने एक सराय में झुंडा जमाकर एक फिटिन भाड़े पर की। विदेशीगण जिससे मोहित और आकर्षित होते हैं—मैं यहाँ का उसी प्रकार का नागरिक जीवन व्यतीत करने लगा। प्रातः-

काल कोई गिर्जा, राजमहल या चित्रशाला बिना किसी प्रकार की घबराहट के स्वस्थ चित्त से देखने जाता था। आर्ट (Art) की चीजों को बहुत देखने से मुझे उससे अरुचि नहीं उत्पन्न हुई। जो भ्रमण करने वाले सुचतुर शिल्पियों के हाथ की अच्छी अच्छी रचनाएँ जहदों में देखना चाहते हैं, अन्त में प्रायः उनको कारीगरी (Art) से अरुचि और उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। मैं कभी यह, कभी वह देखने जाता, परन्तु एक दिन मैं एक से अधिक चीज़ न देखता। इसके बाद किसी होटल में आकर प्रातःभोजन स्वरूप बर्फ सेजमा हुआ एक प्याला काफी पीता, चुरट फूँकता, समाचारपत्रों को सरसरी दृष्टि से देख जाता, और पास की दूकान से सुन्दरी फूलवाली के हाथ से बने हुए एक छोटे फूल के गुच्छे को खरीदकर कुरते के बटन के छेद में खोंसकर दिन में सोने के लिये घर लौट आता। “क्यासिन” में मुझको ले जाने के लिये तीन बजे मेरी गाड़ी आकर हाजिर होती। मैं “क्यासिन” में जाता। जिस प्रकार पेरिस में शौकीन लोगों के घूमने के लिये “बोयादेबुल” है, उसी प्रकार फ्लरेन्स में क्यासिन है। केवल भेद इतना ही है कि यहाँ पर सभी एक दूसरे को पहिचानते हैं। वहाँ पर एक गोलाकार घेरे के बीच में खुले हुए स्थान पर मानो एक बड़ा सा बैठकखाना बन गया है और आरामकुर्सी के बदले बहुत सी गाड़ियाँ मौजूद हैं, जो अर्द्ध-चक्राकार घेरे में खड़ी रहती हैं। ठाटबाट से सज्जित महिलायें गाड़ी की गद्दी पर अर्द्धशायित अवस्था में अपने प्रेमियों की, प्रणय-प्रार्थियों की, शौकीनों की, और विदेशी राजदूतों की आदर-अभ्यर्थना करती हैं। और ये सब लोग टोपी रखकर गाड़ी के पायदानों पर खड़े रहते हैं। आप भी तो यह बात जानते हैं कि सायंकाल के बाद जिस प्रकार का आमोद-प्रमोद होगा, उसका निश्चय यहीं पर होता है। यहीं संकेत स्थान का निर्णय

होता है, यहीं आपस में उत्तरप्रत्युत्तर होता है। एक तरह से इसे प्रमोद बाजार कह सकते हैं। यह बाजार वृक्ष की छाया में बहुत ही सुन्दर आकाश के नीचे तीन से पाँच बजे तक लगता है। जिसकी अवस्था कुछ अच्छी है, वह प्रतिदिन एक बार इस स्थान पर आने के लिये बाध्य है। मैं भी इस नियम का उल्लंघन नहीं करता था। इसके पश्चात् सायंकाल के भोजन के बाद मैं किसी विदुषी स्त्री की बैठक में, या किसी अच्छी नायिका का गाना सुनने के लिये “पेरगोले नाट्यशाला” में जाता था।

इस प्रकार मेरे जीवन के कई महीने सुख से बीते थे। परन्तु यह सुख स्थायी नहीं हुआ। एक दिन एक खूब सुसज्जित गाड़ी “क्यासिन” में आकर खड़ी हुई। गाड़ी वार्निश से चमाचम चमक रही थी। उसमें कुल-मर्यादा-सूचक चिह्न बने थे, दो तेज घोड़े जुते थे, दोनों घोड़ों पर ताँबे का साज था और सईस और कोचवान की पोशाक बड़े ठाट बाट की थी। गाड़ी के दरवाजे के हैंडिल से तो मानो बिजली ही छूट रही थी। सभी की नज़रें इस शानदार गाड़ी की ओर लगी थीं। बालू बिछी जमीन पर एक टेढ़ी रेखा काटती हुई गाड़ी पास ही की एक गाड़ी के पास आकर खड़ी हुई। आप समझते ही हैं, कि गाड़ी खाली न थी, परन्तु गाड़ी की तेजी के कारण कुछ भी ठीक ठीक नहीं दिखाई देता था। केवल सामने की गद्दी पर एक जोड़ा छोटा बूट, शाल की बड़ी सिकुड़न और माथे पर सफेद रेशम का झालरदार छाता दिखाई देता था। इस समय छाता बन्द हो गया और एक अनुपम रूपवती स्त्री चारों ओर सौन्दर्य-छटा फैलाती हुई लोगों की नज़र पड़ी। मैं घोड़े पर सवार था, इस लिये विधाता द्वारा रचित इस श्रेष्ठ नारी की रचना की कोई छोटी बात भी मुझसे नहीं छिपी। चाँदी की कामदार आसमानी साड़ी आसमानी होते हुए भी मुख के सामने काली सी मालूम होती थी। वह जरी का

फूल कड़ा हुआ सफेद रेशमी ओढ़ना ओढ़े थीं। गहनों में से उनके हाथ में केवल एक सोने का कड़ा था और उसी हाथ से वह रेशमी छाते के हाथी दाँत की बेंट पकड़े थीं।

डाक्टर महाशय, मैं कपड़े के दूकानदारों की तरह वेप-भूषा की छोटी छोटी बातों का वर्णन कर रहा हूँ, इसके लिये मुझे क्षमा कीजिएगा क्योंकि प्रेमी की दृष्टि में इन सब छोटी छोटी बातों का गुहत्व बहुत अधिक है। उसका मस्तक बर्फ के समान उज्ज्वल है, उसके नेत्र-पल्लव की बड़ी बड़ी बरौनियों से उसके नीले नेत्र आधे ढके हैं।—जैसे गुलाब बुलबुल के प्रेमाशय या तितली के चुम्बन-द्वारा लज्जा से लाल हो जाता है, उसी संकोच से सुकुमार सफेद गुलाब की तरह उसके करोल हैं। किसी मानवी चित्रकार के लिये उसके मुख के रंग की नकल करना असम्भव है, उसका माधुर्य, उसकी स्वच्छता, उसकी कोमल-आभा, हम लोगों के स्थूल शरीर से कभी उत्पन्न नहीं हो सकती। और उसका कुछ आभास केवल तक्षण सूर्य की लालिमा में या किसी स्वच्छ गुलाबी वस्त्र से ढके हुए चमकीले पत्थर की मूर्ति से निकले हुए सुन्दर रंग की आभा में ही पाया जाता है।

जिस प्रकार रोमियो जुलियट को देखकर रोजागुलि को भूल गया था, उसी प्रकार सौंदर्य की चरम सीमा इस नारी-मूर्ति को देखकर मेरा पहिले का सब प्रेम प्रणय भूठ गया। मेरे हृदय-पुस्तक के छपे हुए सब अक्षरों के उड़ जाने से मानो वह एक दम सादी हो गयी। छोटे हृदय वाले साधारण युवकों के समान किस प्रकार मैं अन्य स्त्रियों के ऊपर आकृष्ट हुआ था, इसे मैं इस समय समझ ही नहीं सकता। मैं सोचने लगा, मानो मैंने अपने अन्तर्देवता का अपमान किया है। इस प्राण-घातक मिलन से हमारे जीवन में एक नये दिन का आरम्भ हुआ।

गाड़ी ने क्रासिन छोड़कर दीसिमयी नारी को लिये हुए फिर शहर का रास्ता पकड़ा। मैं घोड़ा लेकर एक नवयुवक रूरी सज्जन के पास आकर खड़ा हो गया। यह एक शौकीन रईस हैं, यूरोप के सब नगरों की शौकीन मन्त्रालियों में इनकी खूब पहुँच है, बड़े बड़े धरानों के इतिहास यह अच्छी तरह जानते हैं। मैंने इनसे हफ विदेशिनी की बात कही। उनसे मालूम हुआ कि यह लुथानिया की रहने वाली उच्चकुल में उत्पन्न हुई अत्यन्त ऐश्वर्यशालिनी कौन्टेस प्रास्कोभिलाविन्स्का हैं। इनके स्वामी दो वर्ष से काकेशिया के युद्ध में लगे हैं।

आपसे इतना ही कदना अधिक है कि कौन्टेस को देखने के लिये मुझे अनेक उपाय करने पड़े थे; क्योंकि इस समय स्वामी के प्रवास अवस्था में होने के कारण वे किसी के साथ बहुत अधिक नहीं मिलती थीं। जो कुछ हो अन्त में मुझे मिलने की अनुमति मिल गयी। राजपरिवार की दो-चार विधवाओं ने हमारे लिये उत्तरदायित्व ग्रहण किया।

कौन्टेस लाविन्स्का ने एक शानदार उद्यान-गृह; किराये पर लिया था; जो कि फठरेन्स से तीन मील दूर है। प्राचीन महल के बेढंगेपन की ओर ध्यान न देकर कौन्टेस ने आराम देने वाले सभी आधुनिक सामानों से घर को सजाया था। उस समय के लोहे के पत्तर से मढ़े हुए दरवाजे इस जमाने के नुकीले चौखट के ऊपरी भाग से अच्छा मेल खा रहे थे। आराम कुर्सियाँ और उस जमाने के और असबाब लकड़ी की कारीगरी पर कुछ मैलेफ्रेस्को चित्र से ढकी दीवार के साथ मिल कर उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। किसी नये ताजे चमकीले रङ्ग से आँखों को पीड़ा नहीं होती थी। सारांश यह कि भूत के साथ वर्तमान मिला होने पर भी ज़रा भी बेसुरा नहीं मालूम होता था।

मैं कौन्टेस की दीसिमयी सौन्दर्य-छटा पर मोहित तो था ही, उनसे

कई बार मिलने पर उनकी बुद्धि का विलक्षण परिचय पाकर मुझे और भी अधिक आश्चर्य हुआ। उस प्रकार की सूक्ष्म और सब विषयों में दखल रखनेवाली बुद्धि सबमें नहीं पायी जाती। जब वे किसी चित्ताकर्षक विषय के सम्बन्ध में बातें करती हैं तब उनकी आत्मा भीतर से बाहर आकर दिखाई देती है। उनके शरीर का रङ्ग भीतर से किसी दीपक द्वारा प्रकाशित स्वच्छ उज्ज्वल सङ्गमर्मर की तरह है। कविवर दांते ने स्वर्ग की शोभा सौन्दर्य वर्णन करने के समय जैसा वर्णन किया है; उसी प्रकार उनके शरीर की आभा से मानो फलफरस की चिनगारियाँ और प्रकाश के अणु प्रगट होते हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो कोई देवी स्वर्ग लोक से मृत्यु लोक में उतर आई है। मेरी आँखों में चकाचौंधी आ गयी, आत्मविरमृत और हत-बुद्धि हो गया। उनकी सुन्दरता के ध्यान में दूब कर, उनके मुख से निकले वाक्यों के मधुर संगीत से विमुग्ध होकर जिस समय उत्तर देना बहुत आवश्यक होता, उस समय मैं घबड़ा कर तुतलाते हुए कई एक अप्रासंगिक बातें कह जाता। इसमें सन्देह नहीं कि इससे मेरी बुद्धि के सम्बन्ध में खूब हीन धारण होती थी। कभी कभी मेरी असम्बद्ध, लक्ष्यहीन बातें सुनकर उनके गुलाबी सुन्दर ओठों पर दयायुक्त, हँसी से भरी हुई, कोमल और मधुर एक झलक दिखलाई देती थी।

मैंने अपने प्रेम की बात अभी तक नहीं कही; मैं उनके सामने चिन्ता रहित, बल रहित, और साहस रहित हो जाता था; मेरी छाती धड़कने लगती थी, मानो हत-पिण्ड छाती से बाहर होकर अपनी हृदय-रानी के पदतल पर जाकर लोट जायगा। मैंने कई बार उन पर अपना मनोभाव प्रगट करने का संकल्प किया, परन्तु एक अनिवार्य भीरुता ने आकर मुझे अटका दिया। उनके मुख पर अपने प्रति कुछ

उदासीनता, अप्रसन्नता या विषमता का भाव देखकर मेरा मुख लज्जा से लाल या पीला हो जाता था। मैं बिना कुछ कहे बाहर चला जाता था। बाहर जाते समय दरवाजा टटोलकर भी नहीं पाता था, मतवाले की तरह भूमते भूमते सीढ़ी से उतरता था।

बाहर लौट आने पर मेरी बुद्धि-वृत्ति मानो फिर लौट आती थी और तब मैं उवलन्त प्रेम की कविताओं की आवृत्ति कर आकाश को गुञ्जा-यमान कर देता था; मैं, खूब आवेग के साथ अपनी अनुपस्थित हृदय-पुतली पर प्रेम के सैकड़ों निवेदन प्रगट करता था। इन सब हृदय-उच्छ्वासों को प्रगट करने के बाद जान पड़ता था कि इस बार मेरी हृदय-रानी स्वर्ग-से मेरे पास आकर प्रगट हुई हैं। उस समय मैंने अपने बाहु द्वारा कितनी ही बार उनको अपनी छाती पर रोक रखने की कोशिश की है।

कौन्टेस ने हमारे मन पर इतना अधिकार कर लिया था कि मैं “प्रास्कोभि लाविन्स्का” इस नाम को दिन रात मंत्र की तरह जपता था। इस नाम में कौनसा अपूर्व अमृत है यह वाणी-द्वारा नहीं कहा जा सकता। जप करते समय मैं प्रास्कोभि लाविन्स्का के नाम को मोती-द्वारा, कभी धीरे धीरे फूलों-द्वारा लिखता था; कभी भक्त-सुलभ वाचालता से उनका नाम जल्दी जल्दी उच्चारण करना था और कभी कभी अच्छे कागज पर तरह तरह के सुन्दर रंगों की स्याही से विभूषित कर उनका नाम लिखता था। इसके बाद इस हस्तलिखित नाम पर अपनी लेखनी डुलाता था। मैं पुस्तक पढ़ने या किसी दूसरे काम में अपना मन न लगा सकता था। प्रास्कोभि को छोड़कर और किसी विषय में मुझे उत्सुकता न थी; यहाँ तक कि घर से जो पत्र आते थे उनको भी बिना खोले ही रख देता था। मैंने कई बार इस अवस्था से छुटकारा पाने की चेष्टा की। परन्तु छुटकारा न पा सका मैंने एकदम आत्म-

समर्पण कर दिया था, प्रेम करके ही सन्तुष्ट था, प्रेम का कोई बदला नहीं चाहता था, केवल उनको गुलाबी अंगुलियों के किनारों को मेरे ओठ एक बार चुम्बन कर सकें यही मेरी सबसे बड़ी इच्छा और स्वप्न की वस्तु थी; इसमें अधिक आशा करने का साहस मुझे नहीं हुआ। मध्ययुग में भक्त गण म्याडोना के पास घुटना टेककर दत्तचित्त होकर जैसी भक्ति से पूजा करते थे, उसकी अपेक्षा मेरी यह पूजा किसी अंश में कम न थी।

डाक्टर शेवोनो बड़े ध्यान से अक्टैम की बातें सुन रहे थे। क्योंकि उनके लिये अक्टैम की यह आत्म कहानी केवल रोमान्टिक (Romantic-असम्भव) गल्प ही न थी। अक्टैम की बात रुक जाने पर डाक्टर मन ही मन इस प्रकार सोच रहे थे “मैं देखता हूँ, कि यह तो साफ़ साफ़ प्रेम के विकार का लक्षण है, यह एक अद्भुत रोग है, केवल एक ही बार इस प्रकार का रोग मेरे हाथ में आया था। चन्दन नगर में बिचारी एक डोमरमणी किसी ब्राह्मण के प्रेम में पड़कर उस प्रेम के रोग में ही मर गयी; परन्तु वह असभ्य जंगली थी और यह सभ्य जाति के मनुष्य हैं, मैं निश्चय ही इनको अच्छा कर सकूँगा।” बीच में आई हुई इस चिन्ता के रुक जाने पर डाक्टर ने हाथ के इशारे द्वारा अक्टैम से फिर आत्म-कहानी आरम्भ करने को कहा। इसके बाद वे घुटना और हाथ मोड़कर ठुठ्ठी घुटनों पर रखकर बैठ गये और ध्यान से उसकी बातें सुनने लगे। यद्यपि इस प्रकार बैठना हम लोगों के लिये असाध्य है; परन्तु जान पड़ता है कि डाक्टर साहब का इस प्रकार बैठने का पुराना अभ्यास है।

अक्टैम ने फिर कहना आरम्भ किया—मैं अपनी इस गुप्त मनोवेदना की छोटी छोटी बातों का वर्णन करके आपका चित्त उच्चाटित न करूँगा। मैं एक दिन कौन्ट्रेन से मिलने की इच्छा न रोक सकने के कारण सामान्यतः जिस समय उनसे मिलने जाता था उससे कुछ पहले ही गया।

उस दिन आँधी चल रही थी और भाप जोरों पर थी। रानी अपने बैठक में न थीं। वे पतले पतले खम्भों से थमे हुए कोठरी के दरवाजे के पास बैठी थीं। उसके सामने ही एक बरामदा है, इस बरामदे से ही बाग में उतरना होता है। उन्होंने अपना पियानो, एक पलंग और कई एक बेंत की चौकियाँ यहाँ लगावाई थीं। खम्भे के बीच बीच में ईंट से बनी हुई वेदिका के ऊपर सुगन्धित फूलों के बने हुए कई एक सुन्दर गुलदस्ते रखे हैं; बीच बीच में पर्वतीय देश से अचानक एक हवा आकर सुगन्धि से सींचकर चारों दिशाओं को प्रसन्न कर देती है। उसके सामने खम्भों के बीच से बाग की छँटी हुई झाड़ियाँ दिखलायी देती हैं। सौ वर्ष के पुराने कई एक झाड़ू अपना सिर उठाये खड़े हैं और इधर उधर सुन्दर गड़ी हुई पत्थर की मूर्तियाँ बाग की शोभा और भी बढ़ा रही हैं।

रानी बेंत के पलंग पर अकेली अर्द्धशायित अवस्था में बहुत ही सुन्दर दिखलायी देती थीं। इससे पहिले मैंने इनको इतना सुन्दर कभी नहीं देखा। उनका शरीर कुछ शिथिल है, गर्मी से ये मानो थक सी गयी हैं। वे भारत का स्वच्छ सफेद मयलिन पहिने ऐसा मालूम होती हैं मानों फेन पुञ्ज से नहाई हुई कोई समुद्र की अप्सरा हो। पोशाक के किनारे मानों चाँदी की झालरें दरंग के समान चमक रही हैं। यह स्वच्छ हल्का रेशमी वस्त्र एक पिन-द्वारा छाती पर अटकया हुआ है जो पैर तक लटक रहा है। पँखड़ी से निकले हुए फूल की तरह उनके दोनों हाथ कुत्ते की आस्तीन के बाहर निकले हुए हैं। उनकी कमर में एक काला फीता बँधा हुआ है जिसका किनारा नीचे तक झूल रहा है। पैर में विचित्र धारीदार नीले चमड़े की एक चट्टी है जिसका नुकीला टेढ़ा भाग पैर की पोशाक के बाहर निकला हुआ है।

रानी पुस्तक पढ़ रही थीं, उन्होंने मुझे देखकर पुस्तक पढ़ना बन्द

कर दिया, और जरा सा सिर झुकाकर इशारे से मुझे बैठने के लिए कहा। रानी अकेली थी, इस प्रकार की अनुकूल अवस्था का मिलना बड़ा ही कठिन है। मैं उनके सामने ही एक आसन पर बैठा। कुछ देर तक हम लोगों के बीच एक दम निस्तब्धता थी। इस प्रकार देर तक चुप रहना बड़ा ही कष्टदायक है। शिष्टाचार की सीधी सादी बातें भी मेरे मुख से न निकलीं, मानो मेरा दिमाग खराब हो गया; मानो मेरे हृन् पिण्ड से अग्नि की शिखा निकलकर मेरी आँखों के सामने दिखाई देने लगी। उस समय मेरे प्रेमी हृदय ने मुझसे कहा—“देखो, इस परम सुयोग को मत खोना।” मैं नहीं जानता कि मैंने क्या किया था। मैंने एकाएक देखा, रानी मेरे दुख का कारण समझ कर पलंग पर कुछ उठ कर बैठ गयीं, उन्होंने अपना सुन्दर हाथ बढ़ाकर मानों मुझसे चुप रहने के लिये इशारा करते हुए कहा—

“अकटैभ एक बात भी न कहना, मैं जानती हूँ तुम मुझसे प्रेम करते हो, मैं इसे अच्छी तरह अनुभव करती हूँ, किन्तु मैं उसे नहीं चाहती, क्योंकि प्रेम करना मेरी इच्छा के अधीन नहीं है। दूसरी स्त्रियाँ जो मुझसे कठोर हैं वे शायद तुम पर क्रोध करेंगी, किन्तु मैं तुमसे प्रेम नहीं कर सकती, यह कहते हुए मुझे केवल दुख मात्र ही होता है। मुझे इसी का दुख है कि मैं तुम्हारे दुर्भाग्य का कारण हुई हूँ। तुमने मुझे देखा है इसी से मुझे दुख होता है; यदि न देखा होता तो अच्छा होता। किस कुसमय मैं मैं बेनिस छोड़कर फ्लरेन्स आई थी। पहिले मैंने आशा की थी कि शायद क्रमशः अपेक्षा भाव दिखाने से तुम दूर चले जाओगे। किन्तु मैं सच्चे प्रेम को जानती हूँ—जिसका सब चिह्न मैं तुम्हारी आँखों में देखती हूँ—वह सच्चा प्रेम किसी भी विघ्न-वाधा का क्याल नहीं करता, किसी प्रकार नहीं दबता। किन्तु मेरे हृदय का यह कोमल भाव

तुम्हारे मन में कोई अम न उत्पन्न कर दे, मैं तुम्हारे ऊपर दया कर रही हूँ, ऐसा जान कर यह न समझना कि मैं तुम्हारे प्रेम को बढ़ावा दे रही हूँ। एक ज्योतिर्मय दूत सदा सब प्रलोभनों से मेरी रक्षा करते हैं—वे धर्म से भी श्रेष्ठ हैं, कर्त्तव्य से भी श्रेष्ठ हैं, पुण्य से भी श्रेष्ठ हैं—वे देवदूत ही मेरे प्राणेश्वर हैं—कौन्ट लाविन्सिक को मैं सदा देवता की तरह पूजती हूँ। मेरा सौभाग्य यही है कि जो मेरे हृदय-मन्दिर के देवता हैं, उन्हीं के साथ मैं विवाह-बन्धन से बंधी हूँ।”

इस निष्कपट हार्दिक पति-भक्ति की बात सुनकर मेरी आँखों में जल आ गया, और उसी के साथ मानो मेरे जीवन की मर्म-गाँठ भी टूट गयी।

मेरे कष्ट से विचलित होकर रानी प्रास्कोभि ने नारीजन सुलभ प्रेम और ममता के वश होकर अपने सुगन्धित रूमाल को मेरी आँखों पर हिला दिया, और कहा, “छिः, दुख मत करो। कोई दूसरा विषय सोचने की चेष्टा करो; समझ लो कि मैं हमेशा के लिये तुमसे अलग हो गयी हूँ, मैं मर गयी हूँ। मुझको भूल जाओ, देश-विदेश में भ्रमण करो, काम करो, लोगों का उपकार करो, दत्तचित्त होकर संसार के आदमियों का उपकार करो—लोगों के साथ मिलो जुलो—आर्ट (Art) की चर्चा करो, या किसी दूसरे से प्रेम कर मन को शान्त करो।”

मैंने अस्वीकार का भाव प्रगट किया। रानी ने फिर कहना आरम्भ किया—

“क्या तुम सोचते हो कि मेरे साथ इसी प्रकार बराबर मिलने-जुड़ने से तुम्हारा कष्ट कम हो जायगा ! बहुत अच्छा, तुम आओ, मैं तुम्हारे साथ हमेशा मिठा जुड़ा करूँगी। भगवान कहते हैं ‘शत्रु को भी क्षमा करना चाहिए’। तब जो मुझसे प्रेम रखते हैं क्या उनके साथ बुरा

व्यवहार करना उचित है ? कभी नहीं । किन्तु तो भी मैं सोचती हूँ कि वियोग ही इसकी अमोघ दवा है । दो वर्ष बाद हम साधारण रीति से बिना विपत्ति के मिल जुल सकेंगे । इसके बाद थोड़ा हँसने की चेष्टा कर उन्होंने कहा—अवश्य, बिना विपत्ति के तुमसे ।

उसके दूसरे दिन ही मैंने फ्लरेन्स छोड़ दिया, परन्तु क्या ज्ञान-चर्चा, क्या देश-भ्रमण, क्या अधिक दिनों का बीतना किसी से भी मेरा कष्ट कम नहीं हुआ । मैं अच्छी तरह अनुभव कर रहा हूँ कि मेरा मरण निकट है । नहीं, डाक्टर साहब, मेरी मृत्यु में आप बाधा न डालिएगा !

डाक्टर ने कहा—क्या इसके बाद रानी से फिर भेंट हुई ।

यह बात कहते समय डाक्टर की नीली आँखों से अद्भुत रंग की चमक निकल रही थी । अक्टैभ ने जवाब दिया । “नहीं, वे इस समय पेरिस में हैं” यह बात कहकर अक्टैभ ने हाथ बढ़ाकर डाक्टर साहब को एक निमंत्रण पत्र दिया । उस पत्र पर लिखा था ।

अगले गृहस्पतिवार को प्रास्कोभि कौन्टेस लाविन्सका बन्धुओं के सत्कार के लिये घर पर रहेंगी ।

(२)

रास्ते के एक ओर बड़े बड़े वृक्षों की पंक्तियाँ हैं और दूसरी ओर रमणीक उद्यान है । शौकीन लोगों के धूलिमय और कोलाहलमय रास्ते को छोड़कर, इस निस्तब्ध शान्त सुन्दर रास्ते पर बहुत कम लोग आते हैं । किन्तु जो लोग एक बार आते हैं वे यहाँ के कवित्वमय, रहस्यमय आश्रम के सामने बिना रुके हुए नहीं रह सकते । वे ईर्ष्यायुक्त आश्चर्य से टिङ्गल हो जाते हैं ऐसा जान पड़ता है—मानो ऐश्वर्य की गोद में सुख-शान्ति विराज रही है, जो विरले ही पायी जाती है । इस उद्यान के नज़दीक आकर कौन शक्ति होकर एक बार न खड़ा हो जायगा ?

कौन एक बार बर्गाचे के हरे पेड़-पत्तों के बीच से इस उज्ज्वल उद्यान गृह को टकटकी लगाकर न देखेगा ? और लौटते समय उदासीन चित्त से यह न सोचेगा कि उसके सब सुख-स्वप्न इसी बर्गाचे की दीवार के पीछे छिपे हुए हैं ।

इस उद्यान में प्रवेश करने के तंग रास्ते के दोनों तरफ बड़े बड़े स्तूप की एक दीवार है । रेंदे मेढ़े विचित्र आकार को देखकर ही मानों ये सब पत्थर के टुकड़े चुनचुन कर यहाँ लाकर स्थापित किये गये हैं । इस ऊबड़ खाबड़ घेरे के बीच मानो एक सुन्दर हरा दृश्य-पट बँधा हुआ है । इस पहाड़ी दीवार के बीचोबीच अनेक पहाड़ी पेड़ लगे हैं । अनेक जाति की लताएँ दीवार पर फैली हुई उसे ढके हुए हैं । इसमें रुम्यता के बनावटी उद्यान की अपेक्षा आप ही आप उत्पन्न हुए स्वाभाविक अरण्य का अधिक भाव भरा हुआ है । पहाड़ी स्तूप के कुछ पीछे घने पत्तों से ढके हुए कई चीजों के सुन्दर आकार हैं । वृक्ष और कुञ्जों के बाद हरी कोमल घासों से ढकी हुई मखमल से भी मुलायम भूमि है । मानो गलीचा बिछा हुआ है । वह आँख से देखने की ही चीज़ है, पैर का भार नहीं सह सकती । पगडंडो चलनी से छने महीन बालू से ढकी हुई है; जिससे घूमने के समय उच्चकुलोत्पन्न सुन्दरियों के सुकुमार पद-पङ्क्तव कँकड़ से बिधर पीड़ित न हों । इस बालू पर श्रेष्ठ ललनाओं के सुकुमार पैरों के चिह्न बने हुए हैं । बालू का रास्ता इस हरे घेरे के चारों तरफ घूम गया है ।

इस दूब के पाम ही काली जमीन के ऊपर लाल रंग के जिरा-नियम के फूल मानो आतशबाजी छोड़ रहे हैं । इन सब हरे दृश्यों के पीछे एक महल है । सामने सुगठित पतले पतले रुम्मे छत को थामे हैं । छत के प्रत्येक कोने में संगमर्मर की मूर्तियाँ रखी हैं । जान पड़ता

है कि किसी करोड़पति ने तरंग में आकर ग्रीस देश से एक देव-मंदिर उठा मँगवाया है। अट्टालिका के दोनों ओर बड़े बड़े उम्रिजगृह बने हैं। काँच की दीवार सूर्य की किरणों में चमचमा रही है और देश विदेश के अनेक प्रकार के दुर्लभ छोटे पौधे उसमें रक्खे हैं जो यहाँ नहीं मिलते। वषाकाल में पहिली बार किरण पड़ने के समय यदि कोई कवि प्रातः-काल इस रास्ते में गुजरे तो देखेगा कि कोयल की रात्रिहालीन कुहूक की अन्तिम तान अभी तक खतम नहीं हुई, परन्तु रात के समय जब नाटक से लौटती हुई गाड़ियों का घर्घर शब्द निद्रित-संसार की निश्चिन्ता में विलीन हो जाता है उस समय वह कवि अस्पष्ट भाव में देखेगा कि एक सुन्दर युवा पुरुष का हाथ पकड़कर कोई विषाद-मूर्ति ललना अपने महल पर चढ़ रही है।

जान पड़ता है पाठकों ने अनुमान कर लिया है कि इसी घर में कौन्टेस प्रास्कोभि लाविन्स्का और उनके पति कौन्ट लोआफ कुछ दिन से रहते हैं। ये साहसी वीर इस समय काकेशस के युद्ध में विजयी होकर लौट आये हैं।

इस पुनर्मिलन से प्रेमी दम्पति आनन्द में डूबे हैं। जो प्रेम अन्त में विवाह में परिणत हो गया इनके उस विशुद्ध प्रेम में देवता और मनुष्य दोनों का अनुमोदन था। क्योंकि कविवर टमासपूर ने देवताओं का प्रेम जिस भाव में वर्णन किया है यह उसी कोठि का प्रेम है। इसका वर्णन करने से लेखनी की प्रत्येक मसि.बूँद प्रकाश किरणों में परिणत हो जायगी, कागज के ऊपर सुगन्धित धूर का एक सुवास रख प्रत्येक शब्द भाव बनकर उड़ जायगा। जो दो आत्मा परस्पर विलीन होकर एक हो गये हैं, उनका वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है? मानो कमल के पत्ते पर ओस की दो बूँदें, एकत्र होकर, मिलकर, आपस में

विलीन होकर—अन्त में एक मोती की झुंड में परिणत हो गयी है। इस संसार में सुख की वस्तु इतनी कठिनता से मिलती है, कि मनुष्य इसको प्रगट करने के लिये नये शब्द बनाने की चेष्टा नहीं करता, परन्तु इसके विपरीत हर एक भाषा का शब्द-कोष नैतिक और भौतिक यंत्रणा के वाचक शब्दों से भरा हुआ है।

ओलाफ और प्रास्कोभि लड़कपन से ही एक दूसरे से प्रेम करते थे। एक नाम से ही उन दोनों के हृदय स्पन्दित होते थे; लड़कपन से ही वे दोनों इस नाम से परिचित थे; मानो उन दोनों के लिये और किसी मनुष्य का अस्तित्व ही न था; मानो प्लेटो वर्णित एक ही में स्त्री-पुरुष के दो टुकड़े उस आदिमकाल के विच्छेद के बाद फिर आकर मिल गये हैं, मानो वे एकत्व के बीच ही द्वित्व रूप से बने थे। उनमें एक पूर्ण सामञ्जस्य था। एक ही वासना की पुकार से वे अगल बगल कन्धे पर हाथ रखकर चलते थे; या एक कबूतर का जोड़ा एक ही उद्देश्य से जीवन-पथ में विचरता था—उड़ता था।

सुख की यह अवस्था अखण्डित रहे इसी लिये सोने के वायु-मण्डल की तरह असीम ऐश्वर्य ने उन्हें घेर लिया था। इन दोनों सुखो नक्षत्रों के उदय होने मात्र से ही दीन दुखियों के दुख कम हो जाते थे, बिथड़े उसी समय शरीर पर से उतर जाते थे; आँखों के जल सूख जाते थे; क्योंकि ओलाफ और प्रास्कोभि को एक उच्च सुख की आकांक्षा थी; वे अपने सामने किसी का दुख नहीं देख सकते थे।

कौन्ट का सुखमण्डल अण्डाकार है, सुगठित पतली नाक है, सुस्पष्ट मूँछें हैं जिनके दोनों किनारे पतले हैं। ठुड्डी कुछ उठी है जिसके ऊपर ज़रा सा गड्ढा है। काली काली तीखी आँखों के होते हुए भी दया मानों उनसे टपकी पड़ती है। पतला गठा हुआ मध्यम कद का शरीर

है, प्रकृति स्नायु प्रधान है, शरीर अति सुकुमार मालूम होने पर भी इस्पात की तरह सुदृढ़ पेशियों से गठा हुआ है। कौन्ट जब किसी शाही मजलिस में हीरक खचित शानदार ज़र्री की पोशाक पहिनकर जाते थे, उस समय वहाँ के पुरुषों को ईर्ष्या होती थी और रमणियों के हृदय में प्रेमाग्नि जल जाती थी। परन्तु प्रास्कोभि इससे बिल्कुल उदासीन थे, वे जैसे रूपवान थे उसी प्रकार बुद्धिमान भी थे।

आप समझते हैं कि ऐसे प्रतिद्वन्द्वी के विरुद्ध अक्टैभ को सफलता पाने की कोई सम्भावना न थी और पागल डाक्टर बालकाजार शेरबोनी कितना ही विश्वास क्यों न दिलावें चुपचाप पड़े हुए मृत्यु की प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त अक्टैभ के लिये और कोई उपाय न था। प्रास्कोभि को भूल जाना ही एक उपाय था किन्तु यह असम्भव था। फिर उनसे मिलने से क्या लाभ? अक्टैभ मन ही मन अनुभव करता था कि कोमल होने पर भी इस रमणी का हृदय जैसा अटल है उससे उसके संकल्प की दृढ़ता कदापि ढीली न होगी। वे बहुत ही आवेगहीन उदासीनता प्रगट करके उसको केवल कृपादृष्टि से देखेंगी। अक्टैभ डरता था कि जिस घाव का चिह्न अभी तक नहीं मिटा है उसका मुख फिर फटकर नया न हो जाय और पीछे उसी निर्दोष हत्याकारिणी के चरणों पर उसका खून से डूबा हुआ हृदय लोट न जाय। परन्तु अक्टैभ अपनी प्रेम धन रूपिणी इस मधुर हत्याकारिणी पर हत्या का अभियोग लगाने का इच्छुक न था।

(३)

जान पड़ता है पाठकों को यह याद है कि अक्टैभ जब लाविन्स्का से यह कहने जा रहा था कि वह उससे प्रेम करता है तब उसने उसे रोक दिया था, वह बात उसके मुख से बाहर नहीं निकलने दी, वह बात

न्होंने सुननी न चाही। उस समय से दो वर्ष बीत गये हैं। सुख-स्वप्न ही ऊँची चोटी से इस प्रकार का अंधकार पतन होने से अक्टैम का चित्त नेराशा और विषाद रूरी अलंकार से ढक गया और वह लाविन्स्का को बेना खबर दिये ही दूर देश में चला गया।

जि० एक बात को अक्टैम लाविन्स्का को लिख सकता था वह बात मुख से निकालने के लिये उसे मना कर दिया गया, इस लिये लाविन्स्का ने अक्टैम का कोई संवाद नहीं पाया। उसकी इस चुप्पी से डरकर लाविन्स्का उदासीन चित्त से कभी कभी अपने भक्त बेचारे अक्टैम की चिन्ता करती—“क्या वह मुझे भूठ गया? लाविन्स्का चाहती थी कि वह मुझे भूल जाय किन्तु वे इस पर विश्वास नहीं करती थीं। क्योंकि उन्होंने जो प्रेनागि अक्टैम की आँखों में जलने हुए देखा है वह बुझनेवाली नहीं है। कौन्टेस उसके हृदय की अवस्था विलक्षण रूप से जानती थीं। प्रेम और देवताओं में एक विलक्षण परिचय है, वे एक दूसरे को देखने से ही पहिचान सकते हैं। इसी से इस प्रेम के याद आते ही उनके सुख रूपी आकाश के ऊपर एक छोटा बादल काटुड़ड़ा छा गया। पृथ्वी के दुःख-कष्ट से स्वर्ग के देवताओं को जैसा दुःख-कष्ट होता है, उसी प्रकार के एक हलके दुःख ने उनके मन पर अधिहार कर लिया। उनके कारण कोई एक अभागा कष्ट पा रहा है, यह सोचकर उस ममतामयी देवी का हृदय कुछ द्रवित हुआ, प्रन्तु किसी उज्ज्वल तारका के सौन्दर्य पर मोहित होकर यदि कोई साधारण गड़ेरिया उससे मिलने को अपने दोनों हाथों को ऊपर उठावे, तो वह तारका उसके लिये क्या कर सकती है?

पेरिस में आकर कौन्टेस लाविन्स्का ने अक्टैम के नाम साधारण रीति से एक सीधा सादा निमन्त्रण पत्र भेजा था। डाक्टर शेखोनो इस समय उसी पत्र को लेकर अन्य पत्रों के भाव से अँगुलियों के बीच हिला

डुला रहे थे। कौन्ट्रेस की इच्छा रहते हुए भी जब अक्टैभ नहीं आया तब उन्होंने सोचा कि वह इस समय भी उनसे प्रेम करता है। शायद वह किसी विशेष कारण से नहीं आ सका। यह सोचकर कौन्ट्रेस का हृदय प्रसन्न हुआ। तभी तो यह रमणी स्वर्ग के देवता की तरह विशुद्ध चरित्र वाली और हिमालय की सब से ऊँची चोटी पर पड़नेवाले तुषार की तरह स्वच्छ और निष्कलंक है। डाक्टर ने अक्टैभ से कहा—मैंने तुम्हारी वर्णन की हुई कहानी अच्छी तरह सुनी है, मेरा विचार है कि इस समय किसी प्रकार की आशा करना तुम्हारे लिए बिल्कुल पागलपन है। कौन्ट्रेस कभी तुम्हारे प्रेम को ग्रहण न करेगी।

‘देखिए, डाक्टर महाशय, इमीलिये मैं अपना प्राण बचाने की चेष्टा करने का कोई कारण नहीं देखता हूँ।’

डाक्टर ने कहा—मैंने तो पहिले ही कहा है कि साधारण उपायों से प्राण बचाने की कोई आशा नहीं है। किन्तु ऐसे बहुत से गुप्त तत्व और गूढ़ शक्तियाँ हैं जिनके सम्बन्ध में वर्तमान-कालीन विज्ञान एकदम अनभिज्ञ है। मूर्ख सभ्यता जिस देश को असभ्य कहती है उसी विदेशीय भूमि पर गोपनीय विद्या की चर्चा वंश-परम्परा से चली आती है। उसी स्थान पर जगत् के आरम्भ से मनुष्य जाति प्राकृतिक शक्तियों से बहुत निकटतम सम्बन्ध हो जाने के कारण उसके गोपनीय तत्वों को जान सकी थी। लोगों का विश्वास है कि वे सब तत्व नष्ट हो गये, इस समय साधारण आदमी उसे बिल्कुल नहीं जानते। ये सब गोपनीय तत्वज्ञान पहिले मन्दिर, देवालय और रहस्यमय घने जंगल के बीच शिष्य परम्परा से प्रचारित होते थे। उसके बाद वे दूसरे आदमियों के न समझ सकने योग्य पवित्र भाषा में लिखे गये; एलोरा की गुफा की दीवारों पर खोदे गये। तुम इस समय भी देखोगे कि जहाँ से गंगा

मिळती हैं उस पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर, पुण्य नगरी वाराणसी की पत्थर की सीढ़ियों के नीचे, सिंहल के भग्न स्तूप के नीचे, सौ वर्ष की आयु वाले कई ब्राह्मण अपरिचित पोथी का पाठ करते हैं; कई योगी अनिर्वचनीय ओंकार शब्द के जपने में तल्लीन रहते हैं—इस समय आकाश के पक्षी इनकी जटाओं में घोंसला जमाते हैं पर उस ओर उनका ध्यान ही नहीं है, कई एक सन्यासी जिनके कंधे पर त्रिशूल से लगे चोट के चिह्न हैं, उन लोगों ने नष्टप्राय गोपनीय विद्या पर कब्जा कर लिया है, और उसके द्वारा आश्चर्यजनक फल पाकर उसे काम में लाया है। हमारा यूरोप भौतिक स्वार्थ में डूबकर कल्पना भी नहीं कर सकता 'भारत के तपस्वीगण आध्यात्मिकता की कितनी ऊँची सीढ़ी तक पहुँच गये हैं'। उन लोगों का निर्जल उपवास, ध्यान-धारण की भयंकर एकाग्रता वर्षों तक दुस्साध्य आसन में बैठे रह कर, तेज धूप में जलती हुई आग के बीच में बैठकर शरीर सुखाना यह सब यूरोप की शक्ति के बाहर है। उनके हाथ के नाखून बढ़कर उनकी हथेली में घुस गये हैं; देखने से ऐसा जान पड़ता है मानो कोई सुरक्षित ममी* है उनके शरीर का बाहरी परदा मानों तितलीका आवरण है। तितलीरूपी अमर आत्मा इस आवरण को इच्छानुसार त्याग अथवा ग्रहण कर सकता है। जिस समय उन लोगों का भयंकर जीर्ण शीर्ण जड़वत् देह-पिंड एक स्थान पर पड़ा रहता है उस समय उन लोगों का आत्मा सब बन्धनों से छूट कर कल्पना के परों के सहारे गणनातीत उच्च प्रदेश के अलौकिक संसार में उड़ जाता है। उस समय वे अद्भुत स्वप्न देखते रहते हैं। भगवान के सागर-

* ममी (Mummy) = मोम और मसाला आदि द्वारा रक्षित मृत शरीर।

वक्ष में विलीन युगान्तर में जो तरंगे उठती हैं; वे लोग योगानन्द के उच्छ्वास में उन्हीं सब तरंगों का अनुसरण करते हैं। वे विधाता के सृष्टि कार्य में सहायता करते हैं। वे लोग सब प्रकार से असीम के बीच में विचरण करते हैं। प्रलय काण्ड के कारण जो विज्ञान लुप्त हो गये हैं वे सब विज्ञान, आदिम मानव जाति और पंचभूतों के विवरण उन्हें याद आते हैं। वे इस उद्भट अवस्था में इस प्रकार की एक भाषा के शब्दों को सुन-सुनाते हैं, उच्चारण करते हैं; जिस भाषा में किसी बहुत समय तक किसी भी जाति ने बातचीत नहीं की है। उसी आदिम शब्द-ब्रह्म को उन्होंने फिर पाया है, जिस शब्द-ब्रह्म ने पुराने अंधकार में से प्रकाश की तेज धारा बहा दी थी। लोग उन को पागल समझते हैं, परन्तु वास्तव में वे देवता हैं।

इस अद्भुत उपक्रमणिका से अक्टैन का बड़ा हुआ कोतूहल अपनी चरम सीमा को आ पहुँचा। डाक्टर की बात की गति न समझ कर वह आँख फाड़कर जिज्ञासा के भाव से उनकी ओर देखता रहा। उपर के प्रेम के साथ भारतीय साधु-संन्यासियों का क्या सम्बन्ध हो सकता है? अवटैन इसका कुछ भी अनुमान न कर सका।

डाक्टर ने अक्टैन का मनोभाव समझ कर, कोई प्रश्न पूछने के लिये मना करने के भाव से, हाथ से एक इशारा करके कहा—भैया ! जरा धैर्य रखो; तुम इसी समय समझ सकोगे—मैंने जो कुछ कहा अनावश्यक और अश्लासिक बात नहीं है—मूल विषय के साथ उसका विलक्षण सम्बन्ध है। मैं परीक्षा-गृह के मार्बल के मेज पर बैठकर यंत्रों द्वारा मृत-देह की परीक्षा कर चुका हूँ। उससे मुझे कोई तत्व नहीं मिला। जीव की खोज में जाकर मैंने केवल मृत्यु को ही पाया है ! उस समय मेरे मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई। वह इच्छा मुझे दुस्साहसियों की तरह कहानी

होगी यह दुस्माहस अग्निहरण के उद्देश्य से प्रेमथिउत्तर के स्वर्ग-आक्रमण के समान है। मैंने सोचा, मैं जबरदस्ती आत्मा को पकड़ूँगा। उसके बाद उसका विश्लेषण करूँगा, शवच्छेद (मुरदे को चीरना फाड़ना) की तरह टुकड़े टुकड़े करके देखूँगा। मैंने कारण के उद्देश्य से कार्य को छोड़ दिया। जड़ विज्ञान को भारी अवज्ञा की दृष्टि से देखने लगा, क्योंकि उससे केवल मृत्यु का ही प्रमाण पाया जाता है। मैंने सोचा कई एक मूर्तियों के ऊपर परीक्षा करना, कई एक पृथक पैदा हुए परिमाण राशियों के ऊपर परीक्षा करना—यह तो स्थूल प्रत्यक्षवाद का काम है। जिन बन्धनों से देहावरण आत्मा के साथ बँधा रहता है, चुम्बक की शक्ति के सहारे मैं उन सब बन्धनों को ढीला करने की चेष्टा करने लगा। इन सब परीक्षा-कार्यों में मैं मेसमेर आदि मोहिनी शक्ति के आविष्कारकों से भी आगे बढ़ गया। खूब आश्चर्य-जनक फल पाया। किन्तु इससे भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। मृगी रोग, शरीर के सहित स्वप्न में घूमना, भविष्य को जानना, समाधि अवस्था में चित्त निर्मल करना—ये सब काम मैं अपनी इच्छानुसार कर सकता था। ये सब काम दूसरे लोगों की बुद्धि से परे हैं—किन्तु मेरे लिये सीधे हैं। मैंने और भी उन्नति की। यूरोपीय मठ के जो महापुरुष ध्यान-धारणा समाधि के द्वारा आश्चर्यजनक विभूति प्राप्त करके अलौकिक कार्य करते हैं, उन्हें करने में भी मैं समर्थ हुआ। किन्तु तो भी मेरा उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। किसी प्रकार भी मैं आत्मा को नहीं पकड़ सका। मैं आत्मा का अनुभव कर सकता था, समझ सकता था, आत्मा के ऊपर कार्यफल उत्पादन कर सकता था, मैं आत्मा की वृत्तियों को जड़ीभूत या उत्तेजित कर सकता था। परन्तु आत्मा और शरीर के बीच जो मांस का आवरण है उसे किसी प्रकार दूर नहीं कर सकता था—ऐसा न हो कि आत्मा

उड़ जाय । जिस प्रकार बहेलिया जाल में पक्षी फँस जाने पर उसे जह्दी खींचने का साहस नहीं करता—ऐसा न हो कि पक्षी आकाश में उड़ जाय—यह उसी प्रकार है ।

अन्त में मैंने इस उद्देश्य से भारतवर्ष की यात्रा की । मैं ज्ञान के उस पुरातन देश में अपनी दुर्ज्ञेय समस्या का मंत्र वा जाऊँगा । मैंने संस्कृत और प्राकृत सीखी, मैं पंडितों और ब्राह्मणों के साथ बात-चीत करने में समर्थ हुआ । जिन स्थानों पर बाघ घात लगाकर शिकार के लिये गरजते हैं, उन सब जंगलों में घूमता फिरा । जिन सब पवित्र सरोवरों में घड़ियालों का वास है उन्हीं सरोवरों के किनारे मैं चलने लगा । लता गुल्म से ढके हुए दुर्लभ जंगलों के पार हो गया । मेरे पाँव के शब्द से चमगादड़ों का झुण्ड उड़ जाता, बन्दरों का झुण्ड भाग जाता । जिस मार्ग पर हरिण विचरण करते हैं वही रास्ते से मुड़ते समय मैं एक बार हाथी के मुख में आ पड़ा । इस प्रकार अन्त में मैं एक प्रसिद्ध योगी की कुटी में आ पहुँचा । मैं उनके मृगचर्मके एक बगल बैठकर, समाधिस्थ योगानन्द के उच्छ्वास में उनके मुख से निकलते हुए अस्पष्ट मंत्र को खूब मन लगाकर सुनने लगा । इस प्रकार कितने ही दिन बीत गये । उनमें से चुने हुए शक्तिमान शब्द—जिस मंत्र के द्वारा प्रेतात्माओं का आवाहन किया जाता है—और शब्द-ब्रह्म के मंत्र को मैंने सीख लिया, देवमंदिर के नीचे के भाग में जो मूर्तियाँ हैं, उन मूर्तियों को अदीक्षित लोग नहीं देख सकते । परन्तु ब्राह्मण-वेष-धारी होने के कारण मैं उस गुप्त भाग में प्रवेश कर सका था । सृष्टि-तत्त्व का रहस्य और लुप्त सभ्यता की अनेक कहानियाँ मैं पढ़ सका था । देव-देवियाँ अपने बहुत से हाथों में जो जो चीजें धारण करती हैं मैंने उनके रूपक अर्थों का आविष्कार किया ।

ब्रह्मा के चक्र पर, विष्णु के पद्म पर, नील कंठ शिव के सूर्य पर, मैं

ध्यान करने लगा। मुझे ऐसा जान पड़ा, मानों गणेशजी अपने स्थूल चर्म की सूँड़ को हिलाते हिलाते बड़ी बड़ी बरौनियोंवाली छोटी छोटी भपकती आँखों को बन्द कर थोड़ा सा मुस्कुराकर इन अन्वेषणों की चेष्टा में मुझे उत्साह दे रहे हैं। ये विकट मूर्तियाँ अपने प्रस्तर भाषा में मानों मुझ से कहने लगीं—हम लोग अनेक आकार की कुछ मूर्तियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। वास्तव में आत्मा ही जड़ पिण्ड का परिचालक है। मैंने तिरुनामलय के मंदिर के पुरोहित से अपने मन का संकल्प खोल कर कहा, तब उन्होंने मुझे एक सिद्ध पुरुष का पता बता दिया। वही सिद्ध पुरुष योगी एलिफाण्टा की गुफा में रहते हैं। मैं वहाँ पर गया, जाकर देखा—वे गुफा की दीवार की आड़ लगाये, बलकल-वस्त्र पहने, घुटना ठुड़ी से लगाये हाथ की अँगुलियों को एक पर एक रखकर बिल्कुल निश्चल भाव से बैठे हैं, आँख की पुतलियाँ उलट गयी हैं—केवल आँख की सफेदी दिखाई देती है, शरीर के चमड़े में काई लग गयी है, और वह ठुड़ी से सट गया है, बाल की जटाएँ पक कर झूठ रही हैं, दाढ़ी दो भागों में बँटकर लोट रही है, और नाखून गिद्ध के नाखून की तरह टेढ़े होकर घूम गये हैं।

भारतवासियों की तरह उनके शरीर का रंग स्वभावतः श्याम है। परन्तु सूर्य की तेज गर्मी के कारण पत्थर की तरह कृष्णवर्ण हो गया है। पहिली बार दृष्टि पड़ने से मुझे जान पड़ा कि यह आदमी मर गया है, मैं इसके हाथ को पकड़कर उसे हिलाने लगा, मृगी रोगक्रान्त मनुष्य की तरह उसके दोनों हाथ कठोर और निर्जीव हो गये हैं। अपने को दीक्षित जनाने के अभिप्राय से मैं अपने दीक्षामंत्र को उनके कानों के पास उच्च स्वर से पढ़ने लगा, किन्तु वे इसपर जरा भी हिले डुले नहीं, आँखों की पुतलियाँ एक दम स्थिर और निश्चल रहीं। मैं उनको न

जगा सकने के कारण लौटा जा रहा था, ऐसे समय एक अद्भुत 'फट फट' शब्द सुनाई पड़ा। बिजली के प्रकाश के समान नीली आभा की चिनगारी बहुत जल्दी से मेरे आँखों के सामने से चली गयी। वह चिनगारी योगी के आधे खुले हुए ओठ के ऊपर क्षण भर संचरण करके एकदम लुप्त हो गयी।

ऐसा जान पड़ा मानो तपस्वी निद्रावस्था से जाग गये। उनकी आँखों की पुतलियाँ फिर अपने स्थान पर आ गयीं, वे सद्य भाव से मेरी ओर देखकर मेरे प्रश्नों का उत्तर देने लगे।

“देखो, तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी है, तुमने एक आत्मा को देख-पाया है। मैं अपने इच्छानुसार अपने आत्मा को शरीर से अलग कर सकता हूँ। ज्योतिर्मय भँवरे की भाँति यह आत्मा शरीर के बाहर होता है, फिर शरीर में प्रवेश करता है। वह केवल सिद्ध पुरुषों को ही दिखा लाई देता है, और कोई उसे नहीं देख पाता। मैंने कितने ही उपवास, आराधना, ध्यान-धारणा किये हैं, कैपी कठोरता से देह को शीर्ण किया है—तब मैं अपने आत्मा को संसारी-बन्धन से मुक्त कर सका हूँ। अवतार मूर्ति ग्रहण करते समय जिस रहस्यमय महामंत्र ने विष्णु को मार्ग दिख-लाया था वही महामंत्र स्वयं विष्णुदेव ने आकर मेरे हृदय में प्रकाशित किया है। यदि निर्दिष्ट क्रियाओं के साथ मैं उस मंत्र का उच्चारण करूँ, तो पशु या मनुष्य जिसके शरीर में मैं तुम्हारे आत्मा को प्रवेश करने के लिए कहूँगा, उसी के शरीर में तुम्हारा आत्मा प्रवेश करके उसे सजीव कर देगा। मुझे छोड़कर इस पृथ्वी पर वह मंत्र और कोई नहीं जानता। यह गुप्त मंत्र तुम्ही को दिये जाता हूँ—मंत्र देने का कारण यह है कि जिस प्रकार बुलबुला समुद्र में मिल जाता है उसी प्रकार मैं इस निष्क्रिय अमृत ब्रह्म में विलीन हो जाना चाहता हूँ।” इसके बाद इन योगी

सिद्ध पुरुष ने मरणासन्न मनुष्य की अन्तिम स्वांस की तरह बहुत धीमे स्वर में कुछ शब्दों की आवृत्ति की। उन शब्दों के उच्चारण से मानो मेरी पीठ पर से एक कोमल कंपन की तरंग चली गयी।

अक्टैम बोल उठा—डाक्टर साहब, आप इस समय क्या कहना चाहते हैं ? आपका क्या मतलब है ? मैं तो कुछ भी नहीं समझ रहा हूँ।

डाक्टर बालथाजार शेरवोनो ने शाश्वतभाव से उत्तर दिया—मैं तुमसे यह बात कहना चाहता हूँ कि अपने बन्धु ब्रह्मलोगम् के मायामंत्र मैं इस समय भी नहीं भूला हूँ। कौन्ट ओलाफ लाविन्स्का के शरीर में प्रवेश किए हुए अक्टैम के आत्मा को यदि कौन्टेल लाविन्स्का पहिचान सके, तो मैं समझूँगा कि कौन्टेल लाविन्स्का के समान सूक्ष्म बुद्धि-वाला इस संसार में कोई भी नहीं है।

(४)

चिकित्सा और अलौकिक शक्तियों के कारण पेरिस में डाक्टर बालथा-जार शेरवोनो की खूब चलती है। सत्य हो या भूठ, इन सब विचित्र कार्यों के कारण इस समय सभी जगह उनका आदर-सम्मान है। परन्तु रोगी पाने की चेष्टा की बात तो दूर है, रोगी आने पर वे उसे दरवाजा बन्द करके भगा देते हैं अथवा ऐसी औषधियाँ और नुस्खे लिख देते हैं जो कि अद्भुत होते हैं, और इस प्रकार व्यवस्था करने को कहते हैं, जिसका पालन करना असम्भव है। वे खाँसी, ज्वर, अतीसार—इन सब चलतू साधारण रोगों से आक्रान्त रोगियों को अवज्ञा के साथ अपने आगे के डाक्टरों के पास भेज देते हैं। वे असाध्य रोग से, कठिन और गुरुतर रोग से ग्रसित रोगी की ही चिकित्सा करते हैं। उनकी चिकित्सा से रोगी अभावनीय रूप से आरोग्यता लाभ करता है। रोगी की शय्या के पास खड़े होकर वे एक प्याले जल में फूँककर

मायामंत्र का उच्चारण करते हुए अनेक प्रकार की मुद्रा करते हैं। मरणा-सन्न पुरुष का प्रत्येक अंग सख्त, जड़ और ठंडा हो गया है, उसे समाधि भूमि पर ले जाने का उद्योग हो रहा है—उसी समय उसके बैठे हुए दाँतों को खोलकर मंत्र से पवित्र किये हुए जल की कई बूँदे उसको पला दी जाती हैं; उसके बाद रोगी के शरीर में स्वाभाविक कोमलता और स्वास्थ्य का रंग फिर लौट आता है। रोगी शय्या पर बैठ जाता है और आश्चर्ययुत भाव से चारों ओर देखने लगता है। इसीलिये सब लोग शेरवोनो को मृत्यु का डाक्टर कहते हैं, मृतसंजीवन का डाक्टर कहकर पुकारते हैं। परन्तु वे सब समय इन सब रोगों की चिकित्सा करने के लिए तैयार नहीं होते, वे अधिकतर धनी मुमुक्षु रोगियों से अधिक धन पाते हुए भी उन्हें लौटा देते हैं। यदि कोई माता अपने इकलौते पुत्र के जीवन के लिए उनसे कातर विनय करती है; कोई प्रेमी अपनी प्राण-प्रिया की प्रेम-प्राप्ति से हताश होकर उनकी सहायता चाहता है या यदि वे सोचते हैं कि जिस मनुष्य का जीवन संकटापन्न है उसका जीवन विज्ञान के निमित्त, कविता के निमित्त, संसार के मनुष्यों की उन्नति के निमित्त विशेष प्रयोजनीय है; तो वे उसकी मृत्यु के साथ लड़ने को तैयार हो जाते हैं।

इस प्रकार उन्होंने शीत रोग से साँस रुके हुए एक गोद के लड़के को यक्ष्मा की असाध्य अवस्था में पहुँची हुई एक रूपवती ललना को, सुरा-विकारग्रस्त एक कवि को, मस्तिष्क का खून जम जाने के रोग से आक्रान्त एक यंत्र-आविष्कारक को बचाया है। उनके स्वभाव से ऐसा ज्ञात होता है कि उनके आविष्कार का गं रव उनके साथ ही साथ मिट्टी के नीचे गड़ जायगा। और वे यह भी कहते हैं—प्रकृति को उलटने की चेष्टा करना ठीक नहीं, कुछ लोगों को मरना ही चाहिये—उनके मरने का

उचित कारण हैं, उन लोगों की मृत्यु में यदि बाधा दी जाय तो समस्त संसार के यंत्र में एक गड़बड़ी हो जायगी। इस समय आप स्पष्ट देख रहे हैं; डाक्टर शेरवोनो सृष्टि से परे के एक मनुष्य हैं; अपनी धुन में मस्त एक पागल आदमी हैं। इस पागलपन को वे सम्पूर्ण रूप से भारतवर्ष से पैदा करके लाये हैं। परन्तु उनकी सम्मोहनकारी ख्याति के सामने बड़े बड़े चिकित्सकों की ख्याति कुछ भी नहीं है। उन्होंने थोड़े से चुने हुए लोगों के सामने कई बार सभा की थी, उस सभा में ऐसे अद्भुत कार्य दिखलाये थे जिससे लोगों के संभव-असंभव सभी संस्कार उलट पलट हो गये; वे प्रसिद्ध जादूगर क्यागलियट्टार के अद्भुत ऐन्ड्र-जालिक व्यापार को भी लाँघ गये थे।

डाक्टर एक पुराने होटल के एकतल्ले मकान में रहते हैं। पहिले की प्रथा के अनुसार उस होटल के मकान एक पंक्ति में बने हैं। उन घरों की ऊँची खिड़कियों से नीचे का भाग दिखाई देता है। बगीचे में बड़े बड़े पेड़ हैं, पेड़ के तने काले हैं और वे लम्बे लम्बे हरे पत्तों से ढके हैं। कई एक शक्तिमान गर्मी फैलानेवाले यंत्रों के मुख से तेज गर्मी निकल कर बड़े बड़े घरों को गर्म किये हुए है। इस समय घर की गर्मी का तापमान ३५ से ४० डिग्री तक है। भारतवर्ष की तेज गर्मी के अभ्यासी डाक्टर शेरवोनो हमारे देश में सूर्य की मंदकिरणों से ठीक उन यात्रियों की तरह थरथर काँपते हैं जो कि नील नदी के उद्गम स्थान मध्य अफ्रीका से कैरो में आकर काँपते हैं वे बिना गाड़ी बन्द किये घर से बाहर नहीं निकलते, वे शीत से भयभीत मनुष्य की भाँति सारा शरीर पशु के रोमों से बने ओवरकोट से ढककर गरम जल से भरे हुए एक टीन के चाँगे पर पैर रखते हैं।

उनके घरों में कई नीची पल्लों को छोड़ और कुछ न था।

पल्लों मालावार देश की छींट के कपड़ों से ढकी हैं; उनके ऊपर अद्भुत आकृतिवाले हाथी और पक्षियों का चित्र बना हुआ है। वहाँ पर सोने की कलई की हुई, विदेशी फूलों से भरी कई एक जापानी फूलदानियाँ रक्खी हैं और मेज के तख्ते पर घर के एक किनारे से दूसरे किनारे तक दरी बिछी हुई है। सफेद और काले रंग के सूतों से कढ़ी हुई यह विषादमय दरी जेलखाने के डाकुओं ने बुनी है। जिस सन की रस्सी से वे गले में फाँसी लगाते हैं उसी सन से यह बुनी गयी है। पत्थर और काँसे की कई-एक हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रक्खी हैं। मूर्तियों की आँखें बड़ी-बड़ी और बादाम के आकार की हैं, उनके नाक में नथुनी है, हास्य-मय स्थूल ओठ हैं, मोतियों की माला नाभि तक झूल रही है, उनके स्वरूप और लक्षण अद्भुत तथा रहस्यमय हैं, मूर्तियाँ नीचे की वेदी पर पलथी मारकर बैठी हैं। देवालय की दीवाल पर धुँधले रंगवाले चित्र-पट झूल रहे हैं। ये चित्र लखनऊ और कलकत्ता के चित्रकारों के हाथ से खींचे गये हैं। मत्स्य, कूर्म, बाराह, नरसिंह, बामन, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि नवो अवतारों के चित्र टँगे हैं। सब से अन्त में नारायण की वह मूर्ति है, जो क्षीरसागर में टेढ़े पाँच सिरवाले सर्प की वेदी पर सोयी हुई किसी समय सफेद घोड़े पर चढ़कर, अन्तिम अवतार कल्कि का रूप धारण करके संसार का प्रलय करने की प्रतिज्ञा कर रही है।

सब घरों से पीछेवाला घर और घरों की अपेक्षा अधिक गर्म किया गया है, इसी घर में संस्कृत पोथियों से घिरे हुए डाक्टर बालधाजार शेरवोनो वास करते हैं। पोथियों के अक्षर पतले-पतले काठों के ऊपर छोड़े की लेखनी से खोदे हुए हैं, लकड़ी के टुकड़ों में छेद हैं इन्हीं छेदों में डोरी लगाकर वे गुँथे हुए हैं।

यूरोप में हमलोग जिसको पुस्तक कहते हैं ये उस प्रकार की नहीं

हैं। एक विद्युत्तन्त्र सुनहरे-फूल कढ़े हुए कई एक बोतलों में भरा है; बोतल के मुख में हैंडल लगा हुआ है—इसी हैंडल के द्वारा वह यंत्र घुमाया जाता है। बगल में सम्मोहन-कार्य के लिये एक छोटा सा लकड़ी का टब है, उसमें से कई-एक लोहे के छड़ बाहर निकले हुए हैं। शेरवोनो एक नीम-हकीम के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं; इसीलिये वे प्रकृत वैज्ञानिक परीक्षाओं में कुछ उद्योग नहीं करते। परन्तु तो भी पूर्ववर्ती किमियागरों के परीक्षा गृह में प्रवेश करने से मन में जो भाव उत्पन्न होता था, उनके इस अद्भुत परीक्षागार में प्रवेश करने से मन में उस प्रकार का भाव उत्पन्न हुए बिना नहीं रहता।

कौन्ट ओलाफ लाविन्सिक ने लोगों के मुख से सुना था कि इस डाक्टर की अनेक अलौकिक चेष्टाएँ सफल हुई हैं; इसीलिये उनमें अत्यन्त विश्वासयुक्त कौतूहल उत्पन्न हुआ, वे डाक्टर से मिलने गये।

जब कौन्ट ने घर में प्रवेश किया, तब उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानो एक अदृश्य अग्निशिखा ने उन्हें घेर लिया है, उनके सारे शरीर का खून सिर की ओर बहने लगा, सिर की रगों की शिराएँ दबदब करने लगीं, घर की असहनीय गर्मी से मानो उनकी साँस रुक गयी। दीपक में जो तेल जल रहा था और फूलदानी में जावा द्वीप के जो मसालेदार बड़े-बड़े फूल हिल रहे थे—उन दोनों की तीव्र गन्ध से उनका माथा ठनकने लगा। कौन्ट मतवाले की तरह भूमते भूमते डाक्टर की ओर बढ़े। डाक्टर शेरवोनो सन्यासियों की तरह पलथी मारकर बैठे थे। पोशाक से ढके हुए डाक्टर के शीर्ण अङ्ग-प्रत्यङ्ग का भाव देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो एक मकड़ी शिकार की घात में जाल में निश्चल-भाव से बैठी है। कौन्ट को देखते ही फासफोरस के समान चमकती हुई उनकी आँखें एकाएक प्रज्वलित हो उठीं। परन्तु उन्होंने तुरत ही अपनी इच्छा से

उन्हें बुझा दिया। इसके बाद डाक्टर ने ओलाफ़ की ओर अपना हाथ बढ़ाया। वे यह समझ गये थे कि ओलाफ़ बेचैन हो रहे हैं। इसलिये उन्होंने दो-तीन बार हाथ भाड़कर ओलाफ़ के चारों तरफ़ बसन्त की वायु उत्पन्न कर दी—उस उत्तप्त ज्वालामय नरक के बीच में सुशीतल स्वर्ग की सृष्टि कर दी।

“अब तो आप को अच्छा मालूम होता है? आप बाल्टिक सागर की तुषारयुक्त ठंडी हवा में रहने के अभ्यस्त हैं इसी से घर की गर्म हवा आपको लोहार के कारखाने में जलती भट्टी की हवा की तरह मालूम होती थी—किन्तु भारतवर्ष के तेज सूर्य की किरणों में जला हुआ मैं इस गर्मी में भी सर्दी से काँप रहा हूँ।”

कौन्ट ओलाफ़ ने एक इशारे से यह बतलाया कि अब गर्मी से तकलीफ़ नहीं हो रही है।

डाक्टर साहब ने अत्यन्त सरल भाव से कहा—आपने मेरी भाड़-फूँक और सम्मोहन-विद्या की बात सुनी होगी। क्या आप इस समय उसका एक नमूना देखना चाहते हैं?

कौन्ट ने जवाब दिया—मेरा कौतूहल लड़कों सा नहीं है। जो पुरुष एक विज्ञान का सम्राट है उसके ऊपर मेरी श्रद्धा इससे बहुत अधिक है।

“वैज्ञानिक कहने से जिस अर्थ का बोध होता है, उस अर्थ में मैं वैज्ञानिक पंडित नहीं हूँ; बल्कि विज्ञान जिब सब चीज़ों की अवज्ञा करता है उन्हीं चीज़ों की खोज करके मैंने प्रयोग में न आने वाली कई गूढ़ शक्तियों को वश में किया है। मैं उनमें ऐसे-ऐसे कार्य करके दिखा सकता हूँ, जो कि प्राकृतिक होने पर भी अत्यन्त आश्चर्यजनक मालूम होते हैं। जिस प्रकार बिल्ली झूहा पकड़ने के लिये घात लगाकर बैठी

रहती है, उसी प्रकार मैं भी प्रतीक्षा करता हुआ अवसर समझकर अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के प्रभाव से किसी आत्मा का रहस्य तुरन्त मालूम करके बतला सकता हूँ; वह आत्मा उस समय सब बातें मुझसे खोलकर कह देता है;—उसी से मेरा कार्य सिद्ध होता है, मैं उसकी कुछ बातों को याद करता हूँ। आत्मा ही सब कुछ है, जड़ जगत केवल बाहरी दिखावट मात्र है। जगत सम्भवतः ईश्वर का एक स्वप्न मात्र है या असीम के बीच में शब्द-ब्रह्म से निकला हुआ एक बाहरी विकास मात्र है। मैं इच्छानुसार शरीर को कपड़े की तरह सिकोड़ सकता हूँ, जीवनीशक्ति को अटका सकता हूँ, या तेजी से चला सकता हूँ; मैं आकाश को लुप्त कर सकता हूँ, बिना क्लोरोफार्म की सहायता लिये वृक्ष को नष्ट कर सकता हूँ। मैं मानसिक बिजली की सहायता से इच्छाशक्ति द्वारा जीवन-दान कर सकता हूँ, या किसी को वज्राघात से धराशायी कर सकता हूँ। मेरी आँखों के सामने कोई भी चीज़ धुँधली नहीं है; मैं चिन्ता की किरणों को स्पष्ट देख पाता हूँ। जिस प्रकार बिल्लोरी काँच के कलम में से निकली हुई सूर्यालोक के रंग की छटा पदों के ऊपर गिरती है, उसी प्रकार मैं अपनी अदृश्य बिल्लोरी-कलम से चिन्ता की किरणों को अपने सफेद मस्तिष्क-पट पर इच्छाशक्ति के बल से प्रतिबिम्बित कर सकता हूँ। परन्तु भारत के सिद्ध-योगी पुरुष जो कुछ करते हैं उनके लिये यह सब कुछ नहीं है। हमलोग यूरोप के मनुष्य हैं, हम अत्यन्त क्षुद्र प्रकृति के हैं, अत्यन्त चंचल-चित्त के हैं, तत्त्वहीन हैं, हमें कीचड़-भिट्टी का यह जल इतना पसन्द है कि हमलोग अनन्त और असीम की बड़ी खिड़कियों को नहीं खोल सकते। परन्तु मैंने अपनी परीक्षा से कई-एक आश्चर्यजनक फल पाये हैं, उनको देखकर आप स्वयं विचार सकते हैं।

यह बात कहकर डाक्टर शेरवोनो ने एक बड़े दरवाजे पर टंगे हुए एक पर्दे को खसका दिया; परदा खसकते ही घर के पीछे छिपी हुई कोठरी दिखाई देने लगी। ताँबे की तिपाई के ऊपर सुरासार की अग्नि-शिखा जल रही थी, उसके प्रकाश में कौन्ट ओलाफ ने जो देखा वह बहुत भयंकर है, उसको देखकर कौन्ट जैसे साहसी पुरुष का भी सारा शरीर काँप उठा। एक काले मेज पर कमर तक नंगा एक पुरुष सोया हुआ है, वह मुर्दे की तरह निश्चल है, शर-शय्या पर सोये हुए भीष्म की तरह उसके शरीर में कई एक सलाहियाँ धँसी हैं; परन्तु उससे एक बूँद खून भी नहीं गिरता देखने से ऐसा जान पड़ता है, मानो यह किसी धर्मवीर-शहीद की मूर्ति है जिसके चोट लगे हुए स्थान पर चित्रकार लाल रंग लगाना भूल गया है।

ओलाफ ने मन ही मन सोचा—यह डाक्टर शिव का उपासक है—जान पड़ता है कि इस मनुष्य को शिवजी पर बलि चढ़ाने के अभिप्राय से रक्खा है।

“उसे कुछ भी तकलीफ नहीं हो रही है, उसके शरीर में चुटकी काटकर देखिए, उसके मुख पर जरा सी सिकुड़न भी न पड़ेगी”। यह बात कहकर डाक्टर ने उसके शरीर में धँसी हुई सलाहियाँ इस प्रकार खींच ली, मानों किसी ने आलपीन की गद्दी से आलपीन खींच ली हो। उसके ऊपर कई बार जल्दी जल्दी हाथ डुलाने के बाद उसके ओठ पर योगा-भग्न की मृदु-मधुर हँसी की एक रेखा दिखलाई पड़ी; मानो वह एक सुख स्वप्न से जाग उठा है। एक इशारे से डाक्टर शेरवोनो ने उसको छुट्टी दी। शिल्पकार्य से सुशोभित एक छिपी हुई कोठरी के काठ के चौखटवाले एक दरवाजे से वह निकल गया। डाक्टर ने मुस्कराते हुए मुख की बलि रेखाओं को सिकोड़ कर कहा—

“मैं उसका एक हाथ या पैर काट सकता था,—उसे मालूम भी न होता। मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मैं इस समय भी सृष्टि नहीं कर सकता। इस विषय में मनुष्य छिपकली से भी अधम है, मनुष्य का जीवन-रस ऐसा शक्तिमान नहीं है कि काटा हुआ अङ्ग फिर से पहिले के रूप में हो सके। यह ठीक है कि मैं सृष्टि नहीं कर सकता परन्तु नव-यौवन ला सकता हूँ।” यह कहकर उन्होंने एक वृद्धा रमणी का घूँघट उठा दिया; वह काले मार्बल के मेज के पास ही एक आराम कुर्सी पर गाढ़ी नींद में सो रही थी। उसके मुख को देखने से ऐसा जान पड़ता था कि वह किसी समय बहुत सुन्दर थी; इस समय शुष्क-म्लान हो गयी है, उसके हाथों, कन्धों और छाती पर समय का प्रभाव स्पष्ट प्रगट हो रहा है। डाक्टर अपनी नीली पुतलियों की तेज, स्थिर दृष्टि से टकटकी लगाकर उसकी ओर कई मिनट तक देखते रहे; क्षीण रेखाएं सीधी हो गयीं, कुमारी-सुलभ छाती की सुन्दर-गठन फिर लौट आई। गले की दुर्बलता फिर चमकते हुए साटिन की आभावाले माँस से भर गयी। गाल खूब गोल और सुन्दर हो गये, आड़ू के फल की तरह कुछ गोल और कोमल होकर यौवन के नवीन विकास से खिल गये, आँखें एक प्रकार के सजीव चंचल रस से भरकर चमकने लगीं। मानो जादू मंत्र से बुढ़ापे का बाहरी आवरण हट गया और बहुत दिनों से छिपी हुई सुन्दरी युवती फिर दिखलायी पड़ी। इस रूपान्तर को देखकर कौन्ट हतबुद्धि हो गये। डाक्टर ने उनसे कहा—

“क्या आप विश्वास करते हैं कि यौवन के भरने से निकली हुई जल-धारा के कुछ जल से यह रूपान्तर हुआ है? आपका ऐसा विश्वास निर्मूलक नहीं है, क्योंकि मनुष्य कुछ नया नहीं कर सकता; मनुष्य का प्रत्येक स्वप्न एक भविष्य-दर्शन या भूतकाल की एक स्मृति है—किन्तु मैंने अपनी इच्छा-

शक्ति से इस मूर्ति को पत्थर में परिवर्तित कर दिया था; इस समय थोड़ी देर के लिए इसे छोड़ दीजिये। इस कोने में जो लड़की शान्त भाव से सो रही है, अब उससे कुछ बातचीत की जाय। यह लड़की डेरूफ्री के पुगोहित से भी अधिक दूरदर्शी है। बोहेमियाँ देश में आपके जो सात बड़े-बड़े महल हैं, उनमें से किसी एक महल में आप इसे भेज सकते हैं; आपके दर्राज में जो सबसे गोपनीय वस्तु है, उससे पूछिये, वह आपको बतला देगी। उस स्थान पर उसके आत्मा को पहुँचने में एक सैकड़ से भी अधिक देर न लगेगी। जो कुछ हो, यह कार्य अत्यन्त आश्चर्यजनक है; क्योंकि यह फौरन एक ही बार में ७० मील लाँघ जाती है। वह आवश्यक नहीं है कि आप इससे अपना प्रश्न कहें। अगर प्रश्न सुनकर कुछ जवाब दिया तो बात ही क्या रही। आप केवल अपने मन में कोई प्रश्न कीजिए। प्रश्न कितना ही असाधारण हो। वह आपके मनोगत प्रश्न को स्वयं जान जायगी।”

कौन्ट ने मन ही मन जो प्रश्न किया, इस लड़की ने धीरे से उसका उत्तर दिया—

“सिडार की लकड़ी के सन्दूक के भीतर बहुत ही बारीक बालू के पाउडर के समान कुछ मिट्टी है, उसके ऊपर एक छोटे पैर की छाप दिख-लायी पड़ती”।

डॉक्टर ने बिना किसी प्रकार के संदेह के इस प्रकार कहा, मानो वे इस स्वप्नदर्शी लड़की की अभ्रान्तता के सम्बन्ध में ठूढ़ विश्वास रखते हैं।

“लड़की ठीक कहती है या नहीं?”

कौन्ट के गाल लाल हो गये। वास्तव में उनके प्रेम की पहिली प्रवस्था में, एक उपवन की बालुकामय पगडंडी पर तरुणी प्रास्कोभि के

पैर की जो छाप पड़ी थी कौन्ट ने बालुकामय मिट्टी सहित उस छाप को उठाकर सीप और चाँदी से जड़ित एक सन्दूक के भीतर स्मृति-चिन्ह रूप में यत्न के साथ रख दी थी। और उसकी बहुत ही छोटी चाभी एक पतली चेन में लगी उनके गले में भूल रही थी।

शिष्टाचार को भलीभाँति जाननेवाले डाक्टर शेरवोनो ने कौन्ट के लज्जा-संकोच को देखकर अधिक अनुरोध नहीं किया; उनको एक मेज के सामने ले गये, इस मेज के ऊपर हीरे की तरह स्वच्छ थोड़ा जल रक्खा हुआ था।

“जिस ऐन्द्रजालिक शीशे में मेफिष्टोफेलिस ने फोष्ट के हेलन की मूर्ति देखी थी; शायद आपने उस शीशे की बात सुनी होगी। यद्यपि मेफिष्टोफेलिस की तरह मेरे रेशमी मोजे में घोड़े का एक खुर और टोपी में मुर्गी के दो पर नहीं हैं, परन्तु मैं एक आश्चर्यजनक कार्य दिखला कर आपको प्रसन्न कर सकता हूँ। इस जल-पात्र पर आप झुक जाइए और जिस रमणी को आप यहाँ लाना चाहें एकान्त चित्त से उसका ध्यान कीजिये। जीवित हो या मृत, दूर हो या नजदीक—संसार के अन्तिम देश से, इतिहास के गहिरे रसातल से वह आपकी पुकार से यहाँ आकर उपस्थित हो जायगी।”

डाक्टर के कथनानुसार कौन्ट जल-पात्र के ऊपर झुक गये, थोड़ी देर बाद ही उनकी दृष्टि के प्रभाव से जल ने ओप्याल मणि का रंग धारण कर लिया; जल-पात्र का किनारा बिस्त्रौरी कलम से निकलने वाले विचित्र रंग की छटा से सुशोभित हो गया। वह मानो एक तसवीर

ॐ ओप्याल मणि (०) = सफेद मणि विशेष। राय कमलसेन ने इसका दूरा नाम गोदंतमणि लिखा है।

के फ्रेम की तरह हो गया। तसवीर पहिले खींची जा चुकी है, परन्तु वह सफेद बादल से ढकी है।

धोरे-धोरे कुहिरा मिट गया। स्वच्छ जल के ऊपर एक तरुणी की तसवीर दिखाई देने लगी। समुद्र के जल के समान हरे रंग की उसकी दोनों आँखें हैं, कुचित स्वर्णकुंडल हैं, गीयानो के पर्दे पर चंचल सुन्दर दोनों हाथ चल रहे हैं। तसवीर ऐसी चमत्कारयुक्त बनी थी, जिसे देखने से चतुर चित्रकार भी ईर्ष्या से मर जाता।

यही रानी प्रास्कोभि लाविन्स्का हैं; वह कौन्ट की आवेगमय पुकार को सुनकर आ उपस्थित हुई हैं डाक्टर ने कौन्ट ओलाफ का हाथ पकड़कर सम्मोहन जल-पात्र के एक पाये पर स्थापित कर दिया। वैद्युत चुम्बक शक्ति से भरे हुये इस धातु-खण्ड को छूने ही कौन्ट मानो बज्राहत होकर जमीन पर गिर गये।

डाक्टर ने उनको दोनों हाथों से जोर से पकड़ लिया और एक हल्की चीज़ की तरह उठाकर एक पलंग पर सुला दिया। इसके बाद घंटा बजा कर नौकर को बुलाया। नौकर दरवाजे के चौखट पर आकर खड़ा हो गया। डाक्टर ने उससे कहा—

“अक्टैम को यहाँ लिवा लाओ।”

(५)

जिस घर में अक्टैम रहता था, उसके निस्तब्ध आँगन में डाक्टर के मंत्र द्वारा पवित्र किये हुए जल-पात्र से उठा हुआ शब्द जोर से सुनाई दिया था, उसका सुनते ही उसी समय अक्टैम डाक्टर के सामने आकर उपस्थित हुआ। अक्टैम हतबुद्धि होकर खड़ा है;—ऐसे समय में डाक्टर ने उसे दिखलाया—कौन्ट ओलाफ हाथ पैर फैलाकर एक पलंग पर मरे हुए की तरह पड़े हैं। पहिले अक्टैम ने सोचा शायद किसी ने गुप्त रूप से

कौन्ट की हत्या की है—अक्टैभ कुछ क्षण के लिये भय से स्तम्भित हो गया। परन्तु फिर कुछ ध्यान से देखने पर उसे मालूम हुआ, इस निद्रित युवक की छाती अनुभव न कर सकने योग्य श्वास-प्रश्वास से एक बार उठती है और फिर बैठ जाती है। डाक्टर ने कहा—

“यह देखो तुम्हारा बनावटी वेष प्रायः तैयार हो गया है, इस बनावटी वेष का बनाना बहुत कठिन है। यह तुकान में उधार नहीं मिल सकता। परन्तु रोमिओ जब मेरोना के बारांडे के ऊपर चढ़ा था, उस समय गर्दन टूटने की सम्भावना होते हुए भी उसका चित्त उद्विग्न नहीं हुआ था। वह जानता था कि जुलियट रात्रि के घूँघट में छिपी हुई ऊपर के कमरे में उनकी प्रतीक्षा कर रही है। कौन्टस प्रास्कोभि का मुख्य उस लड़की से कम नहीं है।”

इस आश्चर्यजनक अवस्था को देखकर अक्टैभ का चित्त इतना विक्षुब्ध हुआ कि उसने कोई उत्तर नहीं दिया, वह क्रमशः कौन्ट को देखने लगा; कौन्ट का सिर पीछे हिलते हुए एक तकिये पर था। माथिक मठ के भीतर समाधि-स्थान के ऊपर जिन वीर पुरुषों की प्रतिमूर्ति देखी जाती है उसमें गर्दन के नीचे खोदाई का काम किया हुआ मार्वेल का एक तकिया रहता है—यह मानों ठीक उसी प्रकार का था। इस सुन्दर और महान मूर्ति के भीतरी आत्मा पर कौन्ट अधिकार जमाने जा रहा है—इस चिन्ता से उसके मन में एक दुःख उपस्थित हो गया।

अक्टैभ इस प्रकार सोच रहा था; किन्तु डाक्टर ने सोचा, जान पड़ता है अक्टैभ इस समय भी इधर उधर कर रहा है। डाक्टर की झोंठ की सिकुड़न पर अस्पष्ट अवज्ञा की एक हँसी आयी—उन्होंने अक्टैभ से कहा—

“यदि तुम अपने मन को दृढ़ न रखो, तो मैं कौन्ट को जाने दे

सकता हूँ। मेरी चौम्बक शक्ति देखकर जिस प्रकार वे आश्चर्यित होकर आये थे, उसी प्रकार वे लौट जायँगे। परन्तु तुम अच्छी तरह सोचकर देख लो, इस प्रकार का सुअवसर फिर कभी न मिलेगा। चाहे जो कुछ हो, तुम्हारी अवस्था देखकर मुझे एक गहरा दुःख हुआ है, एक परीक्षा करने की मेरी इच्छा हुई है—इस प्रकार की चेष्टा मैंने यूरोप में कभी नहीं की। मैं तुमसे यह बात नहीं छिपाना चाहता कि इस आत्मा के परिवर्तन-कार्य में एक बड़ी विपत्ति है। अपनी छाती पर हाथ धरकर अपने अन्तरात्मा से पूछो। तुम्हारे जीवन के पाँसे का जो सबसे बड़ा दाँव है उसको पाने के लिये क्या तुम मुक्त हृदय से अपने जीवन को संकट में डालने के लिये राजी हो? शास्त्र कहता है, “प्रेम मृत्यु की तरह ही बलवान है।”

अक्टैभ ने केवल इतना ही कहा—

“मैं तैयार हूँ।”

डाक्टर अपने दोनों सूखे हाथों को खूब जल्दी से रगड़कर बोले—

“अच्छा बाबा, अच्छा। किसी भी बाधा से पीछे पैर मत रखना, मैं तुम्हारे इस प्रेम के आवेग को देखकर सन्तुष्ट हो गया। इस संसार में केवल दो ही वस्तु हैं—आवेग और इच्छा शक्ति। गुरुदेव ब्रह्मलोगम्, आप तो अप्सरा-संगीत से गुञ्जित इन्द्र लोक से सब कुछ देख रहे हैं—अपने अस्थिमय देह को छोड़ते समय आपने मेरे कान में जिस महामन्त्र का उच्चारण किया था, क्या मैं उसको भूल गया हूँ? नहीं, वह मन्त्र, वे सब मुद्राभंगियाँ मुझे भली भाँति याद हैं। तब इस समय कार्य आरम्भ हो! इस बार हम लोगों की कड़ाही में एक अपूर्व भोजन चढ़ेगा—

“मेरे सामने तुम इस आराम कुर्सी पर बैठो। मेरी शक्ति में पूरा विश्वास स्थापित करके आत्म समर्पण करो। अच्छा! मेरी आँखों से

आँख मिलाओ, मेरे हाथ पर हाथ रखो। इस समय मंत्र का कार्य आरंभ हो गया है, चिन्ता तन्द्रा से ढक गयी है। जिन सूक्ष्मबन्धनों से आत्मा शरीर के साथ बँधा हुआ है, उन बन्धनों की गाँठें कट गयी हैं। दस हजार वर्ष पहिले जिस ब्रह्मा ने सोने के अण्डे में स्वप्न देखा था वह ब्रह्मा इस समय बाहरी संसार से अलग नहीं है। भाप के द्वारा उनको भिगाया जाय, किरणों के द्वारा उनको स्नान कराया जाय” ।

डाक्टर बीच बीच में रुक कर जब ये सब बातें कह रहे थे, उस समय भी उनके हाथ का झाड़ना क्षण भर के लिये भी नहीं बन्द हुआ। वे दोनों हाथ झाड़कर उनसे चमकती हुई किरणों की छटा उत्पन्न कर रहे थे— वह किरणों की छटा सम्मोहित व्यक्ति के सिर और छाती में जाकर लगती थी। क्रमशः उसके चारो तरफ़ किरण-मण्डल की तरह एक देखने योग्य फलफरस से मिला हुआ वायु-मण्डल तैयार हो गया।

अपने कार्य के लिये अपने को स्वयं वाह वाह कहके डाक्टर शेरवोनो बोल उठे—अच्छा; अच्छा, बहुत अच्छा ! इसके बाद थोड़ी देर तक रुक कर जब उन्होंने देखा कि व्यक्तित्व का ज्ञान लुप्त होने के पहिले, व्यक्तित्व का ज्ञान बनाये रखने के लिये अक्टेम के दिमाग में इस समय भी खूब चेष्टाएँ चल रही हैं, तब उन्होंने कहा, देखें, देखें, कौन हमारे मंत्र का प्रतिरोध कर सकता है। दिमाग के घुमाव के बीच में ताड़ित होकर न मालूम कौन विद्रोही मनोभाव आदिम परिमाण के ऊपर, जीवन के केन्द्र बिन्दु के ऊपर जमा होकर मेरे प्रभाव को बचाने की चेष्टा करता है। मैं उसको पकड़ सकूँगा, उस पर अधिकार जमा सकूँगा।

बिना इच्छा से उत्पन्न हुए इस विद्रोह का दमन करने के लिये डाक्टर ने अपनी दृष्टि रूपी म्यागनेटिक बैटरी में और भी अधिक शक्ति संचालित कर दी और उस विद्रोही चिन्ता को उपमस्तिष्क और मेरुदण्ड

की मज्जा इन दोनों के बीच उस स्थान पर ले आये—जो स्थान आत्मा का सब से गुप्त स्थान है, रहस्यमय देवनिकेतन है। उन्होंने पूर्ण रूप से जय प्राप्त की।

तब वे अत्यन्त गम्भीरता से एक अश्रुतपूर्व परीक्षा कार्य में लग गये। उन्होंने ऐन्दुजालिकों की तरह सन से बनी एक पोशाक पहिन ली, एक सुगन्धित जल से हाथ धोया, कई सन्दूकों से कुछ पाउडर लेकर गाल और माथे को चित्रित कर लिया, ब्राह्मणों का जनेऊ पहिना, गीता के दो तीन श्लोकों की आवृत्ति की, एलिफयान्टा के सन्यासी ने जिन छोटे-बड़े आचारों को करने की आज्ञा दी थी, उनमें से एक भी न छोड़ा।

इन सब अनुष्ठानों के खतम हो जाने पर उन्होंने गर्मी उत्पन्न करने वाले पात्रों के बड़े बड़े मुखों को खोल दिया; उनका बैठका फिर तेज गर्मी से गर्म हो गया। थर्मामेटर में १२० डिग्री गर्मी देखकर डाक्टर बोल उठे—“स्वर्गीय अग्नि की ये दो चिनगारियाँ जो इस समय देह रूपी पिंजड़े से नंगी होकर निकल आवेंगी; उन्हें हम लोगों के तुषार-शीतल वायु से ठंडा होने या बुझने न देना होगा।”

डाक्टर सफेद वस्त्र पहिन कर जड़ पिंड की तरह इन दोनों शरीरों के बीच में खड़े हैं। वे इस समय उन भयंकर रक्तपिपासु पुरोहितों की तरह दिखलायी पड़े थे जो देवी को नरबलि देते हैं, परन्तु उनके यज्ञ की क्रिया शान्ति रस के आश्रित है।

डाक्टर ने निश्चेष्ट निश्चल कौन्ट ओलाफ के पास धीरे धीरे जाकर अपने उसी महामंत्र का उच्चारण किया, इसके बाद गहरी नौद में सोये हुए अक्टैम के पास जाकर फिर जड़दी से उसी मंत्र की आवृत्ति की।

डाक्टर की जिस आकृति को सर्वसाधारण बहुत अद्भुत देखते थे वह इस समय अपूर्व महिमा से मण्डित हो गयी थी। इस रहस्यमय

अनुष्ठान के समय उनके मुख पर से सिकुड़न की रेखाएँ लुप्त हो गयी थीं, उस पर एक शान्त भाव आ गया था, पुरोहितोचित एक गम्भीरता दिखलायी पड़ी थी ।

इस समय कुछ आश्चर्यजनक व्यापार होने लगे । एक दुख की झकोर से कौन्ट और अक्टैम दोनों का शरीर एक ही समय में हिल उठा । उन लोगों का मुख विकृत हो गया, उनके मुखों से फेन उठने लगा, शरीर का चमड़ा मुद्दों की तरह पीला पड़ गया । परन्तु नीली आभा वाली दो छोटी चिनगारियाँ उनके मस्तकों पर चमचम चमकने लगीं—काँपने लगीं ।

आकाश में एक रेखा-मार्ग दिखलाने के भाव से डाक्टर ने ज्योंही अपनी विद्युत-प्रवाह युक्त हाथ की अँगुलियों को चलाया, त्योंही फसफ-रम से भरे हुए दोनों बिन्दुओं ने चलना आरम्भ किया, और अपने अपने पीछे एक प्रकाश चिह्न रखकर अपने नये घरों में प्रवेश किया । अक्टैम के आत्मा ने कौन्ट लाविन्स्कि के शरीर पर अधिकार किया और कौन्ट के आत्मा ने अक्टैम के शरीर पर अधिकार किया । अवतार का कार्य पूरा हुआ ।

गाल पर की ललाई से मालूम हुआ कि ये दोनों मृणमय मनुष्य-गुड़ कई सेकेण्ड तक आत्माहीन हो गये थे । और डाक्टर की विद्युत शक्ति के न रहने पर उन्हें यमराज ने अपने कब्जे में कर लिया था । अब इन दोनों मिट्टी के पुतलों में जीवनशक्ति ने फिर प्रवेश किया ।

आनन्द के उल्लास से डाक्टर शेरवोनो की आँखों की पुतलियों से बिजली निकलने लगी, वे घर में जल्दी जल्दी चलते हुए सोचने लगे, धम्बन्तरि आदि जिन चिकित्सकों का खूब नाम है, बिगड़े हुए मनुष्य शरीर को मरम्मत करने का जिन्हें खूब अभिमान है,—मैंने जो कुछ किया है वे उसे करें, देखें तो सही !

जब आत्मा हमारे वश में है, तब मरे हुए शरीर की भला में क्या परवाह करता हूँ ।

यह कहकर डाक्टर शेरवोनो ने जिस रंगीन पाउडर की रेखा से अपना मुख चित्रित किया था उसे धोकर ब्राह्मणों की पोशाक उतार दी, फिर अक्टैम की आत्मा-द्वारा अधिकृत कौन्ट के शरीर के सामने भाकर खड़े हो गये । इसके बाद सम्मोहन निद्रा की दशा से उद्धार पाने के लिये सम्मोहन-विद्या के उपदेश के अनुसार कौन्ट शरीर को हाथ से भाड़ने लगे,—उस प्रत्येक भाड़ से अंगुली के सिरों से बिजली छूटने लगी ।

इसके कई मिनट बाद अक्टैम लाविन्स्कि (अपने वर्णन को स्पष्ट करने के लिये अब से हम अक्टैम को अक्टैम लाविन्स्कि कहेंगे) उठ बैठे, आँखों पर हाथ फेरने लगे और चारों ओर आश्चर्य से भरी हुई दृष्टि से देखने लगे । इस समय भी उनका अपनापन लौट कर नहीं आया था । जब उनका बाहरी ज्ञान लौट आया तब सब से पहिले उन्होंने देखा कि उनका आत्मा हीन शरीर एक पलँग पर लेटा हुआ है । दर्पण के प्रतिबिम्ब के समान नहीं, प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है । अक्टैम लाविन्स्कि जोर से चिल्ला उठे ।

इस चिल्लाहट में उनके कंठस्वर की ध्वनि नहीं थी—इस शब्द से उनके मन में एक प्रकार के डर का संचार हुआ । भ्यागनेटिक निद्रा के वक्त इस आत्मा का विनिमय होने के कारण अक्टैम उसकी स्मृति नहीं रख सके । इसी से वे एक ऐसी बेचैनी अनुभव कर रहे थे जिसका उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया था । इस समय दूसरी नयी इन्द्री आकर उनके चित्तवृत्ति की सेवा में लग गयी है । किसी श्रमजीवी से उसके अभ्यस्त हथियारों को लेकर दूसरे को दे देने से उसकी जो दशा होती है यह कुछ

अंश में वैसा ही है। आत्मा रूपी पक्षी अपना स्थान छूट जाने पर एक अपरिचित मस्तिष्क की खोल में डैना फड़फड़ाते फड़फड़ाते मस्तिष्क के टेढ़े मेढ़े घुमाव के बीच में मानों कहीं रास्ता भूल गया है—उसी मस्तिष्क में अपरिचित धारणाओं के कुछ चिह्न इस समय भी रह गये हैं।

अक्टैम लाविन्स्कि के आश्चर्य को भली भाँति मालूम करके डाक्टर ने कहा—अच्छा, इस समय यह नया घर तुमको कैसा लगता है ? जिसके समान सुन्दरी इस भूमंडल में बहुत कम हैं, उसी सुन्दरी के पति बीर पुरुष कौन्ट के देह मंदिर में तुम आसन जमा कर बैठे हो ? तुम्हारे उस विपादमय घर में पहिले पहिल जब मैंने तुम्हें देखा था, उस समय तो तुमने मरने की इच्छा की थी। इस समय कौन्ट लाविन्स्कि के महल के सब दरवाजे तुम्हारे सामने खुले हैं; जब तुम रानी प्रोस्कोभि के पास अपना प्रेम प्रगट करने गये थे उस समय तुम लौटा दिये गये थे; इस समय वह डर भी तुम्हें नहीं है। जान पड़ता है कि तुम अब मृत्यु की इच्छा न करोगे। इस बन्दर के समान मुखवाले जिस बूढ़े बालयाजार शेरवानो को तुम देखते हो—इस समय तुम अच्छी तरह समझ रहे हो उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं है—वह फिर तुम्हारे आत्मा को दूसरे शरीर में प्रवेश करा सकता है—उसकी ओली में इस समय भी अनेक टोने टोटके की चीजें हैं।

अक्टैम लाविन्स्कि ने जवाब दिया—डाक्टर साहब, आपका शक्ति-सामर्थ्य देवताओं की तरह नहीं तो कम से कम दानवों की तरह तो अवश्य है। आपकी यह शक्ति दैवी या दानवी शक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकती।

—“नहीं बाबा, इसका डर मत करो; उसके भीतर भौतिक या राक्षसी कुछ भी व्यापार नहीं है। तुम्हारे मुक्ति-मार्ग में कोई विघ्न

न होगा, तुमसे प्रतिज्ञा करके मैं उस प्रतिज्ञा-पत्र पर लाल स्याही से हस्ताक्षर करने को नहीं कहता : यह सब जो हुआ, उससे सरल और कोई चीज़ नहीं हो सकती। जिस शब्द ब्रह्म ने प्रकाश को पैदा किया है वह किसी आत्मा को भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर कर सकता है उसमें आश्चर्य ही क्या है ?”

“आपके इस अमूल्य उपकार के लिए क्या कहकर मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रगट करूँगा ? इसका क्या बदला दूँगा ? क्या देकर इससे उन्नत हूँगा ।”

—“तुम जरा भी मेरे ऋणी नहीं हो, तुम्हारे ऊपर मेरा एक खिचाव हुआ था। संसाराग्नि में जले हुए, धूप में तपे हुए, मुक्त बुद्धे के लिये चित्त-सम्भ्रम की चीज़ें बहुत ही कम हैं। तुमने अपने प्रेम की बात मुझसे कही है। हम लोगों में कोई रासायनिक, कोई ऐन्द्रजालिक, कोई दार्शनिक है—किसी न किसी रूप में सभी स्वप्नदर्शी हैं; हम सभी ने थोड़ा बहुत परिपूर्ण असीम की खोज की है। जो कुछ हो, तुम इस समय उठो, घूमो फिरो, सफ़र करो; देखो, तुम्हारे नये शरीर के कारण इस बाहरी आवरण में कुछ बाधा होती है या नहीं ।”

डाक्टर के उपदेशानुसार अक्टैभ लाविन्स्कि घर में दो चार बार इधर उधर टहला। इस समय उस प्रकार की व्यथा मन में नहीं होती, शरीर में दूसरे आत्मा के वास करने पर भी, पहिले के अभ्यासों का एक झोंक, एक वेग कौन्ट के शरीर में उस समय भी बाकी था। नये आगन्तुक अक्टैभ लाविन्स्कि ने भी इन सब दैहिक स्मृतियों के ऊपर विश्वास स्थापित किया; क्योंकि अधिकारव्युत पहिले शरीर के स्वामी की चाल-चलन, भाव-भंगी सभी नव आगन्तुक को इस समय ग्रहण करनी होगी।

डाक्टर ने कुछ हँसकर कहा—मैं यदि तुम लोगों की आत्मा के परिवर्तन करने की क्रिया में स्वयं न लगता, तो मुझे विश्वास होता, आज रात्रि में जो कुछ हुआ है सब सामान्य घटना है, और तुम्हीं वैध और प्रामाणिक लुथानिया के कौन्ट ओलाफ लाविन्स्कि हो। इस समय वास्तविक कौन्ट का आत्मा तो तुम्हारे त्याग किये हुए शरीर के खोल में निद्रित है। किन्तु अब रात के दूसरे पहर का घंटा बजेगा। इस समय तुम रानी के पास जाओ। तारा खेलने के कारण देरी से घर आया कहने से वे तुम्हारी भर्त्सना न करेंगी। भगड़ा करके विवाह-जीवन का आरम्भ करना उचित नहीं है। यह एक बुरा लक्षण है। सब तक मैं खूब सावधानी से तुम्हारे पुगने शरीर को फिर जगाने की चेष्टा करूँगा।

डाक्टर के उपाय को युक्तियुक्त समझ कर अक्टैभ-लाविन्स्कि जल्दी घर से बाहर हुआ। सोढ़ी के नीचे कौन्ट की सुसज्जित लाल घोड़ों की जोड़ी अधीरता से खुरों-द्वारा मिट्टी खोद रही थी, मुख के लगाम के लोहे को चबा रही थी और उनके मुख से निकले हुए फेन से सामने का पत्थर जड़ा हुआ स्थान भर गया था। इस युवक के पैरों का शब्द सुनते ही चमकदार उर्दों पहिने हुए एक सईस गाड़ी की पैरदानी के पास दौड़कर आया और पैरदानी को झट से झुका दिया।

अक्टैभ अपने पहिले के अभ्यास के अनुसार यंत्र की तरह अपनी ब्रुहाम गाड़ी की ओर बढ़ा; उसके बाद इस ऊँची शानदार चैरियाट गाड़ी पर बैठ कर सईस से गाड़ी ले चलने का स्थान बता दिया। सईस ने कोचवान से कहा—“होटल चलो”। गाड़ी का दरवाजा बन्द करते ही दोनों घोड़े गर्दन टेढ़ी करके जोर से छूट पड़े। पहुँचते देर न लगी। मानों घोड़ों की तेज चाल ने रास्ते की दूरता को खा लिया। महल के पास पहुँच कर कोचवान ने जोर से कहा—“फाटक खोलो” ?

दरवान ने आकर फाटक के बड़े बड़े दरवाजे ठेलकर गाड़ी घुमाने का रास्ता कर दिया। गाड़ी एक बालूमय बड़े आँगान में सफेद गुलाबी रंग के चारखानेदार एक चँदोवे के ठीक नीचे आकर खड़ी हो गयी।

अक्टैभ लाविन्स्कि ने एक नजर से स्थान को देख लिया। आँगन बहुत बड़ा है, उसके चारों ओर एक ही प्रकार की सुन्दर इमारतें बनी हैं, शीशे की दीवारगीरों के बीच स्थित ताँबे के दीवट पर रखे दीपक से प्रकाश बिखर कर चारों दिशाओं को प्रकाशित कर रही है। उस समय के भाड़ फानूस जिस प्रकार के हैं उनको देखने से यह मकान होटल की अपेक्षा महल से अधिक मिलता है। बरामदे में कुछ नारंगी के गमले यासफ्यास्ट के किनारे के ऊपर कुछ दूर पर रखे हैं, बीच में बालूमय भूमि है। यह यासफ्यास्ट का किनारा गलीचे के किनारे की तरह बीच में स्थित बालू की जमीन को घेरे हुए है।

यह बेचारा रूपान्तरित प्रेमी दरवाजे के चौखट पर पैर रखते ही भयभीत होकर खड़ा हो गया, उसकी छाती धड़कने लगी। उसका शरीर कौन्ट ओलाफ लाविन्स्कि का शरीर होने पर भी, वह बाहरी शरीर मात्र ही है। दिमाग में जो संस्कार और धारणाएँ थीं वे मालिक के आत्मा के साथ ही साथ भाग गयी थीं, इस समय से जो अक्टैभ लाविन्स्कि का मकान हुआ उससे वह एकदम अपरिचित है; वह उसके प्रबन्ध के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानता। उसने अपने सामने एक सीढ़ी देखी, वह सिर ठोकर उसी सीढ़ी पर चढ़ने लगा। स्वच्छ चिकने पत्थरों की सीढ़ियों से शुभ्रच्छटा निकल रही है; और उन्हीं सीढ़ियों के ऊपर लाल रंग के गलीचे की एक पट्टी ताँबे की अगूँठियों से अट-कायी हुई हैं; हर एक सीढ़ी पर रखी हुई फूलदानी में सुन्दर सुन्दर विदेशी फूल शोभा पा रहे हैं।

एक बड़ा लालटेन मोटी बैंगनी रेशमी डोरी में झूल रहा है। यह रस्सी झालर से विभूषित है। घर की दीवार मार्बल की तरह पालिश की हुई सफेद सीमेन्ट द्वारा सुन्दर बनी हुई है। दीवार पर कानोभा रचित “आत्मा में प्रेम का चुम्बन” इस तस्वीर का एक नकली चित्र झूल रहा है। ऊपर लालटेन से निकली हुई प्रकाश छटा पड़ी है। सीढ़ी का ऊपरी भाग मोजैयिक आर्ट के शिल्प के कार्य से सुशोभित है; सीढ़ी की दीवार पर चार विख्यात चित्रकारों के चित्र रेशमी डोरी में झूल रहे हैं। चित्रों ने शानदार सीढ़ी के साथ मिलकर उसकी शोभा को और भी बढ़ा दिया है। सीढ़ी के ऊपर सोने की कील से जड़ा हुआ एक ऊनी कपड़े का दरवाजा है। इस दरवाजे को ठेलते ही अकटैभ लाविन्स्कि एक बड़े कोठे पर पहुँच गया। उस कोठे पर शानदार कपड़ा पहिने हुए कई नौकर सो रहे थे। जिस प्रकार मशीन का पेंच दबाते ही एकाएक वह धड़ाधड़ चलने लगती है इसी प्रकार अकटैभ के वहाँ आने मात्र से ही वे सब नौकर पूर्व देशीय गुलामों की तरह दीवार के किनारे खड़े हो गये।

अकटैभ आगे बढ़ा। इस कोठे के बगल में ही सफेद और सुनहरे रंग का एक बैठक है। इस बैठक में कोई भी न था। अकटैभ के घंटा बजाते ही एक औरत आकर उपस्थित हो गयी।

“क्या गृह स्वामिनी का दर्शन पाया जा सकता है?”

“रानी इस समय कपड़ा बदल रही हैं; थोड़ी ही देर में दिखायी देंगी”।

(६)

इस समय अक्टैम के शरीर में ओलाफ लाविन्स्कि का आत्मा वास करता है; उसके साथ अकेले बालथाजार शेरवोनो हैं। अब उस जड़-पिण्ड शरीर को डाक्टर फिर सचेत करने का प्रयत्न करने लगे। अक्टैम देहधारी ओलाफ निश्चेष्ट और जड़ होकर पलंग के एक कोने में पड़े थे, कई झाड़ू देने पर ओलाफ अक्टैम (एक दूसरे के शरीर का आपस में परिवर्तन होने के कारण इस प्रकार नामकरण करना पड़ा) नरकस्थ प्रेतच्छाया की तरह अपनी गाढ़ी नींद से, या मृगीरोग के मूर्च्छा-माह से यंत्र की तरह उठकर खड़े हो गये; किन्तु इस समय भी इच्छाशक्ति-द्वारा उनकी चाल नियन्त्रित न थी, इस समय भी उनके सिर का दर्द पूर्ण रूप से नहीं मिटा था, इस समय भी पैर थरा रहा था। अपने चारों ओर की सब चीजों में वे मानों एक चंचलता पा रहे थे, मानो दीवार के किनारे किनारे विष्णु इत्यादि अवतारों का ताण्डव नृत्य हो रहा था। डाक्टर शेरवोनो ने उस एलिफान्टा के सन्यासी का वेष धारण किया है, चिड़िया के डैने के फटकार की तरह दोनों हाथ झाड़ू रहे हैं। चश्मे के फ्रेम की तरह साँवली बलि-रेखा युक्त नेत्र-मण्डल में स्थित नीले रंग की दोनों पुतलियाँ घूम रही हैं। डाक्टर की सम्मोहन क्रिया से पूर्णचेतना लुप्त होने के पहिले ओलाफ ने वे सब जो अपूर्व दृश्य देखे थे वे सब फिर उनकी बुद्धि वृत्ति के ऊपर काम करने लगे, क्रमशः धीरे धीरे सब वास्तविक पदार्थ उन्हें मिल गये। भयंकर दुःस्वप्न देखकर जागने वाले मनुष्य को जैसा भ्रम होता है वैसे ही ओलाफ अक्टैम को असबाबों के ऊपर बिखरे हुए कपड़ों से प्रेम की उपछाया, और दीपक के प्रकाश से चमकती हुई पर्दों में की ताँबे की आँगुठियों से राक्षसों की चमकती हुई आँखों का भ्रम होने लगा।

क्रमशः इस आमक दृश्य का लोप हो गया। फिर सब ने स्वाभाविक आकार धारण कर लिया। डाक्टर शेरवोनो इस समय भारतवर्ष के तपस्वी सन्ध्यासी नहीं हैं, वे इस समय चिकित्सक डाक्टर मात्र हैं; वे साधारण सभ्यता की हँसी मुखर लाकर ओलाफ को सम्बोधित करके बोले। महाशय कौन्ट, मैं आप के सामने जिन परीक्षाओं को देखकर धन्य हुआ हूँ, क्या आप उन परीक्षाओं को देखकर सन्तुष्ट हुए हैं। इस अत्यन्त कोमल बात में एक ताने की बात न थी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसके बाद वे फिर कहने लगे—मैं आशा करता हूँ कि आप हमारे सायंकालीन बैठक में उपस्थित होने का दुख न प्रकाश करेंगे। और जान पड़ता है कि आप में इस समय दृढ़ विश्वास उत्पन्न हो गया है कि भौतिक विज्ञान जिसको गप्प और बाजीगरों का खेलवाड़ समझ कर उड़ा देता है, उस सम्मोहन क्रिया की सब बातें बाजीगरों के हाथ की चालाकी नहीं हैं।” डाक्टर की बातों में हाँ में हाँ मिलाने के भाव से अक्टैन देहधारी ओलाफ ने सिर हिलाकर इशारे से जवाब दिया, और डाक्टर शेरवोनो के साथ घर से बाहर निकल पड़े। डाक्टर हरएक दरवाजे के पास आकर खूब सिर झुकाकर कौन्ट को नमस्कार करने लगे।

मुहाम गाड़ी आगे बढ़कर बिल्कुल सोढ़ी से लग कर खड़ी हो गयी। कौन्टस लाविन्स्कि के पति अक्टैन देहधारी ओलाफ सईस, कोचवान की उर्दी, पोशाक या गाड़ी की बनावटपर बिना ध्यान दिये ही उसमें बैठ गये।

कोचवान ने पूछा—कहाँ जायँगे? नीली पोशाक पहिने हुए उनका कोचवान साधारणतः जिस स्वर में उनसे पूछता था वह स्वर न सुनाई देने के कारण उनको कुछ गड़बड़ी मालूम हुई और उन्होंने आश्चर्यित होकर कहा:—

“अपने घर, और कहाँ ?”

उन्होंने ब्रह्म गाड़ी पर बैठकर देखा, गाड़ी गाढ़े नीले रंग के फूल से कढ़े हुए ऊनी कपड़े से सुशोभित है; उसमें साटिन से मढ़े हुए बटन लगे हैं। यह सब भेद होते हुए भी उन्होंने उसको अपनी गाड़ी मान लिया। जिस प्रकार स्वप्न में साधारणतया दिखलाई पड़ने वाली चीज-दूसरे आकार में दिखलाई देने पर भी वही चीज मालूम होती है, यह भी कुछ अंश में उसी प्रकार है। उनके मन में यह भी आया कि वे वास्तव में जितने लम्बे हैं, उससे कुछ नाटे हो गये हैं, इसके अतिरिक्त उन्हें याद आया कि वे डाक्टर के घर कोट पहिन कर गये थे। उन्होंने देखा वे एक पतले कपड़े का ढोला ढाला कुर्ता पहिन हैं; यह पोशाक तो उनके कपड़े की आलमारी से कभी बाहर नहीं निकाली गई। वे एक अभूतपूर्व संकोच अनुभव करने लगे। सबेरे उनकी विचार शक्ति एकदम स्वच्छ थी, इस समय वह मानो एक कुहिर से ढक गयी है। उस सायंकालीन बैठक के पूर्व अद्भुत दृश्यों पर नजर डालकर उन्होंने इस विषय को सोचने में अपना चित्त नहीं लगाया। गाड़ी के एक कोने में सिर रखकर एक रूखे चिन्ता के प्रवाह में न जागते हुए ही न सोते ही हुए उन्होंने इस प्रकार की एक तन्द्रावस्था में अपने को छोड़ दिया।

घोड़ा एक जगह आकर रुक गया और कोचवान जोर से “फाटक” खोलो”, बोल कर चिल्ला उठा। उन्होंने स्वर्य उठकर शीशे की खिड़की को मुकाकर गाड़ी की खिड़की के बाहर सिर निकाला, और रास्ते के गैस के प्रकाश में देखा, यह एक अपरिचित रास्ता है, घर भी उनका नहीं है। वे बोल उठे—

“मुझको कहाँ ले आए ? क्या यह लाविन्सिक का होटल है ?”

“हज़ूर क्षमा कीजिएगा, मैं यह नहीं समझ सका था” कोचवान ने

यह बात मिनमिनाते हुए कहकर बतलाए हुए स्थान की ओर दोनों घोड़ों को घुमा दिया ।

रास्ते में रूपान्तरित कौन्ट ने मन ही मन अनेक प्रश्न किये, परन्तु वे उसका उत्तर न दे सके । मुझे बिना लिए हुए मेरी गाड़ी क्यों चली गयी ? मैंने तो अपने लिये प्रतीक्षा करने की आज्ञा दी थी । दूसरे मनुष्य की गाड़ी में मैं क्यों दौड़ा ? उन्होंने अनुमान किया कि शायद कुछ उवरांश होने के कारण उनका दिमाग कुछ बिगड़ गया है, मन के डाक्टर बालथाजार शेरवोनो ने उनकी विश्वास-प्रबलता और भी बढ़ाने के लिये, निद्रित अवस्था में “हशिश” या उसी प्रकार की और कोई मादक चीज़ खिला दी है । एक रात आराम करने से ही ये सब भ्रम अवश्य दूर हो जायेंगे ।

गाड़ी लाविन्स्क के होटल के पाम आ पहुँची ।

दरबान से फाटक खोलने के लिये कहा गया तो उसने फाटक खोलना अस्वीकृत करके कहा—“आज रात में लोगों से मिलना न होगा, क्योंकि दो ही एक घंटा हुआ, सरकार घर में आये हैं—और रानी आराम करने के लिये अपने महल में चली गयी है ।”

जिस प्रकार अरब देश की कहानी में भ्रमण करने वाले अश्वारोही पुरुषों को जादू किये हुए राजमहल में घूमने से मना करने के लिये बड़ी बड़ी ताँवे की मूर्तियाँ द्वार पर पहरा देती हैं; उसी प्रकार जो दरबान खूब शान के साथ आधे खुले हुए फाटक के सामने खड़ा था, अक्टैभ देहधारी ओलाफ़ ने उसे धक्का देकर कहा:—

“अरे तू मतवाला है या पागल ?”

यह बात सुनकर दरबान का लाल लाल मुख क्रोध से नीला हो गया; उसने जवाब दिया—

“महाशय, आप ही मतवाले या पागल हैं।”

अकटैभ देहधारी ओलाफ का मुख लाल हो गया, उन्होंने कहा, “अभागो, यदि मुझको अपनी मर्यादा का ख्याल न रहता”.....

नाटक में अभिनय करनेवाले भीम को भीति विशालकाय दरवान ने अपना लम्बा हाथ बढ़ाकर कहा:—

“चुप रह, नहीं तो अपने इस घुटने के नीचे तेरा मिर ज़ूर ज़ूर करके रास्ते पर फेंक दूँगा। बचा हमारे साथ चालाकी! तुमने दो एक बोतल अधिक श्यामपेन (एक प्रकार की शराब) पी है, यह सब चालाकी हमारे साथ न चलेगी।”

इन बातों को न सह सकने के कारण अकटैभ देहधारी ओलाफ ने उसको ऐसा धक्का दिया कि वह उस धक्के से गाड़ी के नीचे जाकर गिर पड़ा। जो नौकर उस समय भी नहीं सोये थे वे गोलमाल सुनकर दौड़ आये।

“अभागो, पाती, नीच! मैंने तुम्हें जवाब दिया, मेरी इच्छा नहीं है कि तू आज रात को भी मेरे घर में रहे। दूर हो यहाँ से नहीं तो हरने कुत्ते की तरह तुम्हें अभी मार डालूँगा। एक नीच नौकर के खून से मेरे हाथ को कलंकित करने के लिए बाध्य न करना।

इसके बाद अपने शरीर से बेदखल हुए कौण्ट इस मोटे शरीरवाले दरवान की ओर बढ़े। उनकी दोनों आँखें क्रोध से बड़ी बड़ी हो गयी थीं, अँठ पर फेन आ गया था, हाथ की मुट्ठियाँ बैँधी हुई थीं। दरवान ने उनके हाथों को अपने एक हाथ से पकड़ कर मध्ययुग में तकलीफ देने-वाली सँझसी की तरह उनकी गाँठदार छोटी मोटी अँगुलियों को बीच में दबा कर पीस डालने की चेष्टा की थी। यह विशाल शरीरवाला आदमी वास्तव में अच्छा आदमी था उसमें कोई द्वेष बुद्धि न थी, उसने

आगन्तुक को केवल कुछ शिक्षा देने के लिये ही दो चार बार जोर से अँगुलियों को दबाया । इसके बाद उसने आगन्तुक को सम्बोधन कर के कहा—

“देखो, ज़रा शान्त हो, भद्र मनुष्यों की तरह तुम्हारे कपड़े हैं, रात में एक भद्र मनुष्य के घर पर आकर गड़बड़ करना क्या बुद्धिमानों का काम है ? मैंने अच्छी तरह देखा है, आपने नशे के झोंक में यह काम किया है, न मालूम किसने तुमको शराब पिलाकर मतवाला बना दिया है । इसी लिये मैं तुम्हारे साथ मारपीट न करूँगा । तुमको केवल धीरे से रास्ते पर पहुँचा कर लौट आऊँगा । यदि आप वहाँ पर भी गड़बड़ करेंगे तो पहरावाला गश्त लगाते समय आपको पकड़ ले जायगा, आओ तुमको बेताला सुनावें । बेताला की एक गत सुनने से तुम्हारा दिमाग ठंडा हो जायगा ।

अश्वटैभ देहधारी ओलाफ ने इकट्ठे हुए नौकरों को सम्बोधित करके कहा—

“यह एक निलंज, बेहया, नीच झूठी बातें कहकर तुम्हारे मालिक लाविन्स्कि के कौन्ट महोदय का अपमान करता है—और तुम लोग अपनी आँखों से देखते हुए भी कुछ नहीं बोलते हो ।”

यह नाम उच्चारण करते ही सब के सब नौकर ठहाका मार कर जोर से हँस पड़े । वे कहने लगे—“देखो भाई, यह आदमी अपने को कौन्ट ओलाफ लाविन्स्कि कहता है ! हा ! हा ! हि ! हि ! अच्छा जो हो ?”

अश्वटैभ देहधारी ओलाफ का माथा और गला ठंडे पसीने से भीग गया । मानों छुरे की धार के समान यह पैनी बात उनके हृदय में घँस गयी । हमारा दरबान क्या सचमुच मेरी छाती पर घुटना टेककर बैठा था ? उस समय का मेरा वह जीवन क्या वास्तविक जीवन

है ? क्या मेरी बुद्धि चुम्बक की आकर्षण क्रिया से एकदम गल गयी थी ? या किसी ने भयंकर षड्यंत्र करके इस प्रकार मुझे परेशान किया है ? ये सब नौकर जो मेरे सामने थरथर काँपते थे, मेरे पैरों पर गिरकर रहते थे, क्या वे मुझको चीन्ह ही न सके ? क्या जिस प्रकार मेरा कपड़ा बदल दिया है, गाड़ी बदल दी है, उसी प्रकार मेरा शरीर भी बदल दिया है । इन नौकरों में जो सब से ढीठ था वह बोला—

“देखो इस बार तुम ठीक ठीक जान जाओगे कि तुम कौन्ट लाविन्सिक नहीं हो । देखो, तुमने जिस भयानक अपमान की बात कही थी उसको सुनकर स्वर्ग कौन्ट महाशय सीढ़ी से उतरे आते हैं ।”

दरबान के बन्दी ने आँगन के आखिरी भाग की ओर नज़र फेरकर देखा । पास में ही गड़े हुए तम्बू के एक बड़े चँदोवे के नीचे एक युवक खड़ा है । सुन्दर दुबला पतला गढ़ा हुआ शरीर है, अंडाकार मुख है, काली काली आँखें हैं, तोते के समान नाक और पतली मूँछें हैं । यह तो मैं ही हूँ मुझको छोड़कर और कोई नहीं; या समानता का भ्रम उत्पन्न करने के लिये कोई शैतान अपनी प्रेतच्छाया मूर्ति को गढ़कर आ गया है ?

दरबान कैदी को मजबूत मुट्ठी में पकड़े हुए था । उसने मुट्ठी ढीली कर दी, नीचे दृष्टि करके हाथ बगल में लीधे लटकाये हुए चुपचाप निश्चित होकर मौक़र गण दीवार की ओर भक्ति भाव से इस प्रकार कतार लगाकर खड़े हो गये जैसे बादशाह के आने पर गुलाम गण खड़े हो जाते हैं । जो सम्मान वे वास्तविक कौन्ट को नहीं दिखाते थे वह सम्मान इन लोगों ने उनकी हपछाबा को दिखा लाया ।

यद्यपि रानी ग्रास्कोमि के पति खूब साहसी थे परन्तु अपनी दूसरी मूर्ति के आगमन से उनके मन में एक प्रकार के डर का संचार हुआ ।

अपने वंश की एक कहानी उन्हें याद आ गयी; इससे यह भय और

भी बढ़ गया। हर एक बार जब कि लाविन्स्कि वंश के किसी व्यक्ति को मृत्यु होती है उसके ठीक पहिले उसी के समान एक उपछाया आकर यह समाचार उसको पहिले ही से बता जाती है। बहुत दिनों से यूरोप के उत्तरीय भाग के लोगों में स्वप्न में भी दूसरी मूर्ति का देखना मृत्यु की पूर्व सूचना का सूचक समझा जाता है। अतएव काकेशस के यह निर्भीक योद्धा अपने बाहर अपनी छायामूर्ति देखकर एक अन्ध संस्कार मूलक दुर्लभ्य आतंक से डर गया। जिसने तोप से गोला निकलते समय तोप के मुख में हाथ डाल दिया था वह इस समय अपनी ही मूर्ति के सामने से डर कर पीछे हट गया।

कौन्ट लाविन्स्कि, ओलाफ देहधारी अक्टैभ अपने पुराने शरीर के सामने बढ़े। इस शरीर में कौन्ट का आत्मा कभी युद्ध कर रहा था, कभी क्रोध से जल रहा था, कभी डर से काँप रहा था। लाविन्स्कि अक्टैभ ने अक्टैभ लाविन्स्कि से उद्धत परन्तु भद्रतायुक्त स्वर में कहा—“महाशय, इन नौकरों के साथ व्यर्थ विवाद करके अपनी मानहानि न कीजिएगा। यदि आप कौन्ट लाविन्स्कि से मिलना चाहते हैं तो आपको जानना चाहिए कि वह दोपहर के दो बजे के पहिले आगन्तुकों से नहीं मिलते और कौन्टेस महोदया से मिलने का जिन्हें अधिकार है वे वृहस्पतिवार को उनसे मिलते हैं।”

प्रत्येक शब्द का गुस्त्व दिखलाने के लिये प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए इन बातों को धीरे धीरे कहकर नकली कौन्ट धीरे धीरे चले गये और उनके जाते ही दरवाजा बन्द हो गया! अक्टैभ ओलाफ मूर्छित हो गये। उन्हें उठाकर उनकी गाड़ी में पहुँचा दिया गया। जब उन्हें होश आया तब उन्होंने देखा कि वे एक ऐसी शय्या पर सोये हैं, जहाँ पर वे पहिले कभी नहीं सोये, वे एक ऐसे घर में हैं, जिस घर में

उन्होंने कभी प्रवेश किया है यह याद नहीं आता। उनकी नाक के पास ईथर की शीशी लगाई गयी। नौकर ने अस्टैम देहधारी ओलाफ को अपना मालिक समझकर उनसे पूछा—

“इस समय तो आपकी तबीयत अच्छी मालूम होती है।”

कौन्ट ने जवाब दिया—

“हाँ वह केवल एक क्षणिक दुर्बलता थी।”

“क्या मैं अब जा सकता हूँ ? या आपकी देखभाल करने के लिये आप के पास रहना होगा ?”

“नहीं मुझे अकेले रहने दो। परन्तु जाने के पहिले बड़े शीशे के पास की बत्तियों को जला दो।”

“परन्तु आप यह सोचते हैं या नहीं कि इतनी रोशनी से आप की निद्रा में बाधा होगी।”

“कुछ भी नहीं, इसके अतिरिक्त मुझे अभी नींद भी नहीं आ रही है।”

“मैं सोने न जाऊँगा। यदि आप को कुछ जरूरत हो तो घंटा बजाते ही मैं पहुँच जाऊँगा।”

नौकर कौन्ट के पीले रंग और विक्षिप्त मुखश्री को देखकर मन ही मन डर गया था।

नौकर बत्तियों को जलाकर चला गया, कौन्ट शीशे के नज़दीक आये और प्रकाश से प्रकाशित मोटे और साफ़ शीशे में जब उन्होंने देखा—एक तरुण कोमल उदासीन मुख है, सिर पर बहुत से काले बाल हैं, नीले रंग की आँख की पुतलियाँ हैं, रेशम की तरह मुलायम मूँछें हैं। तब विस्मित होकर बोल उठे, “यह क्या ? यह तो मेरा मुख नहीं है।” उन्होंने पहिले विश्वास करने की चेष्टा की। हो सकता है

किसी दुष्ट मनुष्य ने तौबे और सोप से जड़े हुए आहने के किनारे एक चेहरा लाकर रख दिया हो। उन्होंने पीछे हाथ लगाकर देखा कुछ भी नहीं मालूम हुआ, वहाँ पर कोई न था।

अपना हाथ दबा दबाकर देखा इनका हाथ बहुत पतला लम्बा और नसदार है और अनामिका अँगुली में एक बड़ी सोने की अँगूठी है। अँगूठी की मणि पर कुल-चिह्न खुदा है। अपने जेब में हाथ लगाकर उन्होंने एक छोटी पत्र-पेटिका पायी, उसके भीतर मिलने के कई कार्ड थे। पत्र के ऊपर यह नाम लिखा था—“अश्वटैम।”

लाविम्बिक के राज्यमहल में नौकरों का अट्टहास्य, उनकी द्वितीय मूर्ति का आविर्भाव, अपने आहने के भीतर अपनी मूर्ति के बदले दूसरे मनुष्य की मूर्ति का छाया-दर्शन ! यह सब बिगड़े हुए दिमाग का विभ्रम भी हो सकता है। किन्तु यह सब दूसरे की पोशाक, यह अँगूठी जिसको उन्होंने अँगुली से निकाल कर फेंक दिया है—इन सब सरयुक्त प्रत्यक्ष प्रमाणों का प्रतिवाद करना, इन सब गवाहियों के विरुद्ध कुछ कहना असम्भव है। उनकी अज्ञानावस्था में उनका पूरा रूपान्तर किया गया है, निश्चय ही कोई जादूगर सम्भवतः किसी राक्षस ने उनकी आकृति, उनकी कुल-मर्यादा; उनका नाम, उनका व्यक्तित्व हरण कर लिया है। केवल उनका आत्मा उनके पास रख गया है। और उस आत्मा के बाहर उसे प्रकट करने के लिये कोई उपाय नहीं रखा।

दूसरे रूप से भी उनकी अवस्था शोचनीय हो गयी है। इस समय वे जिस शरीर में बन्दी हो गये हैं वह शरीर धारण करके वे कभी लाविम्बिक कौन्ट होने का दवा नहीं कर सकते। सभी उनको प्रवचक—पागल—ठहरावेंगे।

वे इस समय एक झूठे आकार से ढके हैं—इस समय उनकी खी भी

उन्हें न पहिचान सकेगी—तब फिर उनकी शिनाख्त कौन करेगा ? वे किस प्रकार अपने वास्तविक रूप को प्रमाणित करेंगे ? तो भी अनेक घटनाएँ हैं, अनेक रहस्यमय छोटी-मोटी ऐसी बातें हैं, जो दूसरे को न मालूम होते हुए भी कौन्ट्रेस प्रास्कोभि के मन में बैठ सकती हैं। और अधिक सम्भव है कि वे उन सब बातों पर ख्याल करके अपने छद्मवेषी स्वामी को पहिचान जायँगी, किन्तु अकेले उनके विश्वास से क्या होगा ? सब लोगों के विश्वास के विरुद्ध क्या वे अपना विश्वास स्थिर रख सकेंगी ? सचमुच उनका अपनापन सम्पूर्ण रूप से बेदखल हो गया है।”

उनका यह रूपान्तरीकरण क्या केवल बाहरी आकार और मुखश्री का परिवर्तन मात्र ही है, या वास्तव में वे किसी दूसरे के शरीर में वास करते हैं ? यदि ऐसा हो तो उनका अपना शरीर कहाँ गया ? किसी जूबहे में पड़कर खाक हो गया ? या किसी साहसी चोर के अधिकार में आ गया ? लाविन्स्कि के महल में उन्होंने अपने समान जो दूसरी मूर्ति देखी थी वह प्रेतमूर्ति हो सकती है, कोई अलौकिक दर्शन हो सकता है; या कोई देहधारी आदमी भी हो सकता है ? कदाचित् डाक्टर ने मेरी आकृत को लेकर उसके भीतर अद्भुत निपुणता के साथ इस आदमी को स्थापित किया हो।

यह चिन्ता विचैले सर्प की तरह उन्हें काटने लगी, किन्तु यह झूठा कौन्ट लाविन्स्कि जिसको किसी राक्षस ने मेरे आकार में परिणत कर दिया है, वह खून का प्यासा हिंसक पशु जो इस समय मेरे घर में वास करता है, नौकरगण जिसके आज्ञा-पालक हो रहे हैं, हो सकता है इस समय उसने मेरे सोने के घर में प्रवेश किया हो, उसी घर में जहाँ किसी समय प्रवेश करने से मिलन की प्रथम रात्रि के समान ही मेरा हृदय एक अनिर्वचनीय आवेग से भर उठता था। हो सकता है इस

समय कौन्टेल प्रास्कोभि उस अभागे के घृणित कन्धे पर अपने स्वर्गीय लालिमा से रँगें मुख को झुकाये हुए हों और इस झूठे को, प्रवचक को, नारकीय को मुझे ही समझ कर विश्वास करती हों। यदि मैं इस समय दौड़कर अपने महल में जाऊँ, और जोर से कौन्टेल से कहूँ “वह तुम्हें छल रहा है; वह तुम्हारा हृदयेश्वर ओलाफ नहीं है? तुम बिना जाने हुए निर्दोष भाव से इस प्रकार एक नीच काम करने के लिये तैयार हो जिसे मेरा हताश हृदय चिरकाल तक—अनन्तकाल तक याद करेगा।”

कौन्ट का दिममा अस्मिम्य आवेग-तरंगों में हिलने लगा। कभी मन हो मन क्रोध करते हुए; कभी अपनी मुद्रियों में खुजलाहट का अनुभव करते हुए घर में हिंसक पशु की तरह वे चंचल भाव से टहलने लगे। उनके स्पष्ट ज्ञान के कारण उनमें उन्माद भरने लगा। वे जल्दी से अक्टैभ के स्नानगृह में गये, जलपात्र में जल भरकर उसमें अपना सिर डुबाया। जब जल में से अपना सिर उठाया तब बिल्कुल ठंडे पाले के समान जल से भोगे हुए उनके सिर से भाप का धुआँ उठ रहा था। उनका खून फिर ठंडा हो गया। उन्होंने मन ही मन सोचा जादूगरी और डाकिनी मंत्र तंत्रों के दिन तो चले गये हैं। केवल मृत्यु ही आत्मा को शरीर से अलग कर सकती है। पोलैंड के कौन्ट जो कि पेरिस में रहते हैं; रथचाइल्ड के यहाँ जिनका लाखों रुपया धन है, जो बड़े बड़े वंशों के साथ सम्बन्ध-सूत्र में बँधे हैं, जिनको उस सुन्दरी ने अपना पति चुना है जो प्रथम श्रेणी के राज-सम्मान से विभूषित हैं, क्या उनकी आँखों में कोई बाजीगर इस प्रकार धूँध भोंक सकता है? यह जरूर उसी बालथाजार शेरवोनो का काम है—उसने मुझे लेकर एक तमाशा किया है; किन्तु इससे उसकी कुहचि का ही परिचय पाया जाता है। इस समय इन सब बातों की व्याख्या केवल वही कर सकता है।

वे थककर, दुःखी होकर जहदी अवटैम की शय्या पर सो रहे । सोते ही गहरी नींद में डूब गये । यह सोचकर कि नींद टूट गई है उनका नौकर एक बार आकर उनकी चिट्ठियों और उनके समाचारपत्रों को मेज पर रख गया ।

(७)

कौन्ट आँखें खोलकर चारों ओर अपनी उत्सुक दृष्टि फेंकने लगे; देखा, सोने का घर बड़े आराम का है परन्तु खूब सीधा-सादा । चीते के चमड़े को अनुकरण करके तैयार किये हुए एक गलीचे से घर की जमीन ढकी हुई है; पर्दे से जंगला और दरवाजा ढका हुआ है; घर की दीवार कागज से मढ़ी हुई है जो कपड़े की तरह मालूम होती हैं । काले मार्बल से मढ़ी हुई एक घड़ी है, उसके ऊपर चाँदी की एक पुत्तलिका है । उसके संग चाँदी के पुराने प्याले हैं । 'ये सब चीजें सफेद मार्बल से बने हुए एक अग्नि-स्थान पर शोभित हैं । एक पुराना विनीशियन आइना जिसको पिछली रात कौन्ट ने ढूँढ़ निकाला था और एक बुढ़िया का चित्र—सम्भवतः अवटैम की माँ का चित्र—यही इस घर की सजावट की चीजें हैं; घर देखने में उदासीन और कठोर मालूम होता है । असबाबों में एक पल्लंग, अग्निस्थान के मजदीक रखी हुई एक आरामकुर्मी, पुस्तक और कागज-पत्रों से ढका हुआ एक दर्राजदार मेज है । ये सब सुखप्रद होने पर भी लाविन्सिक के महल के शानदार असबाबों के सामने कुछ भी नहीं है ।

नौकर ने मृदु स्वर से पूछा—

“हुज़ूर, क्या आप उठे हैं !” यह बात कहकर अपने मालिक के पहिने का सवेरे की पोशाक, एक रंगीन कमीज, फलालैन का एक पतलून और एक ठीला ढाला कुरता कौन्ट को लाकर दिया । दूसरे के कपड़े पहिने की एकदम इच्छा न होते हुए भी, विवश होकर उनको

यह कपड़ा पहिनना ही पड़ा; क्योंकि न पहिनने से जंगे होकर रहना पड़ता। बिछौने से उतरते समय उन्होंने एक काले भालू के चमड़े के पायन्दाज पर पैर रक्खा।

उनका पहिराव जल्दी ही हो गया। कौन्ट अक्टैभ है इसमें कुछ भी संदेह न करके नौकर ने कौन्ट के कपड़ा पहिनने में सहायता की। इसके बाद पूछा—महाशय, किस समय प्रातःकाल का भोजन करने की इच्छा है? कौन्ट ने जवाब दिया—‘रोज की तरह।’

अपना व्यक्तित्व फिर से पाने की चेष्टा में ऐसा न हो कि कोई बाधा आ जाय यह सोचकर उन्होंने अपने दैहिक परिवर्तन को वर्तमान समय के लिये मान लेने का संकल्प किया।

नौकर के चले जाने पर, अक्टैभ ओलाफ़ ने संवादपत्रादि के साथ जो चिट्ठियाँ आयी थीं, उन्हें खोला। उन्होंने आशा की थी, उसमें अपने रूपान्तर के सम्बन्ध में कुछ पता पावेंगे। पहिली चिट्ठी में प्रेम से भरा हुआ तिरस्कार है—लेखिका ने आक्षेप किया है, कि बिना कारण उससे सम्बन्ध क्यों तोड़ दिया गया? दूसरी चिट्ठी में अक्टैभ के वकील ने उनसे अनुरोध करके लिखा है कि भाड़ा के लिये उन्हें जो रुपया मिले, उसका चौथाई भाग किसी लाभजनक काम में लगाया जाय। कौन्ट ने दिल में सोचा—

अच्छा यह बात है ! तभी तो देखता हूँ कि जिसके शरीर में मैं वास करता हूँ, वह वास्तव में अक्टैभ नाम का एक आदमी है, वह काव्यनिक जीव नहीं है। उसके घर-बार है, धन-सम्पत्ति है, बन्धु-बान्धव हैं, वकील है, व्यापार में लगाने के लिये—एक सज्जन गृहस्थ के पास जो कुछ होना चाहिए सब है, किन्तु मुझे तो अच्छी तरह याद आता है—
“मैं कौन्ट ओलाफ़ लाविन्स्कि हूँ।”

परन्तु आइने में एक बार नज़र डालने से ही उनको दृढ़ विश्वास हुआ, उनके इस मत से कोई सहमत न होगा, कोई इसका समर्थन न करेगा। क्या उज्ज्वल दिन के प्रकाश में, क्या दीपक की मंद रोशनी में, इस आइने में तो एक ही मूर्ति प्रतिबिम्बित होती है।

कौन्ट घूमकर यह देखने लगे कि घर में कहाँ पर कौन चीज है। देखते देखते उन्होंने मेज का दराज खोला। एक दराज में देखा कि भूमस्पर्ति के कुछ दस्तावेज, दस हजार रुपये का कमानी का एक कागज़, और एक दूसरे दराज में रूसी चमड़े की बनी एक पत्र-पेटिका एक सांकेतिक ताले से बन्द है।

नौकर ने घर में आकर कहा—“थलफ़्रेड साहेब आये हुए हैं।” अक्टैभ का इनसे बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध था, अतएव यह नौकर के जवाब लाने की बिना प्रतीक्षा किये ही जूते का चर्र मर्र शब्द करते हुए बल्दी से भीतर घुस आये। आनेवाला पुरुष एक युवक है, मुख पर एक सरल स्फूर्ति का भाव है। युवक ने कौन्ट से कहा—

अक्टैभ, आज कल क्या करते हो? कहो तो सही? तुम्हें क्या हुआ? तुम बचे हो या मरे? तुम और कहीं भी नहीं दिखलायी पड़ते, तुम्हारे पास पत्र लिखने पर भी जवाब नहीं मिलता। देखो, मेरा अभिमान करना ही उचित है। किन्तु मैं मित्रता में मान-अभिमान का जरा भी खयाल नहीं करता। इसी से तो तुम्हें देखने आया हूँ। कहो तो सही! हम तुम एक कालेज के सहपाठी हैं, क्या मैं तुमको इस अँधेरे घर में उदासीन होकर मरने दूँगा? तुम पीड़ित हो—तुम्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता—भाई, यह सब तुम्हारी कल्पना है। तुम्हारा चित्त ठिकाने करने के लिये, तुम्हारा जी बहलाने के लिये, मैं तुमको जबरदस्ती एक भोज के निमन्त्रण में लिवा चूँगा। वहाँ आज खूब आमोद-प्रमोद होगा। हम लोगों के मित्र रोम्बो भी वहाँ आवेंगे।”

कुछ दुख प्रगट करते हुए सहासमुख से अक्टैम के मित्र ने कौन्ट अक्टैम से इस प्रकार बातें कहकर अंग्रेजों की तरह कौन्ट का हाथ पकड़कर एक झटका दिया। अपने जीवन-नाटक में जिस प्रकार का अभिनय करना होगा उसका मर्म समझकर कौन्ट ने जवाब दिया—

नहीं भाई आज रोज से मेरी पीड़ा बढ़ गई है। चित्त की अवस्था वहाँ जाने के अनुकूल नहीं है। मैं जाकर तुम लोगों को भी उदासीन बना दूँगा, तुम लोगों के आमोद-प्रमोद में बाधा होगी।

यालफ्रेड ने दरवाजे की ओर बढ़कर कहा—“वास्तव में तुम बहुत उदासीन दिखलाई पड़ते हो, मुख से एक भयानक क्लान्ति का भाव प्रगट होता है। अच्छा, तो कुछ अच्छे हो, फिर किसी दूसरे वक्त तुमसे मिलूँगा। अब मैं जाता हूँ, बहुत देर हो गयी है। इस समय तक शायद तीन दर्जन कच्चा आयस्टर* और एक बोतल शराब का ठिकाना लग चुका होगा। रोम्बो तुमको न देखकर बड़ा दुखी होगा।

इस आगन्तुक के आगमन से कौन्ट की उदासीनता और भी बढ़ गयी। नौकर ने उनको ही अपना मालिक समझ रखा है, यालफ्रेड ने उनको ही अपना मित्र सोचा है। इस समय केवल एक ही प्रमाण बाकी है, यही सबसे बड़ा प्रमाण है। द्वार खुला। एक महिला ने घर में प्रवेश किया। इसका सिर जरी के सूत से मिले हुए फीते से बँधा है, उसका रूप दीवाल पर लटके हुए चित्र से एक दम मिलता है। वह घर में आकर एक पल्लंग पर बैठ गयी और कौन्ट से बोली—

कैसा है रे अक्टैम ! नौकर कहता था, कल तू खूब देरी से घर आया है और भयानक दुर्बल अवस्था में है। बेटा अपने शरीर पर जरा

* आयस्टर (Oyster) = सीप। यूरोप में सीप का मांस रुचिकर समझा जाता है।

ध्यान दे, तू इतना उदासीन होकर क्यों रहता है ? मुझसे तो कुछ साफ साफ नहीं कहता, तुझको देखकर मेरी छाती फटी जाती है ।

अक्टैम ओलाफ ने जवाब दिया—

डर नहीं है माँ, मुझे अधिक कष्ट नहीं है, मैं आज बहुत कुछ अच्छा हूँ ।

इस बात से अक्टैम की माँ को प्रबोध हुआ । वह जानती थी कि उनका पुत्र अकेला रहना पसन्द करता है । यदि कोई उसके पास ज्यादा देर तक रहकर उसकी शान्ति में बाधा डालता है तो उसे अच्छा नहीं लगता इसी से वे जल्दी ही उठकर चली गयीं ।

वृद्धा के जाने पर कौन्ट बोल उठे, तब तो मैं जरूर ही अक्टैम हूँ क्योंकि अक्टैम की माँ मुझे पहिचान गयीं । इसका तो उन्हें ध्यान ही नहीं हुआ कि उनके पुत्र के शरीर में एक अपरिचित आत्मा वास करता है । शायद मुझे हमेशा के लिए इस आवरण में बंधा रहना पड़ेगा; दूसरे के शरीर में मेरा आत्मा बंधा है—आत्मा का यह कैसा विचित्र कारागार है ? लेकिन कौन्ट ओलाफ लाविन्स्कि अपने अस्तित्व, कुल-चिह्न की और ऐश्वर्य से हाथ धोकर एक मामूली गृहस्थ की अवस्था में परिणत हो जायँ, यह बड़ा ही कठिन है । जो चमड़ा इस समय मेरे शरीर में लगा है, उसे थोड़ा थोड़ा काटकर मैं उसके पूर्व अधिकारी को सौंप दूँगा । क्या मैं लौटकर अपने महल में चलों ? नहीं, ऐसा करने से व्यर्थ ही मेरी हँसी होगी, दरवान मुझे भक्का मारकर हटा देगा । मेरे शरीर में तो इस समय वह बल भी नहीं है । देखें, खोज करें, यह अक्टैम किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करता था, मुझे कुछ जानने की जरूरत है । यह सोचकर उन्होंने पोर्टफोलियो ☼ (पत्र-पेटिका) को खोलने की चेष्टा की ।

छूने ही एकाएक स्प्रिङ्ग खुल गया। कौन्ट ने पहिले उसके चमड़े के बेग से कागज़ निकाले। बहुत सटाकर छोटा छोटा लिखा होने के कारण वे काले हो गये हैं। इसके बाद उन्हें चौकोर चमड़े के कागज़ पर कौन्टेस् प्रास्कोभि लाविन्स्कि का एक पेंसिल से खिचा चित्र मिला, यद्यपि तसवीर किसी निपुण मनुष्य के हाथ नहीं खींची गयी है परन्तु वह उनसे एकदम मिलती है और देखते ही पहिचानी जाती है।

इसे देखकर कौन्ट एकदम हतबुद्धि हो गये। आश्चर्य के बाद एक भयंकर ईर्ष्या के आवेग से उनका सारा शरीर काँप उठा। कौन्टेस का चित्र किस प्रकार इस गुप्त पत्र-पेटिका में आया! कहाँ से आया? किसने खींचा? किसने इसे दिया? वह प्रास्कोभि जिनकी पूजा वह देवी की तरह करते हैं, क्या वह स्वर्ग से उतर कर इस नीच गुप्त-प्रेम में लिस होंगी। जिस रमणी को उन्होंने इतने दिन तक निष्कलंक समझ रक्खा था, क्या उसी रमणी के प्रेमी के शरीर में इम समय उनका स्वामी कैदी है? न जाने यह कैसी भयंकर बात है! पति होकर अन्त में क्या उनको फिर प्रेमी होना पड़ेगा? यह कैसा भीषण उलट फेर है! यह क्या हास्यजनक उलट पलट है! पति और प्रणयी एक ही समान?

ये सब बातें उनके दिमाग में घूमने लगीं। उन्हें मालूम हुआ मानी उनकी बुद्धि लोप होने का उपक्रम हुआ है, उन्होंने बलपूर्वक अपने को शान्त करने का उपाय किया। नौकर ने खबर दी “भोजन तैयार है।” वे इस बात को न सुनकर थरथर काँपते हुए गुप्त पत्र-पेटिका को अच्छी तरह देखने लगे।

इन पत्रों को एक प्रकार से मनस्तत्व की दैहिक लिपि कहा जा सकता है। वे भिन्न भिन्न समय में लिखे गये हैं। कभी लिखा गया है, कभी थोड़ा लिखकर बन्द कर दिया गया है। इसका कुछ अंश

नीचे दिया जाता है—कौन्ट मानो उद्देगपूर्ण आवेग के साथ इनको देखने लगे ।

“वह मुझसे कभी प्रेम न करेगी—कभी नहीं, कभी नहीं !”

“उसके आँख की दृष्टि कोमल है, परन्तु उस कोमल दृष्टि में मैंने वह निष्ठुर बात देखी है—जिससे कठोर बात दूसरी नहीं है । जिस बात को कवि दाँते ने अपने विषादपुर के फाटक के दरवाजे पर लिख रक्खा है,— ‘सब आशा छोड़ दो ’ । मैंने क्या किया है कि भगवान ने जीवित अवस्था में ही मुझे नरक का दंड दिया । कल परसों हमेशा इसी प्रकार व्यतीत होगा ! नक्षत्रगण एक दूसरे से लड़ सकते हैं, एक दूसरे से मिल कर पोटली बन सकते हैं । किन्तु मेरे भाग्य में कोई परिवर्तन न होगा ।”

“उसी रमणी ने मेरे विचारों पर पानी फेर दिया है, एक ही इशारे में मेरी कल्पना के डैनों को तोड़ दिया है । झूठ और असम्भव जितनी बातें हैं वे सब मिलकर भी मुझे सुयोग नहीं दे रही हैं । भाग्य-पाश के खेल में कितने ही लोगों के अच्छे अच्छे दाँव पड़े हैं, किन्तु मेरे भाग्य में तो एक बार भी अच्छा दाँव नहीं पड़ता ।”

“मैं अभागा हूँ, मैं भली भाँति जानता हूँ कि स्वर्ग के दरवाजे पर मैं मूर्ख की तरह बैठा हूँ, मैं आँसू बहा रहा हूँ—भरने की स्वाभाविक धारा की तरह आँखों से हमेशा आँसू बह रहा है । मुझमें वह साहस नहीं है कि मैं यहाँ से उठकर किसी गहरी गुफा में प्रवेश करूँ ।”

“कभी कभी जब रात में नींद नहीं आती तब मैं प्रास्कोमि का ध्यान करता हूँ, यदि नींद आ जाती है तो स्वप्न में भी प्रास्कोमि को ही देखता हूँ । अहा फलरेम्स नगर के उस बगीचेदार मकान में मैंने उन्हें कैसा सुन्दर देखा था । वह सफेद पोशाक, वे काले फीते, चित्तमोहकता और मृन्मुशोक दोनों के सूचक थे । सफेदी उनके कप, काला

(शोक का) रंग मेरे लिये । कभी कभी फीते वायु में हिलकर और एक साथ मिलकर उस सफेद जमीन के ऊपर कास की तरह बन जाते थे; मानो कोई अदृश्य आत्मा मेरे हृदय की मृत्यु के उपलक्ष में खूब धीरे धीरे मेरा अन्त्येष्टि मंत्र पढ़ता था ।”

“भाग्य का कैसा फेर है ! मैंने सोचा था कि हस्ताम्बुल में जाऊँगा यदि जाता तो उनसे भेंट न होती । मैं फ्लरेन्स में गया, उनको देखा और वह देखना ही मेरे लिये काल हुआ ।”

“मेरा मरना ही अच्छा है । परन्तु यदि जीते जी एक बार दिल खोल कर उनसे मिल पाऊँ । ओह ! यह कैसा अकथनीय आनन्द है । नहीं, नहीं, ऐसा होने से मैं नरक में जाऊँगा । यह भी आशा नहीं है कि परलोक में जाकर उनका प्रेम पाऊँगा । वहाँ मुझे अलग होकर रहना होगा । वे स्वर्ग में रहेंगी; मैं नरक में । यह बात याद आते ही एकदम विह्वल हो जाना पड़ता है ।”

“जो रमणी मुझसे प्रेम नहीं करती उसी रमणी से मुझे प्रेम करना होगा, यह कैसी बात ? इसके पहले कितनी सुन्दरियों ने अपने सुन्दर मुख की अत्यंत मधुर हँसी से मेरे मन को हरने की चेष्टा की है परन्तु तो भी उन पर मेरा हृदय नहीं भूला । और इस समय ? अहा ! वह कैसा भाग्यवान है जो अपने पूर्वजन्म के सुकर्मों के फल से इस निरुपम-ललना के प्रेम को पाकर धन्य हुआ है ।”

और अधिक पढ़ना अनावश्यक है । प्रास्कोभि का पेन्सिल से खिंचा हुआ चित्र देखकर कौन्ट के मन में पहिले जो सन्देह उत्पन्न हुआ था, वह इस गोपनीय बात की पहिली दो पंक्ति पढ़ने से ही दूर हो गया । उन्होंने समझा, प्रेमासक्त युवक उनका चित्र खींचकर प्रेम से निराश होकर धैर्य के साथ वास्तविक-वस्तु के अभाव में इस नकल को ही

अपनी प्रेमाब्जलि अर्पण करता था। इस छोटे से गुप्त देवालय में म्याडोनाॐ को स्थापित करके, घुटना टेककर निराश हृदय से उन्हीं को पूजा-अर्चना में लगा था।

क्या इस अक्टैम ने मेरा शरीर हरण करने के लिए और मेरा शरीर धारण करके प्रास्कोभि का प्रेम अपनी ओर खींचने के लिए कोई पैशा-चिक अनुष्ठान कराया है ?

किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में इस प्रकार का अनुमान अप्रमत्तव समझकर कौन्ट ने इस अनुमान को जल्दी मन से दूर कर दिया।

वे यह खयाल करके हुंसे कि हम इस प्रकार की अप्रमत्तव बात का विश्वास करने के लिए तैयार हुए हैं। उनका नौकर जो खाना रख गया था यद्यपि वह ठंडा हो गया था पर ओलाफ अक्टैम ने उसी को खाया। खाने के बाद कपड़ा पहना और गाड़ी लाने के लिए कहा। गाड़ी पर बैठ कर वह डाक्टर शेरवोनो के घर पर पहुँचे और घर में घुसकर उनी रास्ते से चलने लगे जिसमें कल रात को कौन्ट ओलाफ लाविन्सिक के नाम से प्रवेश किया था और जहाँ से लौटने पर सब ने अक्टैम नाम से ही उनसे बात चीत की थी। डाक्टर अपने नियम के अनुसार घर के आखिरी कमरे में बैठे थे। वे हाथ के बीच में पैरों को रखे मानों गहरी चिन्ता में डूबे थे।

कौन्ट के पैर की आहट पाकर डाक्टर ने सिर उठाया।

“आह ! अक्टैम, तुम हो ? मैं तुम्हारे ही पास जा रहा था, परन्तु रोगी स्वयं डाक्टर को देखने आया इसे शुभ लक्षण कहना चाहिये।”

कौन्ट ने कहा—

“अक्टैम, अक्टैम, अक्टैम—बराबर अक्टैम ही कहते हैं ! मुझे ऐसा क्रोध आता है—मालूम होता है मैं पागल हो जाऊंगा ।” इतना कह वह हाथ पर हाथ धरे हुए डाक्टर के सामने आकर खड़े हो गये और तेज़ नजर से टकटकी लगाकर उन्हें देखने लगे ।

“बालथाजार शेरवोनो, आप तो अच्छी तरह जानते हैं कि मैं अक्टैम नहीं हूँ । मैं ओलाफ लाविन्स्कि हूँ । आप ही ने तो कल रात को जादू-मंत्र द्वारा मेरे शरीर का हरण किया है ।”

यह बात सुन डाक्टर जोर से ठहाका मारकर हँस पड़े । हँसते हँसते तकिये पर लोट-पट हो गये और हँसी न रोक सकने के भाव से हाथ से कमर धाम ली ।

“डाक्टर साहब, अपने इस आनन्द के उच्छ्वास को कुछ कम कीजिये, नहीं तो पीछे शायद दुःख उठाना पड़े । मैं सत्य कहता हूँ हँसी नहीं करता ।”

“ऐसा होने से तो और खराब होगा । खराब होगा !! इससे साबित होता है कि मैंने तुम्हारी जो चेतन-शक्ति-हानता और अकारण उदासीनता की जो व्याख्या की थी वह ठीक नहीं है । और खुश नहीं इस समय केवल चिकित्सा बदलनी होगी ।”

कौन्ट, शेरवोनो की ओर बढ़ते हुए बोल उठे—“तुम्हारा गला घोट कर मैं तुम्हें इस समय क्यों नहीं मार डालता यही आश्चर्य हो रहा है ?”

कौन्ट के इस तरह डर दिखाने पर डाक्टर कुछ हँसे, इसके बाद, एक छोटी ईस्पात की छड़ी का सिरा कौन्ट को छुवाया,—कौन्ट के शरीर में एक भारी झोंका लगा, उन्हें ऐसा जान पड़ा मानो हाथ टूट गया ! डाक्टर ने ठंडे जल की तरह एक नजर कौन्ट के ऊपर डाली—इस दृष्टि से पागल वशीभूत हो जाते हैं, और सिंह एकदम पृथ्वी पर लोट जाता है । इस प्रकार दृष्टि डाल कर डाक्टर ने उनसे कहा—

“देखो, रोगी के न मानने पर उसे सीधा करने का उपाय भी हमारे हाथ में है। घर लौट जाओ, वहाँ जाकर स्नान करो—अधिक उत्तेजना से सिर गरम हो गया है,—ठंडा हो जायगा।”

कौन्ट बिजली की चोट से व्याकुल होकर घर से बाहर निकले। उनका संदेह और भी बढ़ता गया।

वे इस विषय में सलाह लेने के लिए डाक्टर B..... के घर पर गये और उस प्रसिद्ध डाक्टर से कहा—

“मेरे ऊपर एक विचित्र विभ्रम-विकार ने आक्रमण किया है, मैं जब शीशे में अपना मुख देखता हूँ, तब मैं उसके स्वाभाविक अवयवों को उसमें नहीं देख पाता। मैं जिन पदार्थों से घिरा रहता था वे पदार्थ बदल गये हैं। इस समय मैं अपने घर की दीवारों को भी नहीं पहचान पाता। मुझे मालूम होता है मानों मैं वह “मैं” नहीं हूँ—गोया मैं दूसरा आदमी हूँ।”

डाक्टर ने पूछा—“तुम अपने को कैसा जानते हो, कहो, सुनें तो सही? भ्रम आँख से भी उत्पन्न हो सकता है, और मस्तिष्क से भी।”

“मैं देखता हूँ, मेरे बाल काले हैं, आँखें नीली हैं, मुख फीका है,—और दाढ़ी से घिरा है।”

“जिस प्रकार पासपोर्ट में आदमी के मुख का वर्णन रहता है, तुम्हारा वर्णन उससे भी अधिक ठीक है।.....तुम्हें न तो बुद्धि-विभ्रम हुआ है न दृष्टि-विभ्रम। तुम वास्तव में जो हो,—ठीक वही हो।”

“किन्तु नहीं,—ऐसा नहीं! वास्तव में मेरे बाल कटे हुए हैं, आँखें काली हैं, धूप में रहने के कारण रंग कुछ साँवला है और मेरी मूँछें हंगेरियनों की तरह पतली छटी हुई हैं।”

डाक्टर ने जवाब दिया—यही पर बुद्धि-वृत्ति में कुछ परिवर्तन देखता हूँ।

“डाक्टर साहब, चाहे जो हो, आपको इतना तो अच्छी तरह जानना चाहिए कि मैं पागल नहीं हूँ, जरा भी नहीं।”

डाक्टर ने जवाब दिया—निश्चय ही ! जिनमें बुद्धि-विवेचना है, केवल वही मेरे पास आते हैं । यह रोग कुछ शारीरिक थकावट, कुछ ज्यादा पढ़ने लिखने या अधिक आमोद-प्रमोद से हुआ है। तुम भूल करते हो—असल में जो तुम आँखों से देखते हो वही वास्तविक है और जो मन में सोचते हो वही काल्पनिक है । गोरे रंग के देश में तुम अपने को साँवला दे बते हो, किन्तु तुम असल में गोरे हो, और कल्पना करते हो कि मैं साँवला हूँ ।

“चाहे जो हो मैं लाविन्सिक का कौन्ट ओल्फ हूँ, इसमें जरा भी सन्देह नहीं—परन्तु कल से सभी मुझे साभिल का अक्टैम कहते हैं।”

डाक्टर ने जवाब दे दिया—

“मैंने तो ठीक वही कहा था । तुम वास्तव में साभिल के अक्टैम हो पर सोचते हो कि मैं लाविन्सिक का कौन्ट हूँ । मुझे याद आता है कि मैंने कौन्ट को देखा है, उनका रंग तो गोरा है । शीशे में जो तुम दूसरे का मुख देख पाते हो उसका कारण तो अच्छी तरह समझ में आता है । तुम्हारा मनोगत काल्पनिक मुख तुम्हारे मुख के साथ नहीं मिलता, इसी कारण तुम चकपकाये हुए हो—इस बात की विवेचना करके देखो न । सभी-तुमको अक्टैम कहते हैं अतएव तुम अपने विश्वास की बात मत भूलो । यहाँ पन्द्रह दिन मेरे पास रहो—स्नान, आराम और बड़े बड़े वृक्षों के नीचे टहलने से ही तुम्हारा यह मन का विकार दूर हो जायगा ।”

कौन्ट ने सिर नीचा करके स्वीकार किया कि मैं फिर आऊँगा । निरुपाय होकर डाक्टर की बात पर विश्वास किया ।

कौन्ट ने अपने रहने के घर में लौटकर यकायक देखा, मेज के ऊपर कौन्टेस लाविन्स्का का निमंत्रण-पत्र रखा है—इसी पत्र को पहिले अक्टैभ ने डाक्टर शेरवोनो को दिखलाया था । कौन्ट बोल उठे—

“जादू के इस कवच को हाथ में लेने से ही उनके साथ भेंट होगी।”

(८)

जिस समय लाविन्स्का के महल के नौकरों ने वास्तविक कौन्ट को गाड़ी में बैठा दिया और कौन्ट अपने भूस्वर्ग से भगाये जाकर अक्टैभ के घर पर लाये गये—उस समय रूपान्तरित अक्टैभ एक स्वच्छ सफेद छोटे से बैठके में जाकर—कब कौन्टेस को फुरसत होती है इसी की—प्रतीक्षा करने लगे ।

फूल से भरे हुए अग्निस्थान के सफेद मार्बल पत्थर के पास खड़े होकर कौन्टशरीरधारी अक्टैभ ने अपना प्रतिबिम्ब देखा । शीशा दीवार के एक सोनहरे चौखटे में अच्छी तरह बैठाया हुआ था । यद्यपि अक्टैभ शरीर परिवर्तन की भीतरी गुप्त बात को जानता था, पर उसकी अपनी आकृति से इस प्रतिबिम्ब में इतना अन्तर है कि वह यकायक यह विश्वास नहीं कर पाता कि शीशे का यह प्रतिबिम्ब उसी के मुख का प्रतिबिम्ब है या नहीं । अक्टैभ इस छायामूर्ति को टकटकी लगाकर देखने लगा, उससे वह नज़र नहीं हटा पाता था ।

उसने देखा—वह एक दूसरे मनुष्य की छायामूर्ति है । उदासीन भाव से उसने एकबार खोज करके देखा, कौन्ट ओलाफ उसके पास खड़े तो नहीं हैं ? और उन्हीं की छायामूर्ति तो नहीं पड़ रही है । किन्तु उसने किसी को न देख पाया—वह अकेला ही है । जरूर यह सब डाक्टर शेरवोनो का काम है ।

कई मिनट के बाद कौन्ट अक्टैभ ने—प्रास्कोमि के स्वामी के शरीर

मैं उसके आत्मा ने प्रवेश किया है इस चिन्ता को छोड़कर—अपने को वर्तमान-स्थिति का अनुयायी बना लिया । यह ऐसी अविश्वसनीय घटना है जो कि कभी स्वप्न में भी नहीं सोची जा सकती । मैं इसी समय बहुत दिनों से पूजित उस देवी के सामने उपस्थित हूँगा । वे मुझे अब न लौटावेंगी । उसी अकलंकिता, अनिन्दिता रूपवती के मिलने से मेरी बहुत दिनों की अभिलाषा पूरी होगी ।

वह अन्तिम मुहूर्त जितना ही पास आने लगा, उसके मन का उद्वेग उतना ही बढ़ने लगा । स्वाभाविक प्रेम में जो संकोच और डर होता है वह आकर फिर दिखलाई पड़ा—मानों यह प्रेम इस समय भी अक्टैम के अनादृत हीन शरीर में वास करता है ।

रानी की दासी के आते ही यह चिन्ता और उद्धिग्नता दूर हो गयी । जब दासी निकट आयी तब कौन्ट अक्टैम की छाती धकधक करने लगी, मानों उसके शरीर का सब खून हृत्पिण्ड में आकर जमा हो गया है । दासी ने कहा:—

“रानी आपका स्वागत करने को तैयार हैं ।”

कौन्ट अक्टैम दासी के पीछे पीछे चला, क्योंकि वह इस महल का पता-ठिकाना कुछ भी नहीं जानता था । आगे आगे चलने से शायद रास्ता न जानने के कारण मूर्खता प्रगट हो इसीलिए उसने दासी के पीछे पीछे ही चलना अच्छा समझा । दासी उसको एक घर में ले गई । घर अच्छा और बड़ा है । यह रानी के शृङ्गार करने का घर है । शृङ्गार-मेज सब विलास-सामग्रियों से सुशोभित है । बढ़िया पच्चीकारी का काम की हुई आळमारियाँ हैं जो कि साटन, मलमल, मलमल, जरी इत्यादि अनेक प्रकार के नफीस पोशाकों से ठसाठस भरी हैं । घर की दीवार हरे साटन से मढ़ी है । मेज का तख्ता इसके रंग से रंगे हुए

एक मोटे कोमल गलीचे से ढका है। शृङ्गार-मेज पर सुगन्धित इत्रों से भरी स्फटिक की शीशियाँ लैंग के प्रकाश में चमचमा रही हैं।

घर के बीच में एक हरे मखमल के पायन्दाज पर अद्भुत ईस्पात का काम की हुई गहनों की एक बड़ी पेटी है। उसमें अनेक प्रकार के रत्नालंकार सजे हुए हैं परन्तु ये सब गहने प्रायः पेटी में ही बन्द रहते हैं,—कौन्टेस कदाचित् ही कभी व्यवहार में लाती हैं। वह इसे स्त्रियों को सगलता से प्राप्त होनेवाली, अशिक्षित-रुचि कह देती थीं—रूपवती स्त्रियों को अलंकारों की आवश्यकता नहीं होती। रूप की छटा के सामने ऐश्वर्य की छटा बहुत तुच्छ है।

परदा खिड़की से नीचे गिर गया है—उसी खिड़की के पास एक बड़ा आइना और शृङ्गार-मेज के दोनों दराज़ भाड़ की ६ बत्तियों के प्रकाश से चमक रहे हैं। उसी के सामने कौन्टेस प्रास्कोभि लाविन्स्का रूप-लावण्य की छटा छिटका कर बैठी हुई हैं। एक हस्के स्वच्छ बाहरी आवरण के नीचे ढोलाढाला बन्धन-रहित रात का सूती पोशाक था। तुषार के समान शुभ्र सुन्दर सुभङ्गिम, हंस-कण्ठ बाहरी आच्छादन के भीतर दिखाई दे रहा है। दो दासियाँ मिलकर उनके प्रचुर बालों के गुच्छों को सँवार रही थीं—तेल लगा रही थीं, घुँघराले बना रही थीं, कान से रगड़ न लगे—इस भाव से सावधानी से बालों को घुँघराले तरीके पर सजा रही थीं। जिस समय बालों के सँवारने का यह काम हो रहा था, उस समय रानी जरी का काम किये हुए सादे मखमल की एक छोटी चट्टी के अगले हिस्से को धीरे धीरे नचा रही थीं। कभी कभी ऊपरी पोशाक का हिस्सा कुछ खिसक जाने के कारण उनकी तुषार-शुभ्र सुन्दर भुजाएँ बाहर दिखाई देने लगती थीं। किसी बाल के गुच्छे के सरकने पर वह एक सुन्दर गतिभंगी से उसे खिसका देती थीं।

उनके सारे शरीर में जैसी सुन्दर, अलसित, भाव-भंगी थी, वह केवल ग्रीस को प्राचीन मूर्तियों में ही दिखाई देती है। इस प्रकार का तरल-सौन्दर्य, सुन्दर गठन और कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता। फ्लरेन्स के उद्यान-गृह में जिस समय अक्टैभ ने कौन्टेस् को देखा था, वह उस समय की अपेक्षा अब और भी चित्त-मोहिनी हो गयी हैं। यदि अक्टैभ पहिले इनके रूप पर मोहित न होता, तो इस समय इन्हें देखकर जरूर मुग्ध हो जाता।

कोई भीषण दृश्य देखने से जो दशा होती है—कौन्टेस् को इस प्रकार के वेष में देखकर—उसी प्रकार कौन्टे अक्टैभ के पैर लड़खड़ाने लगे। वह मानो एकदम विह्वल हो गया। मुख सूख गया। जान पड़ने लगा मानों किसी ने गला दबाकर पकड़ लिया है, मानों लाल रंग की अग्नि-शिखा उसकी आँखों के चारों ओर लहराने लगी। इस सुन्दरी ने उसे मोहित कर लिया।

यह विह्वल भाव, ये उद्विग्नता के चिह्न किसी निराश-प्रेमी को ही शोभा देते हैं; किसी स्वामी के लिए वे बहुत ही हास्यजनक हैं। यह सोचकर कौन्टे-अक्टैभ दृढ़ता से पैर रखता हुआ कौन्टेस की ओर बढ़ा। इस समय दामियाँ उनकी वेणी रचना कर रही थीं; इसलिए कौन्टेस् ने बिना मुख घुमाये हुए कहा—आह ! तुम ओलाफ़ ? आज कितनी देरी करके आये हो ?” इसके बाद बाहरी पोशाक से अपना एक हाथ निकाल कर अक्टैभ की ओर बढ़ा दिया।

कौन्टे अक्टैभ ने यह फूल सा कोमल हाथ लेकर उत्सुकता के साथ जोर से चुम्बन किया। मानों उस समय उसका सम्स्त अन्तःकरण उसके ओठों पर आकर इकट्ठा हो गया।

हम लोगनहीं जानते कि किस एक सूक्ष्म बोध-शक्ति से, किस एक

स्वर्गीय लज्जाशीलता से, हृदय की किस एक युक्तिहीन युक्ति से, कौन्ट्रेस् पहले ही यह व्यापार जान गयी थीं। जिस प्रकार ऊषा के प्रथम चुम्बन से ऊँचे पहाड़ की तुषार-राशि लाल रंग की हो जाती है उसी प्रकार उनका मुख गला और हाथ यकायक ललाई से रँग गया। उन्होंने कुछ अभिमान और लज्जा के भाव से काँपते काँपते अपना हाथ धीरे धीरे खिसका लिया। अक्टैम के ओष्ठाधर के स्पर्श से उन्हें ऐसा जान पड़ा कि मानों किसी ने उनका हाथ आग में तपाये हुए लोहे से दाग दिया हो। परन्तु वे अपने चित्त को रोककर बालक की सी हँसी हँसने लगीं।

“ओलाफ़ ! तुम कोई उत्तर क्यों नहीं देते हो ? मैं आज तुमको छः घंटे बाद भी नहीं देख पायी।” इसके बाद उन्होंने भर्त्सना के स्वर में कहा—“अब तुम मेरी बड़ी अवहेला करते हो, पहिले तो तुम मुझे इतनी रात तक इस प्रकार अकेले नहीं छोड़ सकते थे। क्या तुम केवल मुझे ही याद कर रहे थे ?”

कौन्ट अक्टैम ने जवाब दिया :—

“तुमको ही, तुम्हें छोड़ और किसी को नहीं।”

“नहीं, नहीं, तुम सब समय मुझे नहीं याद करते, जिस समय तुम मुझे याद करते हो दूर होने पर भी मैं उसे जान सकती हूँ। यह तो सोचो कि आज रात को मैं अकेली थी और समय काटने के लिये पियानो पर बैठकर एक सुर बजा रही थी। जिस समय सुर खूब जम गया था उस समय तुम्हारा आत्मा कई मिनट तक हमारे चारों तरफ एक चक्कर लगा रहा था, चक्कर लगाने के बाद कहाँ उड़ गया, कुछ भी न जान सकी—इसके बाद वह फिर लौट कर नहीं आया, भूठ न बोलो। मैं तुमसे जो कहती हूँ वह एकदम निश्चित है।

वास्तव में इसमें प्रास्कोभि भूलती नहीं थीं। यह वही मुहूर्त्त है जिस मुहूर्त्त में कौन्ट ओलाफ ने डाक्टर शेरवोनो के घर में मंत्र से पवित्र किये हुए जल के ऊपर झुककर एकाग्र चित्त से अपनी आराध्य देवी को मूर्त्ति को बुलाया था—उसके बाद ही वे सम्मोहन-निद्रा के अतल समुद्र में डूब गये। उस समय उनका ज्ञान, उनका भाव, उनकी इच्छा—सब लुप्त हो गयी।

दासियाँ कौन्टेस् का रात्रिकालीन शृङ्गार समाप्त करके चली गयी थीं। कौन्ट अवटैभ उसी स्थान पर वैसे ही खड़े हुए कौन्टेस् प्रास्कोभि की ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे। कामेच्छा से दीप्त इस दृष्टि को न सह सकने के कारण कौन्टेस् ने अपने सब अङ्ग ढीले कुर्त्त से अच्छी तरह ढक लिये, केवल सिर खुला रहा। सन्यासी ब्रह्मलोगम् के मंत्र-बल से डाक्टर शेरवोनो ने इन दोनों आत्माओं को स्थानच्युत कर दिया है—यह बात केवल प्रास्कोभि ही क्यों—किसी मनुष्य का अनुमान करना असम्भव है। परन्तु प्रास्कोभि ने कौन्ट अवटैभ की आँखों में ओलाफ की आँखों का स्वाभाविक भाव—वह देवोत्तम, विशुद्ध, प्रशान्त, निश्चल, नित्य प्रेम का भाव—नहीं देख पाया। कौन्ट अवटैभ के इस शरीर में एक पार्थिव इच्छा की आग जल रही थी। इसी से इस दृष्टि से कौन्टेस् व्यथित और लज्जित हो गयी थीं। ठीक ठीक रहस्य न समझ सकने पर भी उन्हें जान पड़ा, कुछ न कुछ जरूर दाल में काला है। वे अनेक प्रकार की बातें अनुमान करने लगीं, तो क्या मैं इस समय ओलाफ की आँखों में एक दूसरी रमणी हूँ; एक नीच वेश्या मात्र हूँ—जिसके रूप पर वे उन्मत्त हो गये हैं। हम लोगों की आत्माओं में कैसा एक सुन्दर मेल था—दो हृदय-बीजाएँ कैसे मधुर भाव से एक सुर में बजती थीं, न मालूम वह कैसा मेल था, उस तान की एकता टूट गयी !

परन्तु, क्या ओलाफ किसी दूसरे से प्रेम करते हैं ? क्या पेरिस की स्वाभाविक मलिनता ने उनके अकलंक हृदय को कभी कलंकित किया था ?” ये प्रश्न उनके दिमाग में जल्दी से उठकर चले गये परन्तु वे इनका कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सकीं । सोचा, शायद, मैं उन्माद-ग्रस्त हो गयी हूँ । परन्तु तो भी वे भीतर ही भीतर ऐसा अनुभव करने लगीं कि मेरी बुद्धि नहीं बिगड़ी है । कैसा अज्ञात विषय सामने उपस्थित है, यह सोचकर उन्हें अत्यंत भय हुआ । सोचा, आत्मा के इस द्वितीय दर्शन के प्रभाव से जो अनुमान होता है उसे ग्रहण न करना ठीक नहीं ।

वे विचलित और व्याकुल हो गयीं और उठकर अपने सोने के घर की ओर चढ़ीं । झूठा कौन्ट भी उनके साथ ही साथ चला । कौन्टेस दरवाजे के पास आकर फिर लौटीं । क्षण भर के लिये वह रुक गयीं । इसके बाद पत्थर की मूर्ति की तरह सफेद और शीतल शरीरवाली कौन्टेस भय से विस्फारित हुए नेत्रों से कटाक्ष डालकर घर में घुसीं और झट से दरवाजा बन्द करके साँकल लगा दिया ।

“ओह ! यह तो अकटैम की दृष्टि है !” यह कहकर रानी अर्द्धमूर्च्छित होकर पलंग पर गिर पड़ीं । होश आने पर उन्होंने मन ही मन कहा—अच्छा, यह हिम प्रकार हुआ—वही दृष्टि—जिस दृष्टि को मैं कभी न भूलूँगी—वह ओलाफ की आँखों में आज रात को क्यों दिखायी पड़ी ? उस उदासीन हताश हृदय की अग्नि-शिखा मेरे स्वामी की आँखों में क्यों जल उठी ? क्या अकटैम की मृत्यु हो गयी ? क्या, मुझसे हमेशा के लिये बिदा होने के लिये उसका आत्मा क्षण भर के लिये एक बार भक से प्रज्वलित हो उठा था ! ओलाफ ! ओलाफ ! यदि मैं भूलती हूँ, यदि पागल की तरह झूठे भय से व्याकुल होती हूँ, तो तुम मुझे क्षमा करो ।

परन्तु देखो, यदि आज रात को मैं तुम्हें आलिङ्गन करती, तो मुझे मालूम होता कि मैं किसी दूसरे मनुष्य को आलिङ्गन कर रही हूँ ।

साँकड़ ठीक लगी है या नहीं, इसे जानने के लिये कौन्ट्रेस सिरहाने के लालटेन को तेज करके डरे हुए शिशु की तरह सिकुड़ कर बिछौने पर सो गयीं । एक अकथनीय वेदना उनकी छाती पर चढ़ गयी । सारी रात नींद न आयी । प्रातःकाल नींद आ गयी । इस पर भी अनेक प्रकार के बेढंगे अद्भुत स्वप्नों ने आकर उनकी नींद में बाधा डाली । अग्नि की तरह चमकती हुई अक्टैभ की आँखें उनकी ओर टकटकी लगाकर देख रही हैं और उनके ऊपर आग की चिनगारियाँ गिरा रही हैं । इसी समय उनकी खाट के नीचे एक काली मूर्ति बैठी हुई है, जो अपरिचित भाषा में मुनमुना कर बोल रही है । इस अद्भुत स्वप्न में ओलाफ भी हैं, परन्तु अपनी निज की आकृति में नहीं—दूसरी आकृति में ।

अक्टैभ ने जब देखा कि सामने ही दरवाजा बन्द हो गया, तब वह कैसा हताश हो गया, इसका वर्णन करना मेरे लिये असम्भव है । उसकी चरम आशा का निकट आया हुआ मुहूर्त चला गया । उसने मन ही मन कहा—“मैंने क्या किया ! एक स्त्री का हृदय जीतने के लिये, एक जादूगर के हाथ में आत्म-समर्पण करके अपना वर्तमान और भविष्य सभी नष्ट कर दिया—भारतीय डाकिनी मंत्र से असहाय होकर वह नारी मेरे द्वारा पकड़ ली गयी थी—किन्तु फिर माग गयी । मैं पहिले प्रेमी होकर लौटा दिया गया था । अब स्वामी होकर लौटा दिया गया । प्रास्कोभि के अजेय सतीत्व ने जादूगरों के समस्त नारकीय-कुमंत्रणा-जालों को तोड़ दिया है । मानो शयन-घर के दरवाजे पर एक देवी मूर्ति ने प्रगट होकर कलुषित चित्त किसी दुरात्मा को दूर कर दिया ।

अक्टैभ सारी रात इस अद्भुत अवस्था में न रह सका । वह कौन्ट

का महल खोजने लगा । उसने सीधे अनेक घरों को पार करके देखा—
खूँटी लगा हुआ लकड़ी का एक ऊँचा पलंग है, उसमें बूटीदार रंग
बिरंग के पर्दे लगे हैं । शारीरिक परिश्रम और मन के आवेग से थककर
कौन्ट अक्टैम उसी पलंग पर सो गया । सौभाग्यवश सूर्योदय के साथ ही
उसके मन की अवस्था कुछ अच्छी हो गयी । उसने प्रतिज्ञा की—“अब
से मैं कुछ सँभल कर चलूँगा; उस प्रकार कामोन्मत्त दृष्टि से उनकी ओर
न देखूँगा, स्वामी का मा व्यवहार करूँगा । अक्टैम गम्भीर भाव धारण
करके कौन्ट के नौकरों की सहायता से धीरे धीरे पैर बढ़ाता हुआ सोने
के घर में घुसा । कौन्टेस वहीं पर प्रातः भोजन के लिये उसकी बाट जोह
रही थीं ।

(९)

कौन्ट अक्टैम खानसामा के पीछे पीछे नीचे उतर आया । वह
अपने को घर का मालिक समझता था, परन्तु यह नहीं जानता कि
घर में रसोई-घर कहाँ है ? रसोई-घर खूब बड़े एकतल्ले में है ।
वहाँ से आंगन दिखाई देता है । दीवार पर बढ़िया नक्काशी का काम
है । दीवार पर ऋतु-परिवर्तन के अनुसार प्रत्येक ऋतु में सरलता से
प्राप्त होनेवाले—शिकार में मारे हुए—जीव-जन्तुओं के अंगविशेष लटक
रहे हैं । रसोई-घर के दोनों तरफ़ काठ के बड़े बड़े मचान बने हैं । उसपर
लाविन्स्कि के वंश के चाँदी के बर्तन आदि सजाये हुए हैं । दीवार के
दोनों तरफ़ इरे मोरक़ो चमड़े से मढ़ी हुई कुर्सियाँ रखी हैं । घर के
बीच में पच्चीकारी का काम की हुई मेज़ है जिसपर लोग खाना
खाते हैं । सिर के ऊपर एक बड़ा बिल्लौरी झड़ झूल रहा है ।

मेज़ पर रूसी ढंग से एक नीली डोरी से बनी जाली में अनेक

प्रकार के फल पहले ही से रखे हैं और मांस इत्यादि सब भोजन की चीजें ठकनेदार बर्तनों में रखी हैं। पालिश किये हुए धातु के ठकने चमचमा रहे हैं। मेज के आसने-सामने दो आराम-कुर्सियाँ हैं; उनके पीछे दो खानसामा निश्चल और चुपचाप खड़े हैं, मानों ये गृहस्थी की पत्थर की दो मूर्तियाँ हैं।

कौन्ट अक्टैभ ने घर की छोटी-बड़ी सब चीजों को एक नज़र से देख लिया, जिसमें पीछे इन सब अपरिचित नई सामग्रियों को देखकर विस्मय न हो। ऐसे समय में पत्थर की मेज पर कपड़े का सरसर शब्द हुआ। अक्टैभ ने पीछे घूमकर देखा—कौन्टेस् आ रही हैं। अक्टैभ के बैठ जाने पर बन्धुभाव से अभिवादन-स्वरूप एक इशारा करके वह भी बैठ गयीं। कौन्टेस् एक रेशमी पोशाक पहने थीं। सिर के दोनों ओर एक एक डोरे से बँधा हुआ गुथे हुए बालों का गुच्छा गर्दन पर झूल रहा है, जिसमें बहुत ही अच्छा जरी का काम किया हुआ है। उनके मुख का स्वाभाविक गुलाबी रंग पिछली रात मन के आवेग और निद्रा में बाधा होने के कारण कुछ फीका हो गया है। उनकी जाँ आँखें हमेशा शान्त और निर्मल रहती थीं—उनके चारों ओर एक काली लकीर मी पड़ गयी है। उनके मुख पर एक श्रान्त, क्लान्त, उदासीन और शिथिल भाव दिखाई पड़ता है। इस प्रकार मलिन आकार धारण करने से उनकी सौन्दर्य-छटा मानों और भी मर्मभेदी हो गयी है, उसमें एक मानसिक भाव आ गया है, इस समय वे मानों सामान्य रमणी हो गई हैं, स्वर्ग की परी ने मानों डैना समेटकर उड़ना बन्द कर दिया है।

कौन्ट अक्टैभ इस बार कुछ सावधान हो गया है, उसने अपनी आँखों की आग को ठककर और मन के उच्छ्वास को छिपाकर उदा-

सीनता का भाव धारण किया। डवर के रोगी की तरह कुछ काँपते हुए, कन्धे को कुछ झुकाकर कौन्टेस अपने स्वामी की ओर टकटकी लगाकर देखने लगीं। इस समय उन्होंने अक्टैम को ही अपना स्वामी मान लिया है। क्योंकि रात में जो भय-भावना, पूर्व-सूचना और विभीषिका उनके मन में उठी थी वह दिन के प्रकाश में लुप्त हो गई है। कौन्टेस ने कोमल मधु-स्वर में स्त्रियोचित एक दुलार करके पोलैण्ड देश की भाषा में कौन्ट अक्टैम से एक बात कही।

दिल खोलकर, घनिष्ठता के समय और विशेषकर फरासी नौकरों के सामने कौन्टेस अधिकतर कौन्ट की मातृभाषा में ही उनसे बातचीत करती थीं क्योंकि फरासी नौकर पोलानी भाषा नहीं जानते थे।

पेरिसवासी अक्टैम, लैटिन, स्पेनिश और अंग्रेज़ी भाषा के कुछ शब्द जानता था, किन्तु वह “श्लाम” जाति की भाषा से एकदम अपरिचित था। पोलानी भाषा में स्वर-वर्ण की कमी और व्यंजन की अधिकता होने के कारण चेष्टा करने पर भी अक्टैम दाँत नहीं खोल सकता था। नगर में कौन्टेस, अक्टैम के साथ हमेशा फरासी या इटाली भाषा में ही बातचीत करती थीं।

पोलीय भाषा में कही हुई इन बातों ने कौन्ट-अक्टैम के दिमाग में जाकर एक अद्भुत काण्ड किया।

ये अपरिचित और अश्रुत-पूर्व “श्लाम” शब्द पेरिसवामी फरासी के कान के बीच से मस्तिष्क के ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ अक्टैम के आत्मा ने उसे ग्रहण कर चिंता के रूप में अनुवाद करना आरम्भ किया और एक प्रकार की भौतिक-स्मृति जगा दी। उस ध्वनि-समूह ने अक्टैम के दिमाग में क्रांति पैदा कर दी; शब्द मस्तिष्क के घेरे में स्मृति के गुप्त दराज के बीच आकर गुनगुनाने लगे, मानों उत्तर देने के लिए तैयार हैं,

परन्तु साक्षात् आत्मा के साथ उन सब अस्पष्टपूर्व-स्मृतियों का योग न होने के कारण वे लुप्त हो गयीं। बिचारा प्रेमी बड़ी मुश्किल में पड़ा। कौन्ट ओलाफ लाविन्स्क का शरीर धारण करते समय अक्टैभ ने इन सब परिस्थितियों को नहीं सोचा था। इस समय उसने समझा दूसरे का शरीर धारण करने में अनेक विपत्तियाँ हैं।

कौन्टेस कौन्ट अक्टैभ की नीरवता पर विस्मित हुई। उन्होंने सोचा किसी दूसरी चिन्ता से मन विक्षिप्त होने के कारण कौन्ट अक्टैभ मेरी बातें नहीं सुन सका; यह सोचकर उन्होंने उसी वाक्य को फिर धीरे धीरे ऊँची आवाज़ में कहा।

इन शब्दों की ध्वनि सुनकर भी कौन्ट अक्टैभ उसका अर्थ न समझ सका। वह प्राण-पण से उसका अर्थ मालूम करने की चेष्टा करने लगा परन्तु व्यर्थ हुआ। वह फरासी या इटाली भाषा की कोई कोई बात अन्दाज़ से कुछ कुछ समझ सकता था, किन्तु कठिन पोलीय-भाषा के सम्बन्ध में वह एकदम बहरा है। इच्छा न रहते हुए भी उसके गाल लाल हो उठे, वह अपना ओठ काटने लगा, और अपनी इज्जत बचाने के लिए जल्दी जल्दी छूरी द्वारा तशतरी में के मांस के टुकड़े को काटने लगा।

कौन्टेस ने कहा—(इस बार फरासी भाषा में) “ओः! मैं देखती हूँ तुम मेरी बात नहीं सुन रहे हो, या कुछ समझ ही नहीं सकते हो, तुम्हें हुआ क्या?.....”

कौन्ट अक्टैभ, क्या कहेगा ठीक निश्चय न कर सकने के कारण तुतलाकर बोला—यह खराब भाषा ऐसी कठिन है।

“कठिन! हाँ, विदेशी के लिए कठिन हो सकती है, किन्तु इस भाषा ने जिसे माँ की गोद में आनन्द दिया है, प्राण-वायु की तरह जिसके मुख से आजन्म निकली है उसके लिए यह भाषा कठिन नहीं है।”

“हाँ, यह बात ठीक है पर ऐसा एक मुद्दत आता है, जब मुझे मालूम होता है कि इस भाषा को मैं कुछ भी नहीं जानता !”

‘तुम क्या कहते हो ओलाफ ? क्या अपने पिता-पितामह की भाषा अपनी पवित्र जन्मभूमि की भाषा, जिस भाषा से तुम लोग सजातीय भाइयों को पहचान सकते हो, जिस भाषा में सबसे पहले मुझसे कहा था—‘मैं तुम्हें प्यार करता हूँ’ उसी भाषा को तुम भूल जाओगे, क्या यह सम्भव है !”

कौन्ट अक्टैभ कोई उचित उत्तर न खोज पाने के कारण बोला—“एक दूसरी भाषा का अभ्यास पड़ जाने पर ।”

इस बार कौन्टेस ने भर्त्सना के स्वर में कहा—“ओलाफ, मैं देखती हूँ पेरिस ने तुम्हें बिगाड़ दिया है, इसीलिए उस समय पेरिस में आने की मेरी इच्छा न थी । मैं क्या जानती थी कि महामहिम कौन्ट ओलाफ लाविनस्कि जब अपने राज्य में लौटेंगे तब अपनी प्रजा के स्वागत का अपनी भाषा में उत्तर न दे सकेंगे ।”

कौन्टेस का सुन्दर मुख कुछ उदासीन हो गया, उस देवी के मस्तक पर सबसे पहिले यही दुख की छाया पड़ी । अक्टैभ की इस अद्भुत विस्मृति ने उनके आत्मा के मर्मस्थल का स्पर्श किया; इसको उन्होंने एक प्रकार का विश्वासघात समझा ।

भोजन का बाकी समय चुपचाप बीता; कौन्टेस् जिसे कौन्ट समझती थीं, उसी कौन्ट अक्टैभ से उन्होंने मान किया, अक्टैभ के मन में इस समय विषम वेदना हो रही थी । वह डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि वह उसका उत्तर न दे सके ।

कौन्टेस उठकर अपने महल में चली गयीं ।

इस समय अक्टैभ अकेले एक छुरी का बेंट लेकर खेलवाड़ के बहाने

उसे हिलाडुंठा रहा था; उसकी अवस्था इतनी असह्य हो गयी थी कि कभी कभी उसे इच्छा होती थी कि इप छुरी को अपने पेट में भोंक लूँ। उसने सोचा था कि वह एकाएक एक नये जीवन-क्षेत्र में प्रवेश करेगा किन्तु इस समय उसने देखा कि इप अज्ञात जीवन के छिद्र इसे नहीं मालूम हैं। कौन्ट ओलाफ़ का शरीर धारण करने से, पूर्ववर्ती समस्त धारणा और संस्कार, अपनी भाषा, लड़कपन की सब स्मृतियाँ—मनुष्य का अपनापन जिन सब असंख्य छोटी-मोटी चीजों से गठित है, अपना अस्तित्व जो कि दूसरे के अस्तित्व के साथ विशेष सम्बन्ध-सूत्र से बँधा है—यह सब छोड़ देना आवश्यक है, और इसके लिए डाक्टर बालधा-जार शेरवोनों की क्रिया काफ़ी नहीं है। यह कैसी चिडम्बना है ? मैंने जिस स्वर्ग में प्रवेश किया है उसके दरवाजे को दूर से भी देखना मेरे लिए धृष्टता है। कौन्टेस के साथ एक घर में रहूँगा, उनको देखूँगा, उनके साथ बातचीत करूँगा और उनके सतीत्व को न तोड़ सकूँगा; तथा प्रतिक्षण एक मूर्खता का काम करके अपने को प्रगट कर दूँगा—कौन्टेस मुझसे कभी प्रेम न करेंगी—यह मेरे अमिट-भाग्य की लिपि है ! परंतु मानुषिक गर्व को धूल में फेंककर मैंने बहुत त्याग स्वीकार किया है। अपने अपनत्व को छोड़कर दूसरे का शरीर धारण करके दूसरे के आदर और मान का दावा करने के लिए तैयार हुआ हूँ।”

अकटैभ के मन में इस प्रकार के विचार उठ रहे थे। ऐसे समय में एक सईस ने आकर मिर भुकाये हुए भक्ति के साथ पूछा—“आज हज़ूर को कौन घोड़ा लाकर दिखाऊँगा।” स्वामी को न चोखते देख,—पीछे ढिंढाई प्रगट होगी इस डर से—मन ही मन सोचकर मीठे स्वर से फिर बोला—“गुलदुर को लाऊँगा या रुस्तम को ? आज तीन दिन से इसकी सवारी नहीं हुई है।”

इस बार अक्टैम ने उत्तर दिया—जिसका आशय यह था कि वह हस्तम के स्नायु की उत्तेजना मिटाने के लिए खुली हवा में वोयाटेबुल तक घूमने के लिए जायगा।

हस्तम ऊँचो-जाति का बड़े डोल-डोल वाला एक शानदार घोड़ा है, उसे कोड़े से तेज चलाने की कोई जरूरत नहीं थी। वह सवार के मन के भाव को समझ कर घर से निकलते ही तीर की तरह लूटा। दो घंटे तक जोर के साथ दौड़ कर घोड़ा सवारी सहित घर को लौट आया। घूम कर आने पर अक्टैम का दिमाग कुछ ठण्डा हुआ। घोड़े की नाक लाल हो गयी है, और शरीर से कुहिरा उठ रहा है।

कौन्ट अक्टैम ने कौन्टेस के घर में प्रवेश करके देखा वह अपने बैठकखाने में हैं। वह एक सफ़ेद रेशमी पोशाक पहने हैं। आज वृहस्पतिवार है इसीसे वह मिलनेवाले पुरुषों का स्वागत करने के लिए घर पर ही हैं।

एक मीठी हँसी हँसकर—(इस प्रकार के सुन्दर ओष्ठाधर पर अभिमान का भाव अधिक देर तक नहीं रह सकता) कौन्टेस ने कहा — “वोया के उपवन-मार्ग पर घूम कर क्या तुम्हारी स्मृति फिर लौट आई।”

कौन्ट अक्टैम ने जवाब दिया—नहीं लाविम्सिक, एक गुप्त बात तुमसे कहनी आवश्यक है।

“क्या, मैं तुम्हारे मन की सब गुप्त बातें पहिले से नहीं जानती? क्या हम लोगों में इस समय भी कुछ छिपाव है?”

“जिस डाक्टर की बात लोगों के मुख से इतनी सुनी जाती है, उस डाक्टर के पास कल मैं गया था।”

“हाँ, वहीं डाक्टर वालुथाआर शेरवोनो, जो बहुत दिन तक

भारत में था। वही न जो ब्राह्मणों से खूब आश्चर्यजनक गुप्त-विद्या सीख आया है। एक दिन तुमने उसको मेरे पास ले आना भी चाहा था। परन्तु उस विषय में मुझे कौतूहल नहीं है, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती हूँ, तुम मुझसे प्रेम करते हो। यह विज्ञान ही हमारे लिए काफी है।”

“उन्होंने मेरे सामने जिन सब व्यापारों की परीक्षा का प्रयोग किया वह आश्चर्यजनक था, उससे मेरा मन इस समय भी विचलित है। इस अद्भुत डाक्टर ने न मालूम किस एक अनिवार्य शक्ति का प्रयोग करके मुझे एक ऐसी गम्भीर चौम्बक-निद्रा में डुबा दिया कि जब मैं जागा तो मैंने देखा कि मेरी सब मनोवृत्तियाँ लुप्त हो गयी हैं। मेरी बहुत सी चीजों की स्मृति नष्ट हो गयी है। मेरा भूत-काल मानो एक हिलते हुए कुहरे के भीतर डूब रहा है। केवल तुम्हारे ऊपर जो मेरा प्रेम है वही ज्यों का त्यों है।”

“ओलाफ़! तुमने भारी भूल की थी—इस डाक्टर के हाथ में पड़ना क्या उचित था? ईश्वर जिन्होंने आत्मा को उत्पन्न किया है, आत्मा को स्पर्श करने का अधिकार केवल उन्हें ही है। मनुष्य को इस प्रकार की चेष्टा करना महापाप है, मैं आशा करती हूँ, तुम फिर कभी वहाँ न जाओगे और जब मैं पोलीय-भाषा में प्रेम की कोई बात कहूँगी तब तुम उसे समझ सकोगे।”

अक्टैभ जब घोड़े पर चढ़कर घूम रहा था तभी उसने यह चालाकी सोची थी कि डाक्टर की चौम्बक शक्ति की दुहाई देकर वह भ्रम-प्रमाद-जनित विपत्ति से अपना उद्धार करेगा। पर यहीं पर विपत्ति का अन्त नहीं हुआ। एक नौकर ने दरवाजा खोलकर खबर दी:—

“सामिल का प्रसिद्ध गृहस्थ अक्टैभ आया है।”

यह जानते हुए भी कि किसी न किसी दिन इस प्रकार मुलाकात हो ही जायगी, इस सीधो-सादो बात से ही वास्तविक अक्टैभ का मुख पीला पड़ गया, यह जान पड़ा मानों यकायक उसको कयामत के दिन की भेरी बजने लगी। उसने साहस के ऊपर भरोसा करके मन ही मन सोचा, इस समय भी ऐसी अवस्था नहीं हुई है, जिससे अपने को एक हम विघ्न-बाधा-रहित समझा जा सके। बिना कुछ सोचे ही कौन्ट अक्टैभ ने पलँग के सिरहाने को पकड़ लिया और उस पर भार देकर बाहरी भाव से शान्ति और दृढ़ता की रक्षा करने में समर्थ हुआ।

अक्टैभ देहधारी वास्तविक कौन्ट ओलाफ़ लाविन्स्कि ने कौन्टेस की ओर बढ़कर सिर झुकाकर नमस्कार किया।

अक्टैभ कौन्ट और कौन्ट-अक्टैभ इनका आपस में परिचय देकर कौन्टेस बोली—

“यह लाविन्स्कि कौन्ट हैं—यह साभिल के अक्टैभ हैं।”

इन दोनों व्यक्तियों ने एक दूसरे को नम्रता से नमस्कार करके सज्जनता की रक्षा करते हुए एक दूसरे को चुपके से कटाक्ष मारा।

चिरपरिचित मित्र के भाव से कौन्टेस ने कहा—“देखो अक्टैभ, जब मैं फ्लरेन्स में थी, उसी समय से मेरे साथ तुम्हारा बंधुत्व है। तुम्हारा वह बंधुत्व का बन्धन इस समय तक जरा भी शिथिल नहीं हुआ। तुम मेरे उस बगीचे के मकान में नित्य आया करते थे। तुम अपने को मेरे बन्धु-वर्गों में से एक समझते थे।

अक्टैभ-कौन्ट ने एक दबी आवाज में कहा—देखिए, कौन्टेस, मैंने बहुत भ्रमण किया है, बहुत कष्ट सहा है, यहाँ तक कि रोग-ग्रस्त भी हुआ था—आपके सद्य-निमन्त्रण-पत्र को पाकर मैंने सोचा इस सुयोग को न छोड़ूँगा। परन्तु मुझे कुछ आशंका हुई, कहीं ऐसा न हो

कि मेरे समान स्वार्थी और उदासचित्त व्यक्ति आपके पास जाकर आपकी कृपा का दुरुपयोग करे ।

कौन्टेस ने जवाब दिया:—

“उदास चित्त ? हो सकता है । नहीं, नहीं, उदासचित्त नहीं । तुम उस समय विषाद-रोग-ग्रस्त थे । पर क्या एक कवि ने यह बात नहीं कही है ?—

आलस्य के बाद विषाद ही सब से अधिक प्राणघातक रोग है ।

अक्टैम कौन्टेस ने कहा:—

“दूसरे ऐसा न हो कि दुख-कष्ट में पीछे ममता दिखायी पड़े, इसी लिए सुखी लोगों ने यह अफवाह फैलायी है ।

इच्छा न रहते हुए भी कौन्टेस ने उसके मन में जो प्रेम उत्पन्न किया था, मानों उसके लिए क्षमा चाहती हैं—इस भाव से कौन्टेस ने अक्टैम कौन्टेस के ऊपर एक बहुत ही मधुर दृष्टि डाली । उसके बाद बोलीं—

“तुम ऐसा सोचते हो पर मैं इतनी ममता-शून्य छोटे चित्तवाली नहीं हूँ । वास्तविक दुख देखने से मुझे दया आ जाती है और उस दुख कष्ट को कम न कर पाने पर भी मैं कम से कम उसके लिए समवेदना दिखा सकती हूँ । देखो अक्टैम, तुम सुखी हो—यह इच्छा मैं कर सकती थी, पर न जाने क्यों तुमने अपनी उदासीनता में बँधकर हठी मनुष्यों की तरह जीवन का सारा सुख, सारा माधुर्य, सारा कर्तव्य त्याग दिया और यहाँ तक कि मेरी मित्रता को भी तुमने भुला दिया ।

इन सीधी-सादी बातों को दोनों श्रोताओं ने भिन्न भिन्न भाव से अपनाया ।

अक्टैम ने समझा—बगीचेवाले मकान में कौन्टेस ने जो दंडाज्ञा उसके ऊपर जारी की थी, यह उसी का दृढ़ समर्थन-मात्र है । क्योंकि यह सुन्दर ओछाधर कभी भी झूठ बोलने के दोष से कलंकित नहीं हुआ ।

इधर कौन्ट ओलाफ ने इन बातों में कौन्टेस के न बदलने योग्य सतीत्व का और भी एक उवलन्त प्रमाण पाया। उन्होंने सोचा किसी शैतानी षड़यंत्र के सिवाय उस सतीत्व का पतन कभी नहीं हो सकता। यह बात सोचते ही वे क्रोध से उन्मत्त हो गये। एक दूसरे आत्मा द्वारा अधिकृत अपनी मूर्ति को देखकर और उसी भूटे व्यक्ति को अपने घर पर अधिकार किये हुए देखकर उन्होंने झपटकर भूटे कौन्ट का गला पकड़ लिया।

“चोर डकैत, पाजी—लौटा दे मेरा शरीर।

इस आश्चर्यजनक घटना को देखकर कौन्टेस ने घण्टा बजाया, कई एक नौकर आकर अक्टैम कौन्ट को पकड़ ले गये।

कौन्टेस ने कहा—

“अक्टैम बेचारा पागल हो गया है।”

वास्तविक अक्टैम ने कहा—

“हाँ, प्रेम में पागल! कौन्टेस, तुम्हारा रूप-लावण्य निश्चय ही असाधारण है।”

(१०)

इन सब घटनाओं के दो घंटे बाद नकली कौन्ट ने वास्तविक कौन्ट का भेजा हुआ अक्टैम की मोहर से बन्द किया हुआ एक पत्र पाया।

अभागे अधिकारच्युत कौन्ट के पास उसके अतिरिक्त दूसरी कोई मोहर न थी। इसका विचित्र परिणाम हुआ। अपने कुल चिह्न-ङ्कित मोहर को छोड़कर कौन्टदेहधारी अक्टैम ने पत्र को पढ़ा। पत्र लड़खड़ाते हाथ से लिखा गया है; उसे ऐसा जान पड़ा कि यह अपने हाथ का लिखा नहीं है किन्तु दूसरे ने लिख दिया है। क्योंकि कौन्ट को अक्टैम की अँगुलियों से लिखने का अभ्यास न था। पत्र में

ये बातें लिखी थीं—“कई अभावनीय दुष्ट घटनाओं से बाध्य होकर मैं एक ऐसा काम करने को तैयार हूँ—जिसे पृथ्वी ने जब से सूर्य के चारो तरफ चलना आरम्भ किया है तब से आज तक किसी ने नहीं किया। मैं अपने को आप ही लिख रहा हूँ, और इस पत्र के पते पर जो नाम लिखा है वह मेरा ही नाम है—जिसे तुमने हमारे व्यक्तित्व के साथ चुरा लिया है। मैं कितने भयंकर षड्यंत्र के चक्र में पड़ा हूँ, मैंने कितने फैलाये हुए माया-जाल के फंदे में पैर रक्खा है, इसे मैं तो नहीं जानता; परन्तु तुम जरूर जानते हो। यदि तुम डरपोक कापुरुष नहीं हो तो मैं अपने पिस्तौल की गोली अथवा तलवार के तेज अगले भाग से इस गुप्त बात के सम्बन्ध में एक ऐसे स्थान पर पूछूँगा जहाँ पर क्या सज्जन, क्या असज्जन, सभी प्रश्नों का उत्तर देते हैं। कल हम लोगों में से एक मनुष्य को आकाश का प्रकाश देखने से हमेशा के लिये वंचित होना पड़ेगा। इस समय हम दोनों आदमियों के लिए यह विशाल जगत बहुत ही संकीर्ण है। तुम्हारा मायामय आत्मा जिस शरीर में वास करता है, अपने उसी शरीर का मैं बंध करूँगा, या जिस शरीर में मेरा क्रोधित आत्मा बँधा हुआ है अपने उसी शरीर को तुम बंध करोगे। मुझको पागल कहकर लड़ाई रोकने की चेष्टा न करना। मैं न्यायोचित काम करने से न डरूँगा; सज्जनोचित घृष्टता के साथ, राजदूतसुलभ कोशल के साथ मैं तुम्हारा अपमान करूँगा। कौन्ट ओलाफ लाविन्सिक अक्टैभ की आँखों का शूल हो सकता है। आखिर प्रतिदिन तो नाट्यशाला के बाहर आकर आप पैदल ही जाते हैं। मैं आशा करता हूँ मेरी ये बातें अस्पष्ट होने पर भी तुम्हें जरा भी अस्पष्ट न मालूम होंगी। एक बात और है, तुम्हारे पक्ष के लोगों के साथ हमारे पक्षवाले द्वन्द्व युद्ध का समय, स्थान और नियम के सम्बन्ध में अच्छी तरह निश्चय कर लेंगे।”

इस चिट्ठी ने अक्टैभ को बड़ी मुश्किल में डाला। अक्टैभ कौन्ट के इस आह्वान-पत्र को न लौटा सका और अपने साथ स्वयं युद्ध करने को उसकी एकदम इच्छा न हुई। क्योंकि इस समय उसको अपने आत्मा के पुराने आवरण के प्रति बहुत कुछ ममता थी। एक भयानक अपमान होने के डर से इस युद्ध को स्वीकार करना अनिवार्य है यह सोचकर अक्टैभ ने इस युद्ध को स्वीकार करने का निश्चय किया। यद्यपि अक्टैभ चाहता तो अपने प्रतिद्वन्दी को पागल सिद्ध करके, उसके हाथ में हथ-कड़ी लगवाकर उसे युद्ध करने से रोक सकता था परन्तु अक्टैभ को इसमें एक प्रकार का संकोच मालूम हुआ। यदि मन के अजेय भावों के वश होकर वह एक निन्दनीय काम कर डाले—जो रमणी सब प्रलोभनों के परे है उस रमणी के सतीत्व पर विजय पाने के लिए यद्यपि उसने पति रूप धारण कर अपना प्रणयी रूप छिपा रक्खा। तो भी वह आत्मसम्मान-हीन कापुरुष नहीं है। तीन वर्ष तक अनेक उपाय करने पर, कष्ट भोगने पर, प्रेम-अग्नि में जलकर क्या अब उसके प्राण निकलने का समय आ पहुँचा था। वह कौन्ट को नहीं पहिचानता था। वह कौन्ट का मित्र न था। डाक्टर बालथाजार शेरवोनों ने उसको जो उपाय बतलाया था, उसी दुस्साहसिक उपाय का अवलम्बन करने से उसे सफलता मिली थी।

इस समय गवाह कहाँ से पाये जाँय ? कौन्ट के बन्धुओं में से ही गवाह जुटाने पड़ेंगे। परन्तु अक्टैभ जब से महल में रहता था तब से उन मित्रों से उसकी मुलाकात नहीं हुई थी।

एक आलमारी के अन्दर दो सुन्दर पिटारियाँ रक्खी हैं। एक पिटारी में कुछ अँगूठियाँ, कुछ आलपीन, कुछ मोहर और दूसरे छोटे मोटे गहने रक्खे हैं और दूसरी पिटारी में छिडक, मार्कुइस, कौन्ट इत्यादि बहुत से नाम छोटे बड़े मझोले अनेक अक्षरों में मिलने के पत्र

के ऊपर खुदे हुए हैं। इससे जाना जाता है कि कौन्ट देश विदेश में घूमा करते थे, और सभी देशों में उनके कुछ मित्र थे।

अक्टैम ने इनमें से दो पत्र उठा लिये; एक कौन्ट जामोजकी के नाम का, दूसरा मार्कुइस सेपुलभेदार के नाम का। इसके बाद उसने गाड़ी जोतने को कहा और गाड़ी पर चढ़कर उनके घर जा पहुँचा। दोनों से भेंट हुई। कौन्टशरीरधारी अक्टैम को वास्तविक कौन्ट समझने के कारण वे लोग उनके अनुरोध पर जरा भी विस्मित नहीं हुए।

साधारण गृहस्थों की तरह मनोभाव न होने के कारण उन्होंने एक बार भी यह नहीं पूछा, कि प्रतिद्वन्दियों में समझौता हो सकता है या नहीं। प्रसिद्ध मनुष्यों में द्वन्द्वयुद्ध साधारण बात होने के कारण उन्होंने उसके कारण के सम्बन्ध में एक बात भी नहीं पूछी।

इधर वास्तविक कौन्ट या झूठा अक्टैम भी इसी प्रकार की एक बड़ी मुश्किल में पड़ा था। जिनके प्रीतिभोजन के निमंत्रण को उसने अस्वीकार कर दिया था, उन यालफ्रेड और रोम्बो के नाम उसे याद आये। उसे इस द्वन्द्वयुद्ध के लिए तैयार देखकर वे बड़े विस्मित हुए; क्योंकि वे जानते थे कि अक्टैम एक साल से अपने घर के बाहर नहीं निकला, और वे यह भी जानते थे कि अक्टैम का शान्ति-प्रिय स्वभाव है, लड़ाकू स्वभाव एक दम नहीं है। परन्तु जब उन्होंने सुना कि किसी एक अप्रकाश्य कारण से “तू मर” या “मैं मरूँ”, ऐसे युद्ध होने की बात हो रही है, तब उन लोगों ने बिना कोई आपत्ति किये ही लाविन्स्कि के महल में उपस्थित होना स्वीकार कर लिया।

द्वन्द्व युद्ध के नियम भी स्थिर हो गये। एक मुद्रा ऊपर फेंककर यह स्थिर किया गया कि किस अस्त्र का प्रयोग किया जायगा। प्रति-

द्वन्द्वियों ने पहिले ही से कहा था, तलवार हो या पिस्तौल, दोनों से उन्हें बराबर सुविधा होगी ।

सबरे ६ बजे बोयादेबुल की एक गली की एक विशेष कुटो के सामने जहाँ पर पेड़-पौधे नहीं हैं और जहाँ पर बालूमय एक लम्बी चौड़ी जमीन है; वहीं पर दोनों तरफ़ के लोगों को जाना होगा ।

जिस समय सब ठीकठीक हो गया उस समय रात के १२ बजे थे; अक्टैभ कौन्टेस के महल के दरवाजे की ओर बढ़ा । पिछली रात की तरह दरवाजा बंद था । अक्टैभ के दरवाजा खड़खड़ाने पर कौन्टेस ने भीतर ही से हँसते हुए इस प्रकार व्यंग्य वचन कहा—

“जब पोलीय भाषा सीख लेना, तब फिर आना । मैं अत्यन्त देश भक्त हूँ, किसी विदेशी को अपने घर में नहीं रखती ।”

अक्टैभ ने डाक्टर बालथा जार शेग्वोनो को पहिले ही सूचना दी थी, अतएव वे प्रातःकाल आकर उपस्थित हो गये । उनके हाथ में अस्त्र-चिकित्सा का एक बेग और पट्टी की एक पोटी थी ! वे दोनों गाड़ी में बैठे । कौन्ट के दोनों गवाह भी अपनी अपनी गाड़ी में थे । डाक्टर ने अक्टैभ से कहा:—

“भैया, मैं देखता हूँ मेरा यह कार्य तो अन्त में वियोगात्मक हो गया । तुम्हारे शरीर में कौन्ट को मैं अपने पलंग पर सुला देता तो कदाचित् अच्छा होता; मैंने सम्मोहन निद्रा की निर्दिष्ट क्रिया का उल्लंघन किया है । भारत के ब्राह्मण पण्डित और सन्यासियों की सम्मोहन विद्या का चाहे जितना अनुशीलन किया जाय; उसका कुछ न कुछ अंश भूल ही जाता है, खूब अच्छा बन्धान बाँधने पर भी कुछ न कुछ त्रुटि रह ही जाती है । किन्तु जो कुछ हो, कौन्टेस प्रास्कोभि ने इस प्रकार छद्मवेष में अपने फ्लरेन्स नगर के प्रेमी का कैसा सत्कार किया ? कहो, देखें तो सही !”

अक्टैभ ने जवाब दिया—“मुझे जान पड़ता है, रूपान्तर होने पर भी वे मुझे पहिचान गयी हैं। शायद उनके रक्षक देवता ने मेरा विश्वास न करने के लिये चुपके से उनके कान में कुछ कह दिया होगा। मैं अब भी उनको पहिले की तरह निर्मल और शुद्ध हृदय देखता हूँ। उनका सूक्ष्मदर्शी आत्मा जरूर जान गया है कि जिस शरीर पर उनका प्रेम था उसमें कोई अपरिचित आत्मा आकर बस गया है। मैं यह बात आपसे कहने जा रहा था कि आप मेरे लिये कुछ भी नहीं कर सके। आपसे प्रथम मिलन के समय मेरे मन की जो अवस्था थी, इस समय उससे भी खराब अवस्था हो गयी है।”

डाक्टर साहब ने कुछ उदास होकर उत्तर दिया !—“आत्मा की शक्ति-सीमा कौन निश्चित कर सकता है ? खासकर उस आत्मा की जिसे किसी सांसारिक चिन्ता ने छुआ तक नहीं, जो आत्मा किसी मानुषिक कलंक से कलंकित नहीं हुआ, विधाता के हाथ से जैसा निकला था वैसा ही है, वह प्रकाश और प्रेम में ठीक वैसे ही विचरण करता है। क्या इस प्रकार के आत्मा की शक्ति की कोई सीमा है ? हाँ तुमने ठीक अनुमान किया है; वह तुम्हें पहिचान गयी है, कामोन्मत्त दृष्टि के सामने उनकी सती सुलभ विशुद्ध लज्जा काँप गयी थी। स्वाभाविक संस्कार के कारण उन्होंने स्वयं ही सर्तात्व रक्षा के कवच से अपने को ढक लिया है। अक्टैभ, तुम्हारे लिये मुझे बड़ा दुख होता है। तुम्हारा रोग वास्तव में असाध्य है। यदि मैं मध्ययुग का मनुष्य होता तो तुमसे कहता—“किसी मठ में जाकर सन्यास ग्रहण कर लो।”

अक्टैभ ने जवाब दिया—“अनेक बार मेरी ऐसी इच्छा हुई है।”

एक क्षण मैं वे निश्चित स्थान पर आ पहुँचे। नकली अक्टैभ की गाड़ी भी पहुँच गयी है।

इस समय प्रातःकाल बोयादेबुल ठीक तसवीर की तरह दिखलायी पड़ता है। दिन में जब शौकीन लोगों का आगमन होता है, तब यह शोभा नहीं रहती। इस समय इतनी गर्मी नहीं बढ़ी है जिससे सूर्य ने फूलों पत्तों के रंग को मलिन करने का अवसर पाया हो। रात के तुषार से उज्ज्वल होकर घने पेड़ों के फूलों ने नयी और स्वच्छ आभा धारण की है, और नये उद्भिदों से एक सुगन्ध निकल रही है। इस स्थान के पेड़ विशेष रूप से सुन्दर हैं। पेड़ के तने और शाखाएँ खूब मजबूत हैं, उन पर लगी हुई लता उनकी शोभा को और भी बढ़ा रही है। यहाँ पर चित्रकार के लिये चित्र खींचने का सुन्दर मौलिक आदर्श है। जो पक्षी दिन के शोरगुल में चुप हो जाते हैं वे इस समय पेड़ के पत्तों के बीच में आनन्द से कलरव कर रहे हैं। ऐसे समय में पहिये के घर्घर शब्द से डरकर एक खरगोश तीन छलाँग मारकर बालुकामय रास्ते को पार करके घास में छिप गया।

आप लोग अच्छी तरह समझते हैं कि द्वन्द्वयुद्ध के दोनों योद्धा और उनके गवाह प्रकृति में छिपे हुए इन कवित्वमय दृश्यों को देखने में तल्लीन न थे।

डाक्टर शेरवोनो को देखकर कौन्ट ओलाफ़ को बहुत बुरा लगा। परन्तु उन्होंने अपने मन के इस भाव को जल्दी सम्हाल लिया।

तलवार नापी गयी, युद्ध का स्थान निश्चित हुआ। दोनों योद्धाओं ने कुर्त्ता उतार कर नीचे रख दिया और आत्म-रक्षा के भाव से आमने सामने खड़े हो गये।

गवाह लोग बोल उठे:—“इस बार”

द्वन्द्वयुद्धमात्र से ही एक बार गम्भीर निश्चलता आ जाती है, प्रत्येक योद्धा अच्छी तरह अपने प्रतिद्वन्द्वी को सिर से पैर तक देखता

है, किस समय शत्रु पर आक्रमण करूँगा इसका घात दूँदना है, और शत्रु के आघात को रोकने के लिये तैयार होता है। इसके बाद तलवार से तलवार मिलाने और लड़ाने की चेष्टा होती है। इस प्रकार कुछ सेकण्ड का विराम होने पर भी उत्कण्ठित दर्शकों को ऐसा मालूम होता है मानो कई मिनट कई घंटे के बराबर है।

इस स्थान पर द्वन्द्वयुद्ध के नियम दर्शकों को साधारण मालूम होने पर भी दोनों योद्धाओं को ऐसे अद्भुत मालूम होते थे कि वे साधारण योद्धाओं से अधिक देर तक अपनी आत्मरक्षा के भाव से खड़े थे। दोनों ने देखा उनके सामने उनका शरीर विद्यमान है और जो शरीर कुछ दिन पहिले उन्ही का था, उसी शरीर में अपनी ही तलवार के तेज फल को घुसा देना होगा।

यह तो युद्ध नहीं है—यह आत्महत्या है। यह बात पहिले दोनों में किसी को नहीं सूझी थी। यद्यपि अक्टैम और कौन्ट दोनों ही साहसी पुरुष हैं, तथापि अपने शरीर के सामने अपने को देखकर, और अपने शरीर को अपनी ही तलवार से मारना होगा, इसे सोचकर दोनों के सामने एक प्रकार का भय खड़ा हो गया।

दर्शकगण धैर्यच्युत होकर कहने ही को थे—“महाशयगण, आरम्भ कीजिए न”—उसी समय तलवार की खटपट शुरू हो गयी।

दोनों ने कई बार एक दूसरे के आघात को रोका। सामाजिक शिक्षा के कारण कौन्ट सिद्धहस्त तलवारिये थे, इसके पहिले उन्होंने बड़े बड़े उस्तादों से लड़कर अस्त्र-विद्या में ख्याति पायी थी। परन्तु असियुद्ध में निपुणता की अपेक्षा उनका पांडित्य ही अधिक था। कौन्ट का शरीर इस समय अक्टैम का शरीर है, इसलिये अक्टैम की दुबली पतली मुट्ठी कौन्ट की तलवार धारण किये है।

दूधरी और परस्पर शरीर परिवर्तन से अकटैभ कौन्ट के शरीर में होने के कारण इस समय बहुत अधिक बल पा गया है और असि-विद्या में पारदर्शी न होने पर भी बलपूर्वक बैरी की तलवार को फेंके दे रहा है ।

ओलाफ ने व्यर्थ ही शत्रु के शरीर में आघात करने की चेष्टा की । परन्तु अकटैभ ओलाफ से अधिक शान्त और दृढ़भाव से शत्रु के आघात को बचाने लगा ।

धीरे धीरे कौन्ट को क्रोध आ गया, इससे तलवार चलाने में उनकी घबड़ाहट और अनियमितता प्रगट होने लगी । वे चाहे अकटैभ होकर ही रहें परन्तु जिस शरीर ने कौन्टेस लाविन्स्का को ठगा है उस शरीर का वे जरूर विनास करेंगे । इस बात को सोचकर वे क्रोध से उन्मत्त हो गये ।

शत्रु की तलवार से बिधने का डर होते हुए भी वे अपने ही शरीर में मारकर अपने प्रतिद्वन्दी की आत्मा में—मर्मस्थान में आघात पहुँचाने के लिये सीधे तलवार चलाने लगे; परन्तु अकटैभ ने अपनी तलवार से शत्रु की तलवार पर ऐसी जोर से आघात किया कि शत्रु के हाथ से छूटी हुई तलवार ऊपर उछलकर कई कदम की दूरी पर जा गिरी ।

इस समय ओलाफ अकटैभ की मुट्ठी में हैं । इस समय इच्छा होने से अकटैभ ओलाफ के शरीर को तलवार से बेधकर चीड़ फाड़ सकता है । अपनी यह दशा देखकर कौन्ट का मुख सिकुड़ गया—मृत्यु के डर से नहीं; बल्कि यह सोचकर कि वे अपनी पत्नी को अपने इस शरीर-चोर के हाथ में सौंप रहे हैं; अब किसी तरह भी इस बनावटी, झूठे स्वरूप में बाधा नहीं पहुँचाई जा सकती ।

इस सुयोग का सदुपयोग करना तो दूर रहा, अकटैभ ने अपनी

तलवार दूर फेंक दीं, और दर्शकों को अपने कार्य में हस्तक्षेप करने से मना करने के भाव से एक इशारा करके वह हतबुद्धि कौन्ट की ओर बढ़ा; और कौन्ट का हाथ पकड़कर एकान्त में खींच ले गया।

कौन्ट ने कहा—“तुम्हारी क्या इच्छा है ! तुम तो इस समय आसानी से मेरा बध कर सकते हो, तब क्यों नहीं करते ? यदि तुम इस निरस्त्र व्यक्ति के साथ युद्ध न करना चाहो तो मुझे अस्त्र देकर तुम इस समय भी युद्ध कर सकते हो। तुम तो अच्छी तरह जानते हो कि हम दोनों मनुष्यों की छाया एक साथ ही मिट्टी के ऊपर फेंकना सूर्यदेव को उचित नहीं है, हम लोगों में से एक को पृथ्वी का ग्रास बनना ही चाहिए।”

अक्टैभ ने जवाब दिया—“जरा धीरज धरकर मेरी बात सुनो। इस समय तुम्हारी सुख-शांति मेरे हाथ में है। जिस शरीर में मैं इस समय वास करता हूँ और जो शरीर तुम्हारी वैध सम्पत्ति है, उस शरीर पर मैं हमेशा अधिकार बनाये रख सकता हूँ। मैं प्रसन्न हूँ कि इस समय हम लोगों के नज़दीक कोई साक्षी नहीं है; साथियों में केवल पक्षी ही एकमात्र साथी हैं, वे ही हमारी तुम्हारी बातों को सुन सकने हैं, किंतु वे और किसी से कहने न जायेंगे। यदि हम लोग युद्ध शुरू करें, तो मैं तुम्हारा बध करूँगा। मैं इस समय कौंट ओलाफ की सारी शक्तियाँ पा गया हूँ। कौंट ओलाफ तलवार चलाने में अक्टैभ से अधिक निपुण है, और तुम इस समय अक्टैभ का शरीर धारण किये हो।

ऊपर कही हुई बात की सत्यता को हृदय में समझकर कौंट चुप हो रहे इस चुप्पी से उनकी गुप्त सम्मति सूचित हुई।

अक्टैभ ने और भी कहा—“तुम अपना व्यक्तित्व लौटाने की चेष्टा में कभी सफल न होंगे; मैं उसमें बाधा डालूँगा। तुम तो खुद ही देखते

हो दो बार चेष्टा करने का क्या फल हुआ। यदि तुम और अधिक चेष्टा करोगे तो लोग तुमको पागल कहेंगे, तुम्हारी बात का कोई विश्वास न करेगा। यदि तुम कहो मैं हो वास्तविक कौंट ओलाफ लाविन्सिक हूँ, तो लोग तुम्हारे मुख के सामने हँस पड़ेंगे। जान पड़ता है तुमने इसका प्रमाण पहिले ही पाया है। लोग तुमको पागलखाने में भेज देंगे, जहाँ डाक्टर तुम्हारे सिर पर जितना ठंडा जल डालेंगे, तुम उतना ही कहोगे, मैं पागल नहीं हूँ, मैं कौन्टेम प्रास्कोभि का वास्तविक स्वामी हूँ—इस प्रकार तुम्हारा शेष जीवन बीत जायगा। तुम्हारी बात सुन कर दयालु लोग अधिक से अधिक यह कहेंगे, “अहा, बेचारा अक्टैम।

ये बातें गणित की तरह इतनी ठीक थीं कि कौन्टे हताश हो गये, उनका सिर झुक गया।

“जब तुम्हीं इस समय अक्टैम हो तब तुमने जरूर उसके दर्राज को खोलकर उसका कागज-पत्र देखा होगा, तुम जरूर जानते होगे, अक्टैम तीन साल से कौन्टेस् के प्रेम में पड़कर दुःखियाँ खा रहा है; परन्तु कौन्टेस का हृदय पाने की उसकी सब चेष्टाएँ व्यर्थ हुई हैं। अक्टैम के प्रेम की वह उत्कट अभिलाषा किसी प्रकार न मिटेगी—वह प्रेमाग्नि मृत्यु समय तक प्रज्वलित रहेगी।”

कौन्टे ने अपने ओठों को दाँत से काटकर कहा,—“हाँ मैं इसे जानता हूँ।”

“इसके बाद मैंने अपने मन की कामना पूरी करने के लिये एक भयानक उपाय—एक उत्कट उपाय—का अवलम्बन किया। डाक्टर शेरवोनो ने हमारे लिये एक ऐसा कार्य किया जिसे किसी देश का कोई जादूगर आज तक नहीं कर सका। हम दोनों आदमियों को गाढ़ी नाँद में डालकर चौम्बक शक्ति की क्रिया से हम लोगों के आत्मा को परस्पर

बदल दिया। यह अलौकिक कार्य भी किसी काम न आया। निष्फल हुआ। इसीलिये मैं तुम्हारा शरीर तुम्हें लौटाने जा रहा हूँ। प्रास्कोभि मुझसे प्रेम नहीं करतीं। वे स्वामी रूप धारण किये हुए प्रेमी की आत्मा को पहिचान गयी हैं। जिस दृष्टि से उन्होंने मुझे उस उद्यान-गृह में देखा था, उसी प्रेम-शून्य उदासीन दृष्टि को मैंने दम्पति के शयन-गृह के द्वार पर भी देखा है।”

अक्टैभ के कंठस्वर में एक ऐसा स्वाभाविक दुःख का भाव था कि कौन्ट ने उसकी बातों का विश्वास कर लिया।

अक्टैभ ने थोड़ा मुस्कराकर फिर कहा—“मैं एक प्रेमी हूँ, चोर नहीं। इस संसार में जिस एकमात्र धन को मैंने चाहा था, वही जह मेरा न हो सकेगा; तब तुम्हारी पदवी, महल, भू-सम्पत्ति, धन-ऐश्वर्य घोड़ा-गाड़ी, कुलचिह्न इन सब से क्या काम? आओ मेरे हाथ से मिलाओ,—हम लोगों का सारा भगड़ा मिट गया—अब साथी धन्यवाद दिया जाय। अपने साथ शेरवोनो को लिया जाय और लेकर फिर उसी सम्मोहन प्रक्रिया के परीक्षा-गृह में चला जाय, जहाँ से हम लोग रूपान्तरित होकर निकले थे। इस बुद्धे ब्राह्मण के द्वारा जो घटित हुआ था वही उसके द्वारा विघटित हो सकता है।”

इसके बाद कुछ मिनट तक दोनों चुप रहे, तब अक्टैभ ने कहा—

“महाशय गण, हम दोनों प्रतिद्वन्द्वियों ने अपनी गुप्त बातें प्रगट करके आपस में समझौता कर लिया है; अब युद्ध करना अनावश्यक है। क्या सभ्यजनों के बीच बिना तलवार लड़ाए मन की सफाई नहीं होती?”

जामोजकी, सॅपुलभेदा, यालफ्रेड और रोम्बो फिर अपनी अपनी गाड़ी पर चढ़ गये। कौन्ट ओलाफ, अक्टैभ और डाक्टर बालथानार शेरवोनो एक बड़ी गाड़ी पर बैठकर डाक्टर के घर की ओर चले।

गाड़ी में बैठकर अक्टैम ने डाक्टर से कहा—

देखिए, डाक्टर महाशय, मैं एक बार फिर आप के वैज्ञानिक शक्ति की परीक्षा करना चाहता हूँ; आपको हम लोगों का आत्मा हम लोगों के शरीर में प्रवेश कर देना होगा। आपके लिये इस काम का करना मुश्किल न होगा; मैं आशा करता हूँ, कौन्ट लाविन्स्कि अपने महल को छोड़कर इस दीन की कुटी में न रहना चाहेंगे, और उनका बहु गुणालंकृत आत्मा भी मेरे इस तुच्छ शरीर में रहने के लिए राजी न होगा। इसके अतिरिक्त आपकी जैसी शक्ति है, उससे आपको किसी प्रकार के बदला लिये जाने का भी डर नहीं है।”

इस बात का समर्थन करने के भाव से डाक्टर ने एक इशारा करके कहा, “इस बार पहिले से भी अधिक सरल प्रक्रिया होगी। जिन अद्भुत सूत्रों से आत्मा शरीर के साथ बँधा रहता है तुम्हारे वे सब बन्धन टूट गये हैं, अभी तक उन्हें फिर से जुड़ जाने का समय नहीं मिला है। और सम्मोहित किया जानेवाला मनुष्य जिस प्रकार सम्मोहनकारी की चेष्टा को रोकता है तुम्हारी इच्छा शक्ति उस प्रकार की बाधा न कर सकेगी। मेरे समान बूढ़ा वैज्ञानिक इस प्रकार की परीक्षा का प्रलोभन न रोक सका, महाशय कौन्ट इसके लिये मुझे क्षमा कीजिएगा; क्योंकि इस प्रकार परीक्षा के पात्र बहुत कम मिलते हैं, इसके अतिरिक्त इस प्रकार की परीक्षा करते करते मन की एक ऐसी सूक्ष्म अवस्था हो जाती है कि उस समय परीक्षक भविष्य की घटनाओं को बतला सकता है। जहाँ पर सब हार मान जाते हैं वहाँ पर वह विजय पाता है। आप इस क्षणिक रूपान्तर के कार्य को एक अद्भुत स्वप्न समझ सकते हैं, जान पड़ता है कि आप कुछ दिन बाद यह कहकर न दुखी होंगे कि मैं एक ऐसे चक्कर में पड़ा था जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी; क्योंकि

दो शरीर में रहने का अनुभव बहुत कम लोगों को हुआ है। दूसरा शरीर धारण करना नवीन मत नहीं है। परन्तु देहान्तर के पहिले हम लोगों को विस्मृत रूपी मोह-मदिरा पीनी पड़ती है। तभी तो पिथागोरस को याद था कि वे 'ट्राय के युद्ध' में थे,—परन्तु ऐसी पूर्व जन्म की स्मृति सब को नहीं हो सकती।”

कौन्ट ने नम्रता से उत्तर दिया—“अपना व्यक्तित्व फिर पा जाने से मुझे जो लाभ होगा, उससे अधिकारच्युत होना आदि सब असुविधाओं की पूर्ति हो जायगी। महाशय अक्टैभ, यह न सोचिएगा कि मैं किसी बुरे अभिप्राय से यह बात कह रहा हूँ। मैं ही तो इस समय अक्टैभ हूँ, कुछ दैर बाद मैं अक्टैभ न रहूँगा।”

इस बात पर कौन्ट लाविन्स्कि की आँठ पर अक्टैभ के हँसी की रेखा दिखाई पड़ी, क्योंकि यह बात एक भिन्न देह रूप आवरण के बीच से अक्टैभ के पास आ पहुँची। इस असाधारण अस्वाभाविक अवस्था के कारण आपस में बातचीत जारी रहना मुश्किल हो गया।

बेचारे अक्टैभ की सब आशाएँ लुप्त हो गयीं; इसलिए यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि उसका मन गुलाब के फूल की तरह प्रफुल्लित नहीं है। निराश प्रेमियों की तरह वह अब भी मन ही मन सोच रहा था, कौन्टस ने उससे प्रेम क्यों नहीं किया—मानों प्रेम में कोई “क्यों” है! जो कुछ हो उसने समझा कि मैं हार गया हूँ। डाक्टर शेरवोनों ने क्षणभर के लिए उसके जीवन के कल-पुजों की ठीक कर दिया था; परन्तु पृथ्वी पर गिरी हुई हाथ-वड़ी (wrist watch) की तरह वह टूटकर झगझर हो गयी। आत्महत्या करके अपनी माँ के मन को कष्ट देने की इच्छा उसे न थी। उसने सोचा था, किसी निजंन स्थान में जाकर चुपचाप

अपने दुख की आग बुझाऊँगा, और इस अज्ञात दुख का एक वैज्ञानिक नाम रखकर लोगों में इसे एक रोग कहकर प्रचार करूँगा ।

अक्टैभ यदि चित्रकार होता, तो वह अपने दुख-कष्ट को चित्र रूप में खींचकर रख सकता; ऐसा होने से प्रास्कोभि शुभ्र वस्त्र से सजित होकर, तारकाओं के मुकुट से विभूषित होकर, दाँते के वेयान्सिस्की तरह, उज्ज्वल शरीर ऐंजल की तरह, उसके कवित्व उच्छ्वास पर उड़ती होती । किन्तु हमने इस आख्यायिका के आरम्भ में ही कहा है कि सुशिक्षित और सज्जन होते हुए भी अक्टैभ उन चुने हुए श्रेष्ठ मनुष्यों में से नहीं है जो पृथ्वी पर अपना स्मृति-चिह्न रख जाते हैं । प्रेम-पाश में बँधा हुआ अक्टैभ का दीन आत्मा प्रेम करना और प्रेम में मरना छोड़कर और कुछ नहीं जानता ।

गाड़ी डाक्टर के घर के आँगन में घुसी । आँगन के किनारे किनारे पत्थर जड़ा हुआ है और उसके बीच में हरी हरी घास उगी हुई है । मिलने वालों के अधिक आने जाने से बीच में एक रास्ता बन गया है, और मटमैली ऊँची दीवाल की छाया से आँगन की सारी जमीन ढक गयी है । पंडित बालथाजार शेरघोनों के ध्यान प्रवाह में बाधा न हो इसलिये अदृश्य पत्थर की मूर्ति की तरह निस्तब्धता और निश्चलता प्रहरी रूप से द्वार पर पहरा दे रही हैं ।

अक्टैभ और कौन्ट गाड़ी से उतरे; डाक्टर सईस के हाथ का सहारा लिये बिना ही टप से पायदानी पर पैर रखकर उतर पड़े—उनकी हतनी उमरवाले बुढ़े से कोई ऐसी फुर्ती की आशा नहीं रख सकता ।

उन लोगों के घर में प्रवेश करते ही दरवाजा बन्द हो गया । ओलाफ और अक्टैभ को जान पड़ा मानो वे गर्म हवा के बीच पड़ गये हैं ।

❀ Dante का प्रसिद्ध काव्यग्रंथ जिसकी नायिक का नाम वेयान्सिस् है ।

इस गर्म हवा में डाक्टर को भारतवर्ष की याद आई; वे आसानी से सांस लेने लगे। परन्तु डाक्टर की तरह कौन्ट और कौन्ट अक्टैभ तो तीस वर्ष तक तेज सूर्य की गर्मी में नहीं रहे थे, अतएव उन लोगों की सांस रुकने लगी। कमरे में बहुत से चित्र लगे हैं, विष्णु के अवतार अपनी दाँतो का छटा फैलाते हुए हँस रहे हैं, नीलकंठ शिव अपनी वेदी के ऊपर खड़े होकर अट्टहास कर रहे हैं, कालीजी खून से भीगी हुई अपनी जीभ बाहर किये हैं। नृ-मुण्ड माला के लड़ने से मानो ठकाठक शब्द सुनाई दे रहा है। डाक्टर के इस निवास गृह ने एक रहस्यमय ऐन्द्र-जालिक भाव धारण किया है। जिस घर में पहिले रूपान्तर का कार्य हुआ था, डाक्टर शेरवोनो उसी घरमें दोनों सम्मोहन पात्रों को लिवा गये। उन्होंने विद्युत-यंत्र के काँच के पहिये को घुमाया, सम्मोहन पात्र के लोहे के बेंट (Handle) को हिलाया; गर्मी देनेवाले यंत्रों के मुख खोल दिये, इससे घर की गर्मी शीघ्र ही बढ़ गयी। भोज-पत्र पर लिखे हुए दो तीन मंत्रों को पढ़ा, और कुछ देर बाद कौन्ट और अक्टैभ दोनों को सम्बोधन करके कहे—

अब मैं तुम लोगों के काम के लिये तैयार हूँ। क्या कहते हो? आरम्भ करूँ? जिस समय डाक्टर ये बातें कह रहे थे उस समय कौन्ट उत्कण्ठित होकर यह सोच रहे थे:—

“जिस समय मैं बेहोश हो जाऊँगा; उस समय यह बुड्ढा जादूगर मेरे आत्मा को लेकर न जाने क्या करेगा। यह बन्दर के समान मुख-वाला डाक्टर साक्षात् शैतान तो नहीं हो सकता; मेरे आत्मा को मेरे शरीर में लौटा देगा या उसके साथ मुझे नरक में ले जायगा? हमारा व्यक्तित्व लौटा देना—यह भी तो एक नया जाल नहीं है? न जाने इसका क्या उद्देश्य है, कहीं फिर मुझे धोखा देकर, ठगने के लिये ही तो यह

सब शैतानी आयोजन नहीं हो रहा है ? जो कुछ हो, इस समय मेरी जो अवस्था है, क्या उससे भी खराब अवस्था हो सकती है ? अक्टैम मेरे शरीर पर अधिकार किये हुए है, उसने आज सबेरे ठीक ही बात तो कही थी कि यदि मैं अपने वर्तमान शरीर में रहकर कौन्ट होने का दावा करूँ, तो लोग मुझे पागल ठहरावेंगे। यदि मुझे एकदम खतम कर देने की इच्छा होती तो मेरी छाती में तलवार भोंककर अक्टैम अपनी इच्छा पूरी कर सकता था। मैं शस्त्ररहित था, मेरा जीना मरना उसी के हाथ में था, किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार भी न होता। द्वन्द्वयुद्ध के नियमों की पूरी रक्षा हुई थी, सभी नियमानुसार हुआ था। जो हो, अब प्रास्कोभि की ही बात सोचनी चाहिए, लड़कों की तरह व्यर्थ क्यों उर रहा हूँ ? उसका प्रेम फिरसे पाने के लिये यही एक उपाय है, एक बार इस उपाय की परीक्षा करनी होगी।”

इस समय डाक्टर शेरवोनो ने उसी लोहे का बेंट पकड़ने के लिए कहा, कौन्ट और अक्टैम दोनों ने बेंट को पकड़ा। यह चौम्बक के तरल पदार्थ से भली भाँति भरा था; धरते ही वे दोनों अचेत हो गये अब उन्हें देखने से ऐसा जान पड़ता है मानो मर गये हैं। डाक्टर उनपर हाथ फेरने लगे, निर्दिष्ट सभी क्रियायें कीं, पहिले की तरह मंत्रों का उच्चारण किया; उच्चारण करते ही अपनी छोटी आँखों की जाउवल्यमान दृष्टि उन दोनों पर डाली। इसके बाद डाक्टर कौन्ट ओलाफ के आत्मा को फिर उनके वास्तविक शरीर में ले गये, इस समय ओलाफ सम्मोहनकारी के अंग की चेष्टाओं को खूब ध्यान से तिर्छीं नजरों देख रहे थे।

इधर अक्टैम का आत्मा धीरे धीरे ओलाफ के शरीर से निकलकर दूर चला गया, और अपने शरीर में न लौटकर मुक्ति के आनन्द में

ऊपर उठने लगा; जाना पड़ा, मानो उसका आत्मा अपने शरीर पिंजर में फिर नहीं बँधना चाहता। यह आत्मा-पक्षी डैनों को हिलाना है और सोचता है, फिर अपने पुराने दुःखमय गृह में लौट जाना उचित है, या नहीं। इस प्रकार इधर उधर करते हुए वह क्रमशः ऊपर उठने लगा। इस स्थान पर क्या करना चाहिए, इसे सोचकर डाक्टर ने अपने उसी सर्ववैश्वी दुर्निवार महामंत्र का उच्चारण करके, अपनी इच्छा-शक्ति का प्रयोग किया। आत्मा रूप वह काँपता हुआ छोटा सा प्रकाश इसके पहिले ही आकर्षण मंडल के बाहर जाकर गायब हो गया था।

डाक्टर ने दूसरी चेष्टाओं को व्यर्थ समझकर रोक दिया और कौन्ट को नौद से उगाया। कौन्ट एक आइने में अपना पूर्व मुखश्री देखकर एक आनन्द-ध्वनि कर उठे। इसके बाद डाक्टर से हाथ मिलाकर अक्टैभ के देहावधारण से मुक्त हुए हैं या नहीं यह संदेह दूर करने के लिये अक्टैभ के निश्चल शरीर पर एक कटाक्ष करके बाहर चल दिये।

कुछ देर बाद गाड़ी का घर्घर शब्द सुनाई दिया, इस समय डाक्टर शेरवोनो अकेले अक्टैभ के मरे हुए शरीर के सामने खड़े थे। एलिफान्टा के ब्राह्मण के शिष्य डाक्टर शेरवोनो बोल उठे, “राम कहो। यह तो बड़ा मुश्किल काम है। मैंने पिंजड़े का दरवाजा खोल दिया है, पक्षी उड़ गया है, इतनी देर में पृथ्वी के आकर्षण-मण्डल के बाहर इतनी दूर उड़ गया है कि अब गुरु ब्रह्मलोगम् भी उसे न पकड़ पावेंगे। मैं मरा हुआ शरीर गोद में लेकर बैठा हूँ, मैं एक खूब तेज द्रावक रस में इसे डुबाकर रख सकता हूँ या कई घण्टे में प्राचीन मिश्र के ममी की तरह अर्क में डालकर रख सकता हूँ। परन्तु ऐसा करने से खोज होगी, खानातलाशी होगी, हमारे सन्दूक आदि खोले जायेंगे, और कितने ही चित्त उच्चाटन करनेवाले प्रश्न मुझसे पूछे जायेंगे। इस समय डाक्टर साहब के दिमाग

में एक अच्छी बात सूझ पड़ी, उन्होंने जल्दी से एक कलम लेकर कागज़ पर कुछ लिख डाला। उसमें ये बातें थीं—

“मेरा कोई सम्बन्धी या उत्तराधिकारी नहीं है। अतएव मैं अपनी कुल सम्पत्ति साभिल के अकटैम को दिये जा रहा हूँ, मैं उसमें बहुत ज्यादा प्रेम करता हूँ। नीचे लिखा हुआ रुपया चुकाकर जो कुछ बचे वह सब उसे मिले:—मैंने एक लाख रुपया सिंदल के ब्राह्मण-अस्पताल में पीड़ित और वृद्ध जीव-जन्तुओं के अनाथालय में दिया। अपने भारतीय और यूरोपीय नौकरों को बारह हजार रुपया दिया। एक बात और है मनु के मानवधर्म की पुस्तक मार्जारीण पुस्तकालय को लौटा दी जाय।”

एक जीवित मनुष्य मरे हुए मनुष्य को बिल रूप में दान-पत्र लिख रहा है; हम लोगों के आश्चर्यजनक और सच्चे इतिहास में यह भी कुछ कम अद्भुत व्यापार नहीं है; परन्तु इस अद्भुत व्यापार का रहस्य शीघ्र ही खुलेगा।

अकटैम के आत्माहीन शरीर में इस समय भी प्राण मालूम होता था। डाक्टर साहब ने उसके शरीर को स्पर्श किया, स्पर्श करके अत्यन्त घृणा के साथ आइने में अपना मुख देखा; मुख पर बहुत सी सिकुड़नें पड़ गयी हैं और वह मगर के पुराने चमड़े की तरह सूखा और कड़ा मालूम होता है। दूर्ग के नयी पोषाक तैयार करके लाने पर पुरानी पोषाक त्यागते समय जो भाव उत्पन्न होता है डाक्टर ने अपने मुखपर वही भाव देखा। इसके बाद उन्होंने सन्यासी ब्रह्मयोगम् के बतलाये मंत्र का उच्चारण किया।

उच्चारण बन्द होते ही डाक्टर बालयाज्ञार शेरखानो का शरीर वज्रा-हत की तरह दूरी पर लोट गया और अकटैम का शरीर सबल, जागृत और सजीव होकर फिर उठ खड़ा हुआ।

अकटैभ देहधारी शेरवोनो अपने शीर्ण, अस्थिमय, नीली आभा वाले त्यागे हुए शरीर के सामने कई मिनट तक खड़े रहे। उनके इस त्यागे हुए शरीर में शक्तिशाली आत्मा न होने के कारण उसी समय उसमें बुढ़ापे के लक्षण प्रगट हुए और वह तुरत मुर्दे के रूप में हो गया।

“बिदा होता हूँ ! ऐ असार माँस के लोथड़े, तुझसे बिदा होता हूँ; ऐ मेरे सैकड़ों छेदवाले पुराने वस्त्र, मैं तुम्हें ७० वर्ष तक इस पृथ्वी पर साथ साथ लिए घूमता रहा ! तूने मेरी बहुत सेवा की है। कितने ही दिन से हम लोगों का एक साथ रहने का अभ्यास है ! किन्तु अब इस युवक के देहावरण को धारण करके मैं विज्ञान की उन्नति कर सकूँगा यथोचित परिश्रम कर सकूँगा, उस बड़ी पोथी के और भी कई मंत्रों का पाठ कर सकूँगा; जो स्थान खूब अच्छा लगेगा उसे पढ़ते समय एकाएक मृत्यु आकर यह न कह सकेगी, ज्यादा मत पढ़ो, यथेष्ट हुआ, अब पढ़ना बंद करो।”

अपने लिये अपना यह अन्त्येष्टि व्याख्यान देकर, शेरवोनो अपने नये अधिकार पर कब्जा करने के लिये धीरे धीरे घर से बाहर आये।

इधर कौन्ट ओलाफ ने अपने महल में लौटकर पूछा, कौन्टेस से भेंट होगी या नहीं।

ओलाफ ने देखा—“कौन्टेस उद्भिद्गृह में घास के बने बेंच पर बैठी हैं। उद्भिद् गृह की स्फटिक की खिड़कियाँ खुली हैं जिनसे शीतल वायु प्रवेश कर रही है। उद्भिद्-गृह के बीच का भाग गर्म देशों के पेड़ों से ढक कर मानों जङ्गल बन गया है। कौन्टेस नोभालिस की लिखी हुई पुस्तक पढ़ रही हैं। जिन जर्मन लेखकों ने प्रेतात्मवाद के सम्बन्ध में बहुत ही सूक्ष्म, अगोचर तत्त्वों की आलोचना की है उन्हीं में से नोभालिस भी एक हैं। जिन ग्रन्थों में वास्तविक जीवन का चित्र भली

भाँति खींचा गया है कौन्टेस उन्हें नहीं पढ़ना चाहतीं । शौकीनी प्रेम और कविता के संसार में बहुत दिन से रहने के कारण उन्हें जीवन स्थूल सा मालूम होता था ।

उन्होंने पुस्तक फेंककर धीरे से मिर उठाकर कौन्ट को ओर देखा । कौन्टेस डरती थीं कि कहीं उनके स्वामी की आँखों की काली पुतलियों में वही आग्रहपूर्ण, गुस्सा भरा, आँधी की तरह भयानक दृष्टि न दिखाई पड़े, जिसे देखकर इसके पहिले उन्हें बहुत कष्ट हुआ था—यहाँ तक कि जिसे देखकर उनकी दृष्टि (यद्यपि ऐसा खयाल करना बहुत विचित्र है) दूसरे मनुष्य की दृष्टि मालूम हुई थी ।

ओलाफ की आँखों से एक प्रशान्त आनन्द निकल रहा था, और उस दृष्टि में एक विशुद्ध प्रेमाग्नि धीरे धीरे जल रही थी । जिस अपरिचित आत्मा ने उनके मुख का भाव बदल दिया था, वह आत्मा अब हमेशा के लिये चला गया है, प्रास्कोभि अपने हृदय के पूज्य प्रियतम को पहिचान गयीं और उसी समय उनका गाल स्वाभाविक लालिमा से प्रफुल्लित हो उठा । यद्यपि वे डाक्टर शेरवोनो द्वारा किये हुए रूपान्तर के कार्य को नहीं जानती थीं, परन्तु एक प्रकार की भीतरी सूक्ष्म अनुभूति से ये सब परिवर्तन उन्हें मालूम हो गये थे—यद्यपि वे उसका वास्तविक कारण नहीं समझ सकी थीं । ओलाफ ने नीली जिल्द की पुस्तक को घासपर से उठाकर कहा—

“प्रास्कोभि तुम कौन पुस्तक पढ़ रही थी ? ओह ! यह तो हेनरी अफ्टर डिग्जन का इतिहास है—यह तो वही पुस्तक है जिसे तुमने एक दिन देखकर खरीदने की इच्छा प्रगट की थी । मैंने उसी दिन घोड़ा दौड़ाकर दो पहर रात बीते तुम्हारे मेज पर यह पुस्तक लाकर हाजिर की थी । उस समय बेचारे घोड़े का दम निकलने लगा था ।

“इसी से तो मैंने तुमसे कहा था, ‘अब कभी अपने मन की कोई इच्छा या विचार तुम पर न प्रगट करूँगी। तुम्हारा यह चरित्र स्पेन देश के उस बड़े आदमी की तरह है, जिसने अपनी प्रियतमा से कहा था— ‘आकाश के ताराओं की ओर न देखना, क्योंकि उसे लाकर तुम्हें न दे सकूँगा।’”

कौन्ट ने जवाब दिया—

“प्रास्कोभि, यदि तुम किसी तारे की इच्छा करो तो मैं आकाश की ओर उड़ने की चेष्टा करूँगा, और ईश्वर के पास जाकर तारे को माँग लाऊँगा।”

जिस समय प्रास्कोभि स्वामी की ये बातें सुन रही थीं, उस समय केश-बन्धन का एक फीता खसक जाने के कारण उन्होंने उसे ठीक करने के लिये ऊपर हाथ उठाया। उनके कुर्ते की आस्तीन कुछ सरक गयी, और उनका सुन्दर हाथ दिखलाई पड़ने लगा। उनके हाथ की कुहनी के पास एक नीले बहुमूल्य पत्थर से जड़ा हुआ गिरगिट का अलंकार था। “क्याशिन” में वनको देखकर जिस दिन अक्टैभ का दिमाग बिगड़ गया उस दिन भी वे यह गहना हाथ में पहिने थीं। इस गहने को देखकर कौन्ट ने कहा—

मेरे बारबार अनुरोध करने पर जिस दिन तुम पहिली बार बगीचे में उतरी थीं, उस समय एक छोटा सा गिरगिट देखकर तुम कितना डरी थीं, मैंने उसको अपनी छड़ी के एक ही वार से मार डाला था, उसके बाद सोने का गिरगिट बनवाकर उसमें बहुमूल्य रत्न जड़वाया था। परन्तु उस सोने के गिरगिट को देखकर भी तुम भकसर डर जाया करती थीं, कुछ दिन बाद जब तुम्हारा भय दूर हो गया तब तुम वह गहना पहिनने के लिये राजी हुई थी।”

‘ओ ! इस समय तो मुझे इसके पहिनने की खूब आदत पड़ गयी है । सब गहनों से अधिक मैं इसे ही चाहती हूँ, क्योंकि इसके साथ मेरी एक सुखदायक स्मृति का सम्बन्ध है ।’

कौन्ट ने कहा, “उसी दिन हमलोगों ने निश्चय किया था कि तुम अपनी चाची से हम लोगों के विवाह सम्बन्ध में बात चीत करोगी ।”

वास्तविक ओलाफ की पहिली दृष्टि फिर देखकर, उनका कंठ स्वर फिर सुनकर, कौन्टेस उठ खड़ी हुई; और मुस्कराते हुए उनकी ओर देखनी हुई उनका हाथ पकड़कर उद्भिद्-गृह के चारो ओर घूमती । घूमते घूमते अपने खाली हाथ से फूल तोड़कर उसकी पँखड़ियों को दाँत से काटने लगी । मोती के समान दाँतों से जिस फूल को वे काट रही थीं उसे फेंककर उन्होंने कहा:—

आज तुम्हारी स्मरण शक्ति का जैसा परिचय पा रही हूँ, उससे जान पड़ता है कि तुम्हारी मातृभाषा तुम्हें फिर याद आ गयी है, जान पड़ता है तुम इस समय मातृभाषा में बोल सकते हो—कल तो तुम अपनी मातृभाषा एकदम भूल गये थे ।

कौन्ट ने पोलीय भाषा में उत्तर दिया:—“ओ ! यदि प्रेतात्माओं ने स्वर्ग के लिये कोई मानवी भाषा स्थिर की हो तो भी मैं जाकर पोलीय भाषा में ही तुमसे कहूँगा, “मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।”

प्रास्कोमि ने चलते चलते ओलाफ के कंधे पर धीरे से अपना मिर भुकाया और बहुत धीरे से बोली—

‘परमेश्वर, यह तो वही तुम हो जिसको मैं प्राणपण से प्रेम करती हूँ । तुमने कल मुझे बहुत भयभीत कर दिया था, मैं अपरिचित मनुष्य समझ कर तुम्हारे पास से भाग गयी थी ।’

उसके दूसरे दिन अक्टैन के शरीर में बुड्डे डाक्टर बालथाजार के

प्रात्मा के प्रवेश करने से अकटैभ सजीव हो उठा। उसने कुछ देर बाद हाली लकीर से घिरा हुआ एक पत्र पाया। उसमें बालथाजार शेरवोनो की अन्त्येष्टि क्रिया में योग देने के लिये अकटैभ से अनुरोध किया गया था।

डाक्टर अपना नया शरीर धारण करके अपने त्यागे हुए पुराने शरीर के साथ समाधि भूमि को चले, यह शरीर कब्र में गाड़ा गया। कब्र में गाड़ने के समय जो व्याख्यान हुआ उसे उन्होंने शोकमग्न मनुष्य की तरह बड़े ध्यान से सुना। उनकी मृत्यु से विज्ञान को जो हानि हुई उस हानि का पूरा होना असम्भव है इत्यादि अनेक बातें उस वक्तृता में थीं।

उसी दिन सायंकालीन सर्वादपत्रों के विविध समाचार के खाने में वह संवाद प्रकाशित हुआ:—

“डाक्टर बालथाजार शेरवोनो जो कि बहुत दिनों तक भारतवर्ष में वास करने के लिये, शब्द-विद्या में पारंगत होने के लिये, रोग अच्छा करने की अद्भुत क्षमता के लिये विख्यात हैं वे कल अपने कर्मगृह में परलोक सिधारे। मृत शरीर की भली भाँति परीक्षा करके देखा गया है। उससे प्रकट हुआ है कि किसी आततायी के घातक आघात द्वारा उनकी मृत्यु नहीं हुई है। अधिक मानसिक परिश्रम या साहस से परे किसी वैज्ञानिक परीक्षा को करते समय ही उनकी मृत्यु हुई है, इसमें सन्देह नहीं। सुना जाता है कि डाक्टर के कार्यालय में उनका अन्तिम दान-पत्र पाया गया है। उसमें उन्होंने अपनी बहुमूल्य पोथियाँ मार्जारीण पुस्तकालय को दान कर दी हैं और साभिल के अकटैभ महाशय को अपना उत्तराधिकारी चुना है।

मुद्रक—

श्रीमहताबराय, सरस्वती प्रेस, काशी
